|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | दिसम्बर–2019

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

गुरु जयन्तसेन जन्मभूमि पेपराल (थराद) तीर्थ

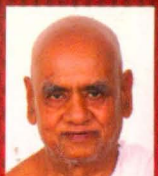

गच्छाधिपति आचार्य
पू. नित्यसेनसूरीश्वरजी
म.सा.

पुण्य सम्राट, युग प्रभावकाचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति, धर्मदिवाकर, युगनायक श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा दिनांक 26 नवम्बर 2019 को भाभरा नगर में मुमुक्षुरत्न कल्पकुमार आकाशभाई दोशी को गच्छाधिपति श्री द्वारा दीक्षा मुहूर्त 26 फरवरी 2020 शुभ दिन डिसा जिला पालनपुर गुजरात का प्रदान किया गया।

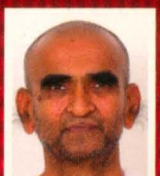

आचार्य
पू. जयरत्नसूरिश्वरजी
म.सा.

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

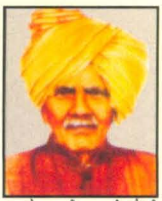

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

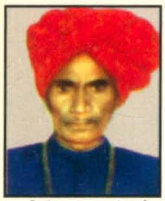

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

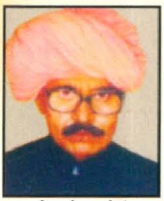

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

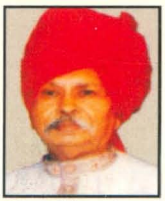

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जै
बागरा

Received
3122
कोबा (गांधीनगर)

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

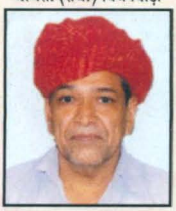

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

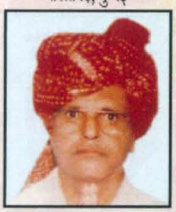

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

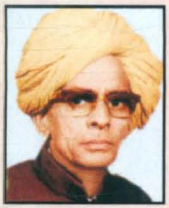

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मैंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मैंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मैंगलवा/मदुराई

34432

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा–थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल थानसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री मंबरतालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

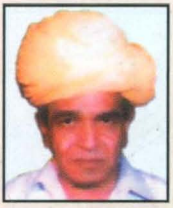

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेवाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

ज्ञाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

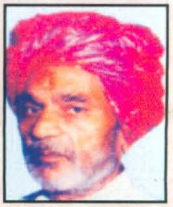

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

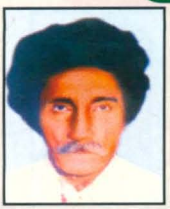
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

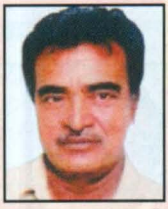
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तलेरा कर्मडवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी राजगढ़

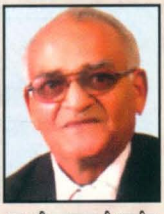
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व.श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भूंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फूलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

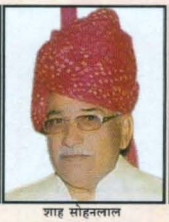

शाह मोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

दिसम्बर-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 12
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(संपादक)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पजायन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम
संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

प्रेरक प्रसंग

राजा ने भी उनके ब्रह्मचर्य की परीक्षा करवाली

बप्पभट्टसूरि ने हाथ जोड़कर अपने गुरु से कहा–

'पच्चक्खाण दीजिये ।'

'अभी तो तुम्हारी आचार्य पदवी हुई है, इतने पच्चक्खाणों के पश्चात् अब क्या शेष रह गया है।'

'जी गुरुदेव !'

'हां कहो।'

'आजीवन छहों विगई तथा फल, मैंने सभी का त्याग कर दिया'

'गुरु सुनते ही हर्षित हो गठे। बप्पभट्ट के सिर पर वासक्षेप कर कहा–

'तू महाब्रह्मचारी होगा'

बप्पभट्ट वैसे ही निकले उनके ब्रह्मचर्य की परीक्षा राजा तक ने ली। रात्रि में नर्तकी को बप्पभट्ट के पास भेजी तथा उसे पूरी छूट दे दी। नर्तकी ने सही–गलत सारे प्रयोग कर लिये लेकिन बप्पभट्ट अविचल, अटल, अडोल रहे। नर्तकी ने भी हार मान ली।

जब समाज को ज्ञात हुआ तो हर व्यक्ति उन्हें उस युग का स्थूलभद्र घोषित कर श्रद्धा से समर्पित हो गया।

पिता का नाम बप्प तथा माता का नाम भट्टी होने से उनका नाम बप्पभट्टी मुनि तथा बाद में बप्पभट्टीसूरि हुआ। पांच वर्ष की आयु में उनने दीक्षा ली। सोलह वर्ष की आयु में आचार्य पद प्राप्त हो गया। उनमें प्रतिदिन एक हजार श्लोक याद करने की क्षमता थी।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	पिपलौदा चातुर्मास	9–25
2.	कालूखेड़ा में श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन आराधना भवन का उद्घाटन	26
3.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	28
4.	अजस्त्र आत्मविश्वास से परिपूर्ण गुरुदेवश्री (स्व. श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	30
5.	श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी का साहित्यिक अवदान (स्व. श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	36
6.	एक जीवन गाधा–विजय यतीन्द्रसूरिजी (साध्वी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा.)	41
7.	मौन एकादशी (श्री छगनलाल भुगड़ी)	44
8.	मौन की परिभाषा	45
9.	इच्छाएँ बढ़ती ही जाती है–चिन्तन का चित्रांकण (जैनाचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	48
10.	प्रश्नोत्तरी	50
11.	स्वास्थ्य तथा जेब दोनों की रक्षा शाकाहार से(जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.)	51
12.	धारावाहिक उपन्यास–किस्मत की बात (स्व. श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	53
13.	परमात्मा से क्या मांगना चाहिए? (मुनिश्री निपुणरत्न विजय म.सा.)	55
14.	108 पार्श्वनाथ तीर्थ अन्तर्गत्....(पुण्यसम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व–पाटण)	58
15.	प्रवचन–अशुभ वचनयोग–32 (स्व. श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	60
16.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	63
17.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	64
18.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	65
19.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	67
20.	श्री जयंतसेन जयनाद (मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	69
21.	श्रावकों के लिये (श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	72
22.	गणधरवाद (लेखांक–71) (स्व. श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	73
23.	गुजराती संभाग	75–90
24.	श्रीसंघ सौरभ	91–99
25.	परिषद् प्रांगण से	100–107
26.	जैन विश्व	108–110
27.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	111–112

गच्छाधिपतिश्री 'युगनायक' की उपाधि से अलंकृत

युग नायक

उपस्थित जनसमुदाय

वासक्षेप

उपधान तप का वरघोड़ा

उपधान तप का चल समारोह

पिपलौदा चातुर्मास

गच्छाधिपतिश्री 'युगनायक' की उपाधि से अलंकृत

चातुर्मास पूर्णता पर बिदाई देते नगरवासियों के नैत्र अश्रुपूरित

पिपलौदा। गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा., मुनिमंडल तथा साध्वी समुदाय के चातुर्मास महोत्सव के समापन पर आयोजित विदाई समारोह में गच्छाधिपति श्री को सर्वसमाज द्वारा युग नायक की पदवी से अलंकृत किया।

विदाई समारोह में श्रावक-श्राविकाओं ने नम आंखों से अपने मन की बात रखी व विदाई गीत की प्रस्तुतियों को सुनकर उपस्थित जनसमुदाय की आँखे भर आईं। समारोह में पूरे चार माह तक पेढ़ी पर अपनी सेवाएँ देने वाले लाखनसिंह हाटपिपलिया का सम्मान किया गया। समापन समारोह में पिपलौदा राजघराने से रानी साहिबा ने पहुँचकर साधु-साध्वी भगवंत का आशीर्वाद लिया श्रीसंघ द्वारा उनका बहुमान किया गया। गच्छाधिपतिश्री ने कहा कि पिपलौदा नगर व क्षेत्रवासियों ने सच्ची श्रद्धा, भक्ति का परिचय दिया है इसी तरह सभी प्रेम विश्वास बनाए रखना आपकी भावना में अन्यंत्र कुछ ना आ जाये इसलिए केवल मात्र धर्म व गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा भावना रखकर धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ते रहना। साथ ही बताया कि समाज की भावना है कि नगर के जैन मंदिर का जीर्णोद्धार होना चाहिए व पुण्य सम्राट ने भी इस हेतु पहल की थी। आप सभी निश्चिंत रहे जल्द ही मंदिर का जीर्णोद्धार होगा। मुनिराज विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि चातुर्मास आत्मीय आराधना, साधना, आत्म उत्थान का पर्व होता है सभी ने इन दिनों तप त्याग धर्म आराधना-साधना करके अपने जीवन को धन्य बनाया है जिंदगी में जो नहीं मिला वो आपको इन चार माह में मिला है गुरू द्वारा बताई गई बातों को अपने जीवन में अंगीकार कर धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ें।

युग नायक की पदवी से किया अलंकृत

नगर व क्षेत्र के समस्त जैन-जैनेत्तर व 56 समाज की ओर से गच्छाधिपतिश्री को 'युग नायक' की पदवी से अलंकृत किया गया। साथ ही विधानसभा जावरा, पिपलौदा क्षेत्र की जनता की ओर से विधायक डॉ. राजेन्द्र पांडेय ने प्रशस्ति-

पिपलौदा चातुर्मास में धर्म गंगा का प्रवाहन

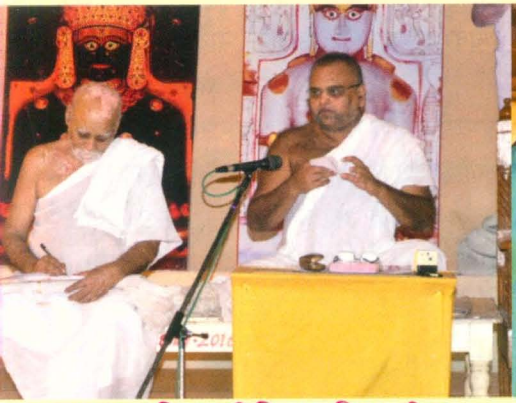

प्रवचनवरत् मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.

लाभार्थी द्वारा आरती

बहुमान

महिला समूह

थाना प्रभारी का सम्मान

चातुर्मास विदाई

पत्र, भाजपा नगर अध्यक्ष मुकेश मोगरा व नगर की ओर से नगर परिषद अध्यक्ष श्यामबिहारी पटेल, सेन समाज की ओर से पूर्व न.पं. अध्यक्ष अतुल गौड़ द्वारा गच्छाधिपति श्री को युग नायक की पदवी का प्रशस्ति पत्र भेंटकर आशीर्वाद लिया गया।

समारोह में स्थानकवासी श्रीसंघ अध्यक्ष महेश नांदेचा, श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग, वाटिका अध्यक्ष शैलेन्द्र कटारिया, चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन, भोजन व्यवस्था प्रभारी कैलाश नांदेचा, मुकेश रॉयल, आवास प्रभारी महेश बोहरा, निर्माण प्रभारी राजेश महावीर, प्रचार सचिव प्रफुल जैन, तरुण अध्यक्ष हर्ष कटारिया आदि का शाल श्रीफल भेंटकर बहुमान किया गया साथ ही भाजपा नगर अध्यक्ष मुकेश मोगरा ने भी बहुमान किया।

नम आँखों से की मन की बात

चातुर्मास महोत्सव के समापन अवसर पर आयोजित विदाई समारोह में पूर्व श्री संग अध्यक्ष रमेशचन्द्र, राकेश जैन, उपाध्यक्ष शिखर बोहरा, प्रचार सचिव प्रफुल जैन, बापूलाल पाठक, दीपक भंडारी कालूखेड़ा, मधुबाला बोहरा ने भी नम आँखों से अपने विचार रखे साथ ही अनिता नांदेचा, अनिता पटवा, आर्ची जैन, डिम्पल बाबेल, श्रेयांसि भंडारी, खुशी नांदेचा, गरिमा नांदेचा, नेहा जैन, हंसा बाबेल ने विदाई स्तवन की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर नगर व क्षेत्र के सभी समाज के वरिष्ठजन, जनप्रतिनिधि व ग्रामीणजन उपस्थित थे। संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया।

गच्छाधिपति युगनायक जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व साधु भगवंत ने 12 नवम्बर को आम्बा की ओर विहार किया। प्रातः दादावाड़ी से विहार कर गच्छाधिपतिश्री राकोदा पहुंचे जहाँ नवकारसी कर पुनः पिपलौदा नगर की ओर प्रस्थान किया व जैन मंदिर पहुंचे। विहार के दौरान नगरवासियों ने दर्शनवंदन कर आशीर्वाद लिया व नम आँखों से विदाई दी। जैन मंदिर में अपने आशीर्वचन देते हुए गच्छाधिपतिश्री व मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा. व मुनिश्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने उपस्थित जनसमुदाय को समाज में एकता व भाईचारे से रहने व देवगुरु और धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा भक्ति के साथ मिलुजलकर कार्य करने की सलाह दी। सुरभी जैन सूखेड़ा ने जैन स्तवन की शानदार प्रस्तुति दी। पूर्व पिपलौदा थाना प्रभारी प्रतापसिंह भदौरिया का बहुमान कर स्मृति चिन्ह भेंट किया।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का संयुक्त एवं हीरक जयंती अधिवेशन

परम सान्निध्य

ध्वजारोहण श्री धरूजी द्वारा

श्री चेतनजी काश्यप विद्यमान

दीप प्रज्वलन

बहुमान

श्री धरू का सम्मान

उपधान तप की पूर्णता

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर सम्पन्न पावनीय चातुर्मास महोत्सव में उपधान तप आराधक नित्य धार्मिक क्रियाएँ कर कठोर तपस्या में लीन रहे वहीं प्रतिदिन दूरदराज क्षेत्र से ग्रामीणजन व श्रीसंघ पहुँचकर प्रवचन का श्रवण कर दर्शन लाभ लेते रहे। मुनिराज तारकरत्नविजयजी म.सा. द्वारा प्रतिदिन आत्म भावना प्रार्थना करवाई। मुनिराजश्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज श्री विद्वरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा., मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा., साध्वी श्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा उपस्थित थे। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल जैन ने बताया कि आराधकों व लाभार्थियों का श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग परिवार द्वारा बहुमान किया गया। संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया।

* प्रवचन के दौरान मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि तप, त्याग, धर्म, आराधना, साधना को जीवन की एक डोर में पिरोकर व्यवहार करना चाहिए। जिस प्रकार पतंग धागे से बंधा रहता है और वह लम्बी ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेता है जब डोर टूट जाती है तो पतंग नीचे आ जाती है। इसी प्रकार जीवन में गलत व्यवहार करने वाला भी लंबी उड़ान नहीं भर सकता है व समाज में उसे नीचा देखना पड़ता है धर्म, आराधना, साधना करने से मोक्ष मार्ग को प्राप्त किया जा सकता है सभी जीवन लाभ की कामना करते है किन्तु काम उसके विपरीत करने से अधोगति में चले जाते हैं पाप पुण्य कर्म करने का फल कर्ता को भी भोगना पड़ता है साथ ही विक्रम चरित्र के बारे में बताया।

* मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि जीव अनंत भव का भ्रमण कर 84 लाख जीव योनियों को भोगकर मानव भव को प्राप्त करता है मानव भव को जंक्शन जैसा कहा गया है यहां से दिशा और दशा को सुधारने हेतु मानव व्रत, पचकाण, नियम, साधना, आराधना कर उच्चगति में जा सकता है यदि मानव जीवन में दुष्कर्म करेगा तो नरम गति में जायेगा जहाँ पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं हो सकता। मानव जन्म मिला है तो धर्म आराधना करके अपने जीवन को धन्य बनाइये।

आपने कहा कि तप, त्याग, धर्म, आराधना, साधना को जीवन की एक डोर में पिरोकर व्यवहार करना चाहिए।

'पुण्य सम्राट' ग्रंथ का विमोचन

'पुण्य सम्राट' ग्रंथ का विमोचन करते अतिथिगण

नवयुवक उपस्थिति

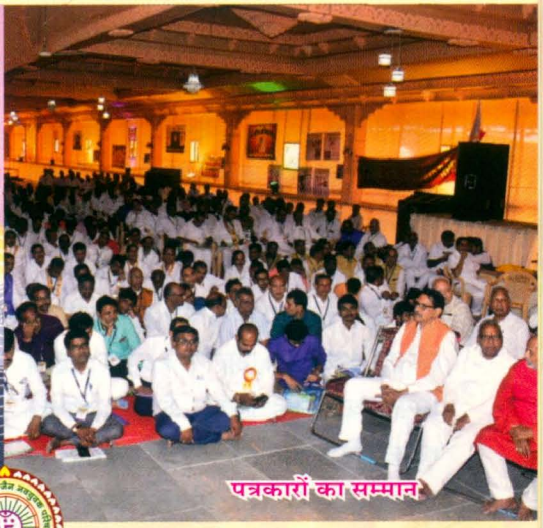

पत्रकारों का सम्मान

जिस प्रकार पतंग धागे से बंधा रहता है ओर वह लम्बी उचाईयों को प्राप्त कर लेता है व जब डोर टूट जाती है तो पतंग नीचे आ जाती है इसी प्रकार जीवन में गलत व्यवहार करने वाला भी लंबी उड़ान नहीं भर सकता है व समाज में उसे नीचा देखना पड़ता है जीवन में धर्म, आराधना, साधना करने से मोक्ष मार्ग को प्राप्त किया जा सकता है सभी जीवन लाभ की कामना करते हैं किन्तु काम उसके विपरीत करने से अधोगति में चले जाते हैं पाप-पुण्य कर्म करने का फल कर्ता को भी भोगना पड़ता है।

* मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि शुभ कार्य एवं प्रवृर्ति में रहने वाला जीव सुख संपत्ति और ख्याति प्राप्त कर सकता है खाते-खाते पीते-पीते भी तप हो सकता है लेकिन उसके बारे में विस्तार से जानकारी लेकर ही तप करना या करवाना चाहिए तप की साधना का वैज्ञानिक व धार्मिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्व है तप का अर्थ है स्वयं का अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर कर्म की निर्जरा करना सिर्फ जैन ही नहीं सभी धर्मों में तप का उल्लेख मिलता है लेकिन तप करने का तरीका अलग - अलग है मगर उद्देश्य सिर्फ एक ही है विज्ञान में भी तप को महत्व दिया गया है शरीर को निरोगी बनाये रखने के लिए भी तप बहुत जरूरी है। कहा कि जो मानव सुख व दुख में धर्म से विमुख नहीं होते वह हर हाल में प्रसन्न रहते हैं व आने वाले उपसर्ग कष्ट और सकंट स्वतः ही दूर हो जाते हैं व धार्मिक क्रिया के सूत्रों का चिंतन करने से शुभ भाव आते हैं जो भव की भ्रमणा को दूर करके में सहायक होते हैं वर्तमान में आराधना कम और विराधना अधिक हो गई है जिससे प्रभु का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात नहीं होता । कुमार पाल राजा का उदाहरण देते हुए बताया कि आरती में कुमार पाल राजा का नाम लिया जाता है क्योंकि उस जीव ने पूर्व भव शुभाशुभ प्रभु भक्ति एवं अपनी अर्जित पूंजी से प्रभु की सेवा व खूब पूजा की जिससे उन्हें 11 देशों का अधिपति कहा गया जो जीव अंसारी राजा प्रजा की बात से बढ़कर देव गुरु की भक्ति करता है उसे किसी भी प्रकार की कोई चिंता नहीं होती।

* मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाला दिवस है ज्ञान पंचमी। जिनकी पढ़ाई के दौरान याद करने की क्षमता कम होती है उन्हें विधि सहित ज्ञान की आराधना करना चाहिए व ओम ह्रीं नमो नाणस्य मंत्र की एक माला प्रतिदिन गिनने से स्मरण शक्ति में वृद्धि होती हैं इसके विपरीत ज्ञान की विराधना जैसे खाते-खाते बोलना, कागज को

जलाना व फाड़ना व उनमें खाना या अन्य कार्य करने से शरीर में आधी व्याधि आती है ज्ञान की अशातना से बचने हेतु छोटी-छोटी भूलों को सुधारना चाहिए जिससे ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। पंचाह्निका महोत्सव के चौथे दिवस उपधान तप आराधकों का नगर में भव्य वरघोड़ा निकला।

वरघोड़ा मुख्य मार्ग होते हुए झंडा चौक स्थित श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर पहुंचा जहाँ सभी तपस्वियों व गुरु भक्तों ने दर्शन लाभ लिए वरघोड़े में नगरवासियों ने जगह-जगह गहुंली बनाई व गच्छाधिपति श्री का आशीर्वाद लिया। वरघोड़े में सुप्रसिद्ध मालवा का बेंड, 6 बग्गी, धर्म ध्वजा लिए घोड़े, पारस डीजे, शहनाई व ढोल आदि आकर्षण का केन्द्र रहे। वरघोड़े में आराधकों के परिवारजन के साथ ही देशभर से गुरु भक्त पिपलौदा पहुंचे झंडा चौक से वरघोड़ा पुनः दादावाड़ी पहुँचकर धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। जहाँ उपधान तप आराधना की मोक्ष माला का चढ़ावा लगाया गया जिसमें लाभार्थियों ने बढ़चढ़ कर लाभ लिया। गच्छाधिपति श्री ने कहा कि उपधानतप सांसारिक जीवन की सर्वोत्तम उत्कृष्ट आराधना है यह आराधना संयम ग्रहण से लेकर मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होने का संदेश व भावना प्रज्वलित करती हैं अगर कर्मक्षय के भाव होतो तप को अपना लेना चाहिए क्योंकि आत्मा को अनंत सुख का उपभोक्ता बनाने का कार्य तप ही करता है उपधान संयम मार्ग को अपनाने के पूर्व की पाठशाला है श्रावक-श्राविकाएँ अपने वर्तमान जीवन से ओर आगे बढ़कर साधुत्व जीवन जैसा निर्वाह व सांसारिक भोग व्रतियों को त्याग कर शुद्ध साधुत्व मार्ग का अनुशरण इस तप में करते है उपधान तप करने से जीवन में शुद्ध वीतराग धर्म के प्रति जिज्ञासा व आचरण बढ़ता है। सांसारिक कार्यों में हार पहनाए जाते हैं किन्तु ऐसी कठोर तपस्या करने वाले उपधान आराधकों को मोक्ष माला पहनाई जाएगी।

पुण्य सम्राट के चरणों में समर्पित गच्छाधिपति श्री द्वारा रचित 'भक्ति गीत' पुस्तक का विमोचन लाभार्थी परिवार के साथ त्रिस्तुतिक श्री संघ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शांतिलाल दसेड़ा, नवयुवक परिषद राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री अनिल दसेड़ा, राष्ट्रीय सहमंत्री राजकमल जैन, श्री संघ अध्यक्ष बाबूबाल धींग, चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर, वाटिका अध्यक्ष शेलेन्द्र कटारिया व प्रेस क्लब जावरा के पूर्व अध्यक्ष मदनलाल धारीवाल द्वारा किया गया। पुस्तक में करीब 166 स्तवन मुनि पद पर रहकर गच्छाधिपति श्री द्वारा लिखे गए हैं पुस्तक लाभार्थी कांतिलाल,

राजकमल, रितिक दुग्गड़ परिवार रतलाम द्वारा गच्छाधिपति श्री, मुनिमण्डल व अतिथियों को पुस्तक भेंट की।

जयंतसेनसुरी अष्टप्रकारी महापूजा हुई– गच्छाधिपति श्री की निश्रा में पाँच दिवसीय पंचांहिका महोत्सव के चौथे दिवस नगर के श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर लाभार्थी वाटिका ट्रस्ट द्वारा विधि-विधान से श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी महापूजा की गई। पंचांहिका महोत्सव के दौरान हो रहे है नित्य धार्मिक आयोजनों भाग ले रहे हैं।

पत्रकारों का सम्मान

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में नगर में चल रहे पावनिय चातुर्मास महोत्सव को चार माह तक अपने समाचार पत्रों के माध्यम से देशभर में चातुर्मास को ख्याति दिलवाने वाले पत्रकार प्रकाश छाजेड़, अशोक चोपड़ा, जगदीश राठौड़, मदन धारीवाल, पवन शर्मा, विशाल छाजेड़, निलेश धारीवाल, अनवर कादरी, पंकज जैन, मनीष जायसवाल, रोमेश जैन, प्रवीण सिंह, प्रफुल जैन, नवलसिंह, जितेन्द्र बाबेल, सुमित पटेल, धर्मेन्द्र बोस, एजाजुद्दीन शेख व फोटोग्राफर मोहित पांचाल आदि के साथ ही नगर परिषद संबंधित सम्पूर्ण सहयोग हेतु अध्यक्ष श्याम बिहारी पटेल व सेवा कार्य हेतु पूर्व न.प. अध्यक्ष अतुल गौड़, दीनदयाल पाटीदार धामेड़ी, डॉ. के.एल. राठौड़, यशवंत डोसी सैलाना का श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग, स्थानक श्रीसंघ अध्यक्ष महेश नांदेचा, चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर, लाभार्थी राजेश जैन व मुकेश रॉयल परिवार द्वारा पुण्य सम्राट का चांदी से बना स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया साथ ही सभी पत्रकारों ने सामूहिक रूप से गच्छाधिपति श्री का आशीर्वाद लिया। सभी कलमकारों को गच्छाधिपति श्री ने बालपेन भेंट कर कहा कि भगवान महावीर व गुरु भगवंतों की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का जो कार्य सभी कलमकारों ने किया है वह अनुमोदनीय है देश - विदेश तक मीडिया के माध्यम से यह पावनीय चातुर्मास एक स्वर्णिम इतिहास लिख चुका है युगों-युगों तक इस चातुर्मास को याद किया जावेगा। मुनिराज विद्वरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि पत्रकारों की कलम में जो ताकत होती है वो किसी को उठा भी सकते है और किसी को गिरा भी सकते है लेकिन धर्म के प्रति सच्ची

श्रद्धा और समर्पण व निःस्वार्थ भाव से किये गये अनुकरणीय कार्य की हर ओर प्रशंसा होती है इस चातुर्मास को देश-विदेश तक पहुंचाने में मीडिया का अहम योगदान रहा है। पत्रकारों की ओर से जावरा श्रमजीवी पत्रकार संघ अध्यक्ष अशोक चोपड़ा ने कहा कि पिपलौदा श्रीसंघ ने एक संदेश देश भर के संघ समाज तक पहुंचाया है कि कोई छोटा और बड़ा नहीं होता जहाँ सच्ची श्रद्धा व समर्पण भाव होते है वहीं गुरुदेव का चातुर्मास होता है साथ ही सफलतम चार माह में किये गए आयोजनों की प्रशंसा की। न.प. अध्यक्ष श्याम बिहारी पटेल ने कहा कि नगर व क्षेत्र में धर्म के प्रति ऊर्जा का संचार हुआ है जो सभी को नजर आ रहा है साधु-साध्वी भगवंत जहाँ होते है वह धरती स्वर्ग से कम नहीं होती प्रतिदिन प्रवचन के दौरान बताई गई बातों को जीवन में अंगीकार करना चाहिए।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल जैन ने बताया कि दादा गुरुदेव व पुण्य सम्राट की आरती उतारी गई साथ ही प्रभावना वितरित की गई। सभी लाभार्थियों का पारसमल धींग परिवार राकोदा द्वारा बहुमान किया गया। संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन व तरुण अध्यक्ष हर्ष कटारिया ने किया।

दो दिवसीय ज्ञानोत्सव शिविर सम्पन्न

पिपलौदा। गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चल रहे पावनीय चातुर्मास अंतर्गत दो दिवसीय ज्ञानोत्सव शिविर का शुभारंभ हुआ। ज्ञानोत्सव शिविर में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ के सहयोग से सम्यक ज्ञान अभिवृद्धि योजना के तहत सूत्र स्मरण (कंठस्थ) अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सैंकड़ों बच्चों ने कंठस्थ सूत्र, स्तवन, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ दी। आयोजन में श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्र लोढ़ा, नवयुवक परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू, महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, शिक्षामंत्री भरतभाई वोरा, जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड़, श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग, श्री वर्धमान स्थानक श्रीसंघ अध्यक्ष महेश नांदेचा, चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर, नवयुवक परिषद अध्यक्ष अशोक बोहरा व महिला परिषद प्रदेश अध्यक्ष पुष्पा

भंडारी व शिक्षा मंत्री संगीता पोरवाल व रंजना धरु अतिथि के रूप में मंचासीन थे। सर्वप्रथम अतिथियों का बहुमान किया गया। स्वागत भाषण चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने दिया व इंदौर पाठशाला के बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। साथ ही आनंद जैन रतलाम ने सविधि संगीतमय गुरु वंदन करवाया।

इस दौरान गच्छाधिपति श्री ने कहा कि वर्तमान में संस्कृति व संस्कार में कमी आई है जिसका मुख्य कारण व्यसन और फैशन है इससे छुटकारा पाने के लिए माता-पिता व पालक अपने बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा के साथ ही धार्मिक शिक्षण हेतु धार्मिक पाठशाला में भेजकर परिषद के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहभागी बने व आने वाले भविष्य की धरोहर को धर्म के प्रति जाग्रत करने का कार्य करे।

मुनिराज विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि परिषद के चार उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए सबसे महत्वपूर्ण उपदेश धार्मिक शिक्षण को कार्य रूप देने के लिए वर्तमान परिषद अध्यक्ष पूरी टीम ने सराहनीय प्रयास किया जो अनुमोदनीय है। धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने में कोई उम्र का बंधन नहीं होता है श्रद्धा और लगन से जो पढ़ाई करता है उसे सफलता मिलती है ऐसा ही उदाहरण इस चातुर्मास के दौरान उपधानतप आराधकों ने यहाँ करके दिखाया है।

श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने बच्चों से कहा कि जिन्होंने शिक्षा ग्रहण की है वे विनयवान बनकर अपने माता-पिता व पालक का सम्मान करें। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री धरू ने कहा कि परिषद ओर उसके उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु पूण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वरजी ने शिक्षा का एक लक्ष्य दिया था जिसे मेरे परिवार के साथ ही परिषद की पूरी टीम ने लगन के साथ पूर्ण करने का प्रयास किया जिसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है करीब बारह सौ बच्चों ने इस योजना में भाग लिया था जिसमें से करीब दो सौ से अधिक बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है जो सराहनीय है। नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्रीश्रीमाल द्वारा श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ के बच्चों से गुरुवंदन, चैत्य वंदन, सामायिक विधि, देव वंदन विधि, राई देवसीय प्रतिक्रमण, पंच प्रतिक्रमण के सूत्रों को समस्त पदाधिकारियों के सामने प्रस्तुतिकरण करवाया व श्रेष्ठ बच्चों की प्रशंसा करते हुए उन्हें बाकी शेष बच्चों को भी प्रेरणा देने की बात कही। संचालन राजेश बागरेचा एवं तरुण अध्यक्ष हर्ष कटारिया ने किया।

शिविर के दूसरे दिन सूत्र स्मरण (कंठस्थ) अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सैकड़ों बच्चों को पुरुस्कार व प्रभु की अष्ट प्रकारी पूजन करने के उपकरण प्रदान किये गए पुरस्कार प्राप्त कर बच्चों के चेहरे खिल उठे। साथ ही बच्चों के साथ ही शिक्षक-शिक्षिकाओं को स्मृति चिन्ह भेंट कर बहुमान किया गया।

सम्यक ज्ञान अभिवृद्धि योजना सन् 2020-21 का लाभ श्रीमती कांताबेन बाबूभाई, लल्लू भाई वोरा नड़ियाद द्वारा लेने का अभियान लाभार्थी रमेश भाई धरु परिवार व सभी अतिथियों का बहुमान किया गया। साथ ही नवयुवक परिषद व महिला परिषद राष्ट्रीय व प्रदेश पदाधिकारियों द्वारा लाभार्थी धरू परिवार का बहुमान किया गया। इस दौरान गच्छाधिपतिश्री ने कहा की धार्मिक पाठशाला में बच्चों के भविष्य का निर्माण होता है जिस प्रकार भवन बनाने में नींव का मजबूत होना जरूरी है ठीक उसी प्रकार धार्मिक ज्ञान होना भी अति आवश्यक है। व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर अनेक उपाधिया तो प्राप्त की जा सकती है किन्तु ज्ञान की उपाधियाँ प्राप्त करने के लिए हमें अपने धर्म की जानकारी होना जरूरी है अतः धर्म के प्रति जाग्रति लाने हेतु अपने बच्चों को पाठशाला भेजें व समाज को नई दिशा में ले जाने का कार्य करें। मुनिराज विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि माता-पिता व पालक की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने बच्चों को धार्मिक पाठशाला भेजें व उन्हें इस योग्य बनाएँ की वह आने वाले समय में उनकी सेवा कर सके, वर्तमान में वृद्धाश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ रही है इसका मुख्य कारण बच्चों में धार्मिक शिक्षा का ज्ञान नहीं होना है माता-पिता और पालक अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देकर स्वयं का भविष्य तय करते है। शिविर में रतलाम पाठशाला से आनंद जैन, सारंगी से विधि तलेसरा, कुशलगढ़ से संकेश जैन, इंदौर से जैनम द्वारा विशेष धार्मिक प्रस्तुतियां दी गई साथ ही पिपलियामंडी से 45 माह का आर्य रक्षित अनिल कुमार आंचलिया ने भगवान महावीर के जीवन पर आधारित प्रश्नों का सटीक उत्तर देकर जनमानस का मन मोह लिया सभी को पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर में निम्बाहेड़ा के 65 वर्षीय व बचपन से प्रज्ञा चक्षु शिक्षक सुशील सिंघवी ने अपने उद्बोधन में आयोजन की सराहना की जिनका पदाधिकारियों द्वारा बहुमान किया गया।

परिषद का हीरक अधिवेशन

उल्लासपूर्ण वातावरण में दो दिनी समारोह सम्पन्न

पिपलौदा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला, तरूण, बहू, बालिका ईकाइयों का संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 9 तथा 10 नवम्बर शनि व रविवार को पिपलौदा जि. रतलाम (म.प्र.) में गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू (मुम्बई/तराद) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें परिषद की शाखाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया उपस्थिति भी बड़ी तथा उल्लेखनीय संख्या में रही जो सफल मानी गई।

अधिवेशन की पूर्व संध्या दिनांक 8 नवम्बर शुक्रवार को नवयुवक परिषद् की कार्यसमिति की बैठक पिपलौदा में ही गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू की अध्यक्षता व वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ओ.सी. जैन के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोकजी श्रीमाल ने किया। बैठक के शुभारम्भ गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने उद्बोधन के साथ किया। आपने फरमाया कि धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करके पुण्य सम्राट के श्रेष्ठ चयन पर मोहर लगाई है। परिषद को इस वर्ष 60 वर्ष पूर्व हुए हैं आपने 60 प्रायोजनाएँ देकर सराहनीय कार्य किया हैं। गच्छाधिपतिश्री ने श्री रमेशजी धरू तथा श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल के नामों का उल्लेख कर उनकी सक्रियता की प्रशंसा की।

महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल ने परिषद् के विभिन्न शाखाओं द्वारा प्राप्त की जा रही उपलब्धियों का उल्लेख किया विशेषतः अहमदाबाद तथा राणापुर के शाखाओं के कार्यों का रेखाकंन किया। श्री रमेशजी धरू द्वारा प्रायोजित सम्यक ज्ञान अभिवृद्धि योजना के अन्तर्गत 4 वर्षों की प्रगति से अवगत किया। आपने विभिन्न सुझाव भी दिये श्री ओ.सी. जैन ने कहाकि धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र में धरू के अध्यक्षीय कार्यकाल में तीन वर्षों में अभूतपूर्व कार्य हुआ है। जो कि अनुमोदनीय है। इसकी राष्ट्रीय कार्यसमिति धन्यवाद प्रस्ताव पारित करें। बैठक में राजेन्द्र जैन दंगवाड़ावाला ने बड़नगर में प्रति रविवारिय राजेन्द्र जयन्त संस्कार

शिविर के सम्बन्ध में पूर्ण रूपरेखा रखी गई जिसकी भी अनुमोदना की गई। बैठक में अन्य कई सुझावों पर भी विचार किया गया।

हीरक जयंती अधिवेशन

प्रथम दिवस दि. 9 नवम्बर 2019 शनिवार

परिषद के द्विदिवसीय हीरक जयन्ती अधिवेशन के कार्यक्रमों को सान्निध्य धर्मदिवाकर वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा मुनिमंडल मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म., मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म., मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म., मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म., मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म. एवं साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म. आदि ठाणा ने सान्निध्य प्रदान किया। अधिवेशन की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने की तथा आतिथ्य अ.भा. श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने किया। संयोजन राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल ने किया। मंच संचालन राष्ट्रीय प्रचारमंत्री श्री शांतिलाल गोखरू ने किया।

ध्वजारोहण तथा दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। माल्यार्पण राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री तथा पदाधिकारियों ने किया। सभी का स्वागत पिपलौदा संघ की ओर से श्री राजेशजी तथा श्री मुकेशजी ने किया। चातुर्मास प्रभारी श्री राकेशजी जैन, 'आर.के.' ने स्वागत भाषण दिया।

महिला परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अंगूरबाला सेठिया तथा तरूण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री करणभाई मोरखिया ने अपनी इकाइयों के प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किये।

नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने नवयुवक परिषद की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए सम्यक् ज्ञान अभिवृद्धि योजना, धर्मोत्तेजक परिषद द्वारा धर्माराधना, शाखाओं द्वारा संचालित मानव सेवा, जीवदया के प्रकल्पों, अल्प बचत बैंकों की प्रगति, शाश्वत धर्म प्रचार, जापान में परिषद के श्री वीरेन्द्रजी भंडारी द्वारा जापानियों को जैन धर्म अपनाने की प्रेरणा, साधु-साध्वियों की विहार यात्रा में वैयावच्च सेवा तथा वैयावच्च समितियों का गठन, सुश्रावक श्री प्रमोद बोराणा द्वारा राष्ट्रसंत सा. के देवलोकगमन के पश्चात् छह विगई

के त्याग आदि का उल्लेख किया। आपने परिषद परिवार के श्री दिनेशजी जैन मामा, श्री अनिल राणावत, श्री श्रेणिक कोठारी, श्री सारस पंवार आदि के निधन पर श्रद्धाजंली अर्पित की।

श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने कहाकि परिषद की स्थापना का मूल उद्देश्य अनुशासन को जीवन में उतारना है। पू. राष्ट्रसंत सा. के प्रथम शिष्य श्री नित्यानंदविजयजी म. आज आचार्यश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. के रूप में अपनी विनयशीलता, गुरुभक्ति तथा गुरूसेवा के कारण विराजमान है।

इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र लोढ़ा द्वारा लिखित ग्रंथ 'पुण्य सम्राट' का भी परिषद द्वारा प्रकाशन किया गया। इसमें गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. का समग्र जीवन वृतान्त हैं। ग्रंथ 350 पृष्ठों का है तथा इसमें 67 अध्याय व 15 परिशिष्ठ में विस्तार है। लेखक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने ग्रंथ की प्रथम प्रति गच्छाधिपति श्री के अलावा श्री धरूजी, श्रीश्रीमालजी, श्री बाबुलालजी धींग को समर्पित की।

समारोह को जैनाचार्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि परिषद अनुशासन वह संस्था है, परिषद् स्वयंसेवक अपने कार्यों से ऊँचाई पर जाती है। यह हमें मर्यादा सिखाती है। मैं परिषद् का हूँ, परिषद् मेरी है। मैं पुण्यसम्राट के द्वारा परिषद को जो ऊँचाई यादि उसे आगे बढ़ाने के लिये कृत संकल्पित है। परिषद् का प्रत्येक सदस्य केवल और पुण्यसम्राट के प्रति समर्पित रहे। आपके समर्पण श्रद्धा से ही परिषद् के द्वारा अनेक कार्य किये जा रहे हैं। श्री रमेशजी धरू ने सम्यक् ज्ञान अभिवृद्धि योजना के माध्यम से अपनी राशि का सुकृत उपयोग कर पुण्य लाभ लिया है।

मुनिराजश्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने फरमाया कि परोक्ष रूप से जिनका साथ ही जिनकी कृपा है जिन पर श्रद्धा है। उनके जीवनवृत्त की पुस्तक आज लोकार्पित हुई है। पुण्य सम्राट ने परिषद् की स्थापना की है इसके गुणधर्म पुण्य सम्राट ने दिए हैं।

हमारी जिन्दगी को सवार दिया, संस्कारित कर दिया। परिषद् के नाम पर हम दूरदराज से श्रद्धा-समर्पण के साथ आए हैं। हम परिषद् हमारा मंच है। संघ सर्वोपरि है। पर परिषद् भी इसका अंग है। परिषद् की सेवा समर्पण वैयावच्च की तारीफ अनेकों आचार्यों ने की है। रमेशजी धरू ने 9200 बच्चों को धर्ममय बना दिया यह परिषद् का प्रयास हैं।

उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है पुण्य सम्राट की आत्मा प्रसन्न हो रही होगी। निश्चय से प्रसन्नता का अनुभव कर रही होगी।

अच्छाई देखोगे तो निश्चय से तिर जाओगे बुराई हर व्यक्ति में हो सकती है पर हमारी दृष्टि सदैव अच्छाई पर हो।

द्वितीय सत्र

अधिवेशन का द्वितीय सत्र मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म. तथा मुनिराजश्री तारकरत्नविजयजी म. के सान्निध्य में प्रारंभ हुआ जिसमें शाखाओं ने अपने प्रगति प्रतिवेदनों का वाचन किया। बाद में गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म., मुनिराजश्री विद्वद्रत्नविजयजी म., मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म. तथा मुनिराजश्री निर्भयरत्नविजयजी म. सा. का आगमन हुआ। उनके मार्गदर्शन में अधिवेशन के सत्र की निरंतरता बनी रही।

निम्न महानुभावों ने अपनी शाखाओं के प्रतिवेदन प्रस्तुत किये- 1. श्री नीरजजी सुराणा (इंदौर), 2. श्री दिलीपजी कर्नावट (मंदसौर), 3. श्री मनोजजी वागरेचा (नागदा), 4. श्री कमलेशजी कोठारी (पारा), 5. श्री वीरेन्द्रजी गोलेचा (उज्जैन), 6. श्री प्रवीणजी संघवी (रतलाम), 7. श्री दर्शन सेठ (डीसा), 8. श्री संजयजी धाड़ीवाल (जावरा), 9. श्री पवनजी नाहर (राणापुर), 10. श्री साकेतजी गिरिया (बड़नगर), 11. श्री नरेन्द्रजी (इंदौर), 12. श्री राजेन्द्रजी पटवा (उज्जैन), 13. श्री संदीपजी भण्डारी (महिदपुर रोड़), 14. श्री भरतभाई वोरा (मुंबई), शिक्षा मंत्री, 15. श्री संजयजी मेहता (झाबुआ), 16. श्री नवीनभाई (बल्लू) मुंबई, 17. श्री आशीषजी जैन (कुक्षी), 18. दूधवा गुजरात परिषद, 19. राकेशजी नाहर (दसई)।अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू ने अपने कार्यकाल के समापन अवसर पर सम्बोधित कर मिच्छामि दुक्कडम् किया तथा सहयोग के लिये आभार माना। निवर्तमान महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल ने भी कहा कि गुरूदेवश्री ने मुझे जो कार्य सौंपा, उसे मैने पूरी निष्ठा के साथ किया। मैं परिषद का हूँ तथा सदैव परिषद का रहूंगा। मैं कृतज्ञ हूँ कि आप सभी ने मुझे वात्सल्य दिया। मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म. ने नये मनोनयन की भूमिका बनाई तथा सभी से परिषद् से निष्ठापूर्वक जुड़े रहने का आह्वान किया। गच्छाधिपतिश्री ने नयी अवधि के लिये पदाधिकारियों की घोषणा की। श्री अशोकश्री श्रीमाल ने अपना महामंत्री का पदभार नवनियुक्त राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा को पीन लगाकर बधाई एवं शुभकामना के साथ दिया। श्री सुधीरजी ने चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया।

कालूखेड़ा में श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन आराधना भवन का उद्घाटन

कालूखेड़ा। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद एवम् गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी महाराजा की प्रेरणा से कालूखेड़ा में निर्मित श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन आराधना भवन का भव्य उद्घाटन आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज, मुनिश्रेष्ठ श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी की पावन निश्रा में दिनांक 8 नवम्बर 2019 शुक्रवार को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पूज्य आचार्य अपने मुनिवृन्द के साथ पिपलौदा से विहार कर कालूखेड़ा पधारे। जहाँ पर पूज्य आचार्यश्री का भव्य नगर प्रवेश घोड़े, शहनाई, ढोल-नगाड़ों, बैंड-बाजे के साथ वरघोड़ा निकाला गया। वरघोड़े में एक और महिला परिषद चूंदड़ वस्त्रों में कलश लेकर चल रही थी तो दूसरी ओर बालिका परिषद हरे वस्त्रों में वाना-डंडा एवम् नृत्य कर रही थी। वरघोड़ा धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। मंगलाचरण पश्चात् गुरुवंदन श्रीसंघ के वरिष्ठतम श्री भेरुलालजी लोढ़ा ने किया।

कार्यक्रम के अतिथिगणों का सम्मान श्रीसंघ एवम् परिषद परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अतिथिगण मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव श्री के.के. सिंहजी कालूखेड़ा, त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी

धरू, महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

पूज्य गच्छाधिपति श्री ने नगरवासियों को आशीर्वाद प्रदान किया। मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी ने आराधना भवन निर्माण के लिए सर्वाधिक मेहनत करने वाले परिषद अध्यक्ष श्री दीपक भंडारी की सराहना की। जैन रत्न किशोरचंदजी खीमावत, थराद, श्रीसंघ अहमदाबाद, अमराईवाड़ी श्रीसंघ अहमदाबाद के सहयोग से निर्मित इस आराधना भवन में हीरालालजी भेरुलालजी भण्डारी परिवार ने तीन लाख इक्कावन हजार रुपये देने की घोषणा की। वहीं रामलालजी छाजेड़ परिवार, दिनेशकुमार मुकेश कुमार छाजेड़ परिवार ने इक्कावन, इक्कावन हजार रुपये सहयोग प्रदान करने की घोषणा की। के.के. सिंहजी कालूखेड़ा श्रीसंघ के महामंत्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा परिषद के अध्यक्ष रमेशजी धरू ने आराधना भवन का उद्घाटन किया। आराधना भवन के इस उद्घाटन कार्यक्रम एवम् श्रीसंघ की नवकारसी एवम् स्वामी वात्सल्य का आयोजन अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा-कालूखेड़ा द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कालूखेड़ा शाखा परिषद अध्यक्ष श्री दीपक भंडारी ने किया।

* परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा मंदसौर को पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनिय कार्य करने पर पर्यावरण पुरस्कार दिया गया। केन्द्रीय प्रतिनिधि श्रीमती निर्मला लोढ़ा प्रदेश महामंत्री श्रीमती हेमा हींगड़, शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुनी खाबिया, भारती पोरवाल, ममता मारू, शकुंतला व चन्द्रकान्ता सोनगरा, कुसुम, सुषमा आदि।

* अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू ने वयोवृद्ध जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयघोषसूरीवरजी म. के देवलोक गमन पर हार्दिक दुःख प्रकट करते हुए शोक संदेश प्रसारित किया है।

सम्पादकीय

तीर्थंकर महावीर के समकालीन वैचारिक जागृति (1)

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

ईसा पूर्व की छठी शताब्दी का विश्व वैचारिक जागृति का युग था। सम्पूर्ण मानव जाति टकराव, विवाद तथा युद्धों से निकल कर शांति की खोज में जीवन के मूल्यों को तलाश रही थी। इस प्रक्रिया में धार्मिक आंदोलनों का जन्म तथा प्रचार हो रहा था। उस समय सत्ताओं के मध्य आधिपत्य के लिये संघर्ष था, भारी आर्थिक समृद्धि थी लेकिन व्यक्ति को संतोष नहीं था। जातिवाद की प्रबलता ने व्यक्ति को जन्म से ही उच्च अथवा निम्न घोषित कर रखा था। इस विभाजन से मानवता का पतन हो रहा था। धर्म के नाम पर कर्मकाण्डों की बहुतायत थी। विभिन्न देशों में संस्कृतियों का उद्भव महापुरुषों के माध्यम से हो रहा था। सर्वत्र धार्मिक चेतना अंगड़ाई ले रही थी। चीन में कन्फ्यूशियस तथा लाओत्से इस जागृति के प्रतीक बन चुके थे, यहुदियों ने बेबी-लोनिया में जेहोवा के प्रति आस्था की दृढ़ता स्थापित कर दी थी एवं यूनान में पाइथोगोरस, अफलातून व सुकरात सोफिस्टों ने, ईरान में जरथुष्ट, फिलीस्तीन में जिरेमियां व ईर्जाकेल ने आध्यात्म परतों को उघाड़ने का प्रयोग किया था। इतने सभी के बावजूद भारतवर्ष में जीवन की गुत्थियों को सुलभ बनाने के लिए योगियों तथा ज्ञानियों का समूह तेजी से सक्रिय था। ये सभी इस समय धर्म के नाम पर व्याप्त रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का प्रखर विरोध कर रहे थे। तब प्रचलित धर्मों व मार्गों ने नूतन का प्रतिकार किया, आपदाएं उत्पन्न कीं लेकिन उनको स्वयं को नूतन सुधार अपनाने के लिये बाध्य होना पड़ा । भारत में तीर्थंकर महावीर स्वामी तथा महात्मा गौतम बुद्ध नव्य सभ्यता के सूत्रधार बने हुए थे।

भारत में सभ्यता का उदय लगभग दस लाख वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी के द्वारा हुआ था। मन और इन्द्रियों से तप करने वाले श्रमण कहलाये। भगवान ऋषभदेव के समय में श्रमण परम्परा की नींव पड़ी, इसका उल्लेख श्रीमद् भागवत आदि ग्रंथों में आता है। बृहदारण्यक उपनिषद् एवं वाल्मिकी रामायण में भी श्रमण शब्द प्रयुक्त है। जैन आगमों तथा ग्रंथों में श्रमण पांच प्रकार के बताये गये हैं- निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गेरूओं तथा आजीविका। इसे ही श्रमण संस्कृति का अस्तित्व काल माना जाता है। क्रमशः चौबीस तीर्थंकरों की परम्परा श्रमण संस्कृति की देन है। मनु के आविर्भाव के साथ वैदिक संस्कृति का उठाव हुआ तथा वेदों को ब्रह्मवाक्य के

रूप में स्वीकार किया गया। भगवान रामचंद्रजी के युग ने वैदिक संस्कृति को ओषजन दिया एवं भगवान श्री कृष्णजी के समय वैदिक संस्कृति को प्रबलता हुई। कालांतर में धार्मिक क्रियाओं तथा संस्कृति संरक्षण का भार ब्राह्मण वर्ग पर आधारित हो गया। क्षत्रिय वर्ग राजवंशी रहा एवं राज्य संचालन का दायित्व निर्वाहित करता रहा। संस्कृति संचालन के दायित्व से उच्च आचरण की अनिवार्यता भटक गई। यज्ञ-याज्ञ तथा बाह्य क्रियाकांड को धर्म की प्रमुख विशेषता बना दिया गया था। यज्ञ में घृत, शहद के साथ पशु भी होम किये जाने लगे थे। पराकाष्ठा पितृमेघ यज्ञ तथा मातृमेघ तक पहुंच गई थी। ऊँच-नीच का मिथ्याभिमान मानवता को क्षुब्ध किये हुए था। शुद्र उच्च वर्ग के साथ चल भी नहीं पाते थें। स्त्री वर्ग की स्थिति दयनीय थी। दासी प्रथा का प्रचलन था। शुद्र को वेद की ऋचाएं पढ़ने, सुनने का अधिकार नहीं था। स्त्री वर्ग की भी समान स्थिति थी। वेदों के पठन व श्रवण उनके लिये प्रतिबंधित थे। स्त्री स्वतंत्रता नाम मात्र की भी नहीं थी।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का युग सामाजिक संहिता लेकर आया था। भारतीय इतिहास ने क्रांति के दर्शन किये थे। हालांकि वेदों का खण्डन किये जाने के कारण जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा श्रमण संस्कृति की अन्य विचार धाराओं को नास्तिक करार दे दिया गया था लेकिन इनका प्रचार प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। तपस्वी तथा प्रबुद्ध आंदोलनों की उत्पत्ति भगवान महावीर से पर्याप्त पूर्व हो चुकी थी। धार्मिक परिव्राजक संन्यासियों का उत्थान महात्मा बौद्ध से पूर्व हो चुका था। ये वर्गहीन एवं जातिहीन आंदोलन थे।

बौद्ध शास्त्रों में तिरसठ श्रमण संप्रदायों का उल्लेख है। जैनों के सूत्र कृतांग, भगवती सूत्र आदि में अनेक श्रमण दार्शनिक सम्प्रदायों का वर्णन आता है। तीर्थंकर महावीर से 250 वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ का आविर्भाव हुआ। वे प्रकृष्ठ पुण्य के प्रतीक थे। उनने करुणा, दया, चिन्तन तथा परोपकार को भिन्न सूत्रों के रूप में प्रतिपादित किया। इस समय तापस परम्परा का प्रभुत्व था। भगवान महावीर के आविर्भाव के समय श्री पार्श्वनाथ परम्परा थी। श्री महावीर स्वामी के माता-पिता भी पार्श्वनाथपंथी थे।

पार्श्वनाथ चातुर्याम का व्यापक प्रभाव था। भगवान बुद्ध ने इसके साथ समाधि एवं प्रज्ञा का परिवर्द्धन किया। शीतस्कन्ध को बुद्ध धर्म का आधार बनाया।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के युग में श्रमण पंथों के समकालीन धार्मिक महापुरुषों की गणना में पूरण कश्यप, पकुध काच्चायन, अजित केशकम्बल, संजय बेलाट्यिपुत्र, मक्खलि गौशाल, बुद्ध आदि थे। बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में इनकी दार्शनिक विचारधाराओं को स्थान प्राप्त है।

(शेष अगले अंक में)

अजस्त्र आत्मविश्वास से परिपूर्ण गुरुदेवश्री

(स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

'मत्थएण वंदामि'- 'गुरुदेव सुखशाता है न ?'- ऐसे उच्चारण के साथ रतलाम के नीमवाले उपाश्रय में गुरुदेव के अनन्य भक्त श्री हीरालालजी संघवी ने प्रवेश किया। शून्यमनस्क बैठे हुए गुरुदेवश्री ने सिर ऊँचा किया। उन्हें देखते ही श्री हीरालालजी संघवी ने प्रश्न किया- 'क्या हुआ, गुरुदेव ? ऐसी कौनसी स्थिति निर्मित हो गई है कि आप इस तरह से विराजमान हैं ?'

उत्तर देते हुए गुरुदेव ने कहा- 'हीरा' ! गुरुदेव की एक अलभ्य वस्तु आगम विधि रूप स्थापनाचार्य यहाँ से कोई उठा ले गया है। उसी के चिन्तन में बैठा हुआ हूँ।'

हीरालालजी ने पूछा- 'ऐसा क्या था ? गुरुदेव ! उसमें, कि आज उसके लिए आप इतनी बेचैनी से चिंतन कर रहे हैं ?'

गुरुदेव ने कहा- 'हीरा ! ये स्थापनाचार्यजी, गुरुदेवश्री ने अपने हाथों से निर्मित किये थे एवं विविध मंत्राक्षर जाप से पवित्र बनाये थे। पूज्य उपाध्याय श्री मोहन विजयजी महाराज के परमाशीष से ये मुझे प्राप्त हुए थे। इन्हें प्राप्त कर मैंने अलौकिक विलक्षणता एवं प्रभावकता की अनुभूति की थी।'

तत्काल श्री हीरालालजी खड़े हो गये। गुरुदेवश्री से कहने लगे- 'गुरुदेव ! परम कृपालु गुरुदेव की प्रभावक कृपा से मैं इसका पता लगाकर शीघ्र ही लौटता हूँ। जब तक

स्थापनाजी नहीं मिलेंगे, मैं उपाश्रय में वापिस लौटकर नहीं आऊँ गा।' गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने कहा कि- 'हीरा ! तुझे अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त होगी। शीघ्रता कर।' निकट ही बिराजमान बड़े गुरुदेव की तस्वीर को भावपूर्वक नमस्कार करके श्री हीरालालजी संघवी उपाश्रय से बाहर निकलते हैं। उपाश्रय के आसपास निवास कर रहे पड़ौसियों से जानकारी प्राप्त करते हैं। पूछते हैं कि विगत एक घंटे में किसी अनजान व्यक्ति को उपाश्रय में क्या आते-जाते देखा है? पड़ौसियों ने सामान्यतः एक व्यक्ति को उपाश्रय से निकलते देखे जाने का संकेत दिया। उन दिनों श्री हीरालालजी संघवी की रतलाम रिसायत में अच्छी पैठ थी। वे तुरंत वहाँ से निकले, पुलिस चौकी से दो जवानों को साथ लिया एवं सांकेतिक स्थान पर पहुँचे। वहाँ शंकास्पद व्यक्ति अपना काम कर रहा था। पुलिसवालों ने उससे कठोरता पूर्वक पूछताछ की। अंततः उसने अपने मुँह से कबूल किया कि वह उपाश्रय गया था एवं उसने एक पोटली उठायी थी। उस व्यक्ति को साथ लेकर पुलिस जवान तथा श्री हीरालालजी उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पर पोटली को भूमि में गाड़ दिया गया था। वहाँ जमीन खोद कर वह पोटली बाहर निकाली गयी। पोटली को हीरालालजी संघवी को सौंप दी गयी। पुलिस जवानों ने कठोर शब्दों में भविष्य में इस प्रकार की हीन हरकत नहीं करने की कड़ी चेतावनी दी। श्री हीरालालजी ने उस व्यक्ति से पूछा कि 'यह हीन कृत्य तूने क्यों किया?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया- 'मैं प्रतिदिन उपाश्रय के पास से निकलता हूँ, तब महाराज साहब इस पोटली को खोलते एवं पुनः सुव्यवस्थित बाँधते दिखाई देते हैं। मैं प्रतिदिन सोचता कि, इसमें ऐसा क्या माल है, जिसे देखने ये प्रतिदिन खोलते हैं तथा सँभाल कर वापस बाँध देते हैं। मैं समझा कि महाराज के भक्त लोग बड़े धनवान हैं, शायद ये इनको खूब पैसा देते हैं और महाराज प्रतिदिन खोलकर उसे सँभालते हैं। फिर अवेर कर बाँध देते हैं।

मेरे दिल में आया कि क्यों नहीं एक बार इस पोटली को उठाकर ले जाऊँ, खूब पैसे मिलेंगे तथा मेरी दरिद्र अवस्था दूर हो जायेगी। आज जब मैं वहाँ से गुजरा, उपाश्रय में किसी को भी नहीं देख कर धीरे से अन्दर गया तथा इस पोटली को उठा लाया। घर आने के बाद मैंने इसे खोला। इसमें से मेरी कल्पना का कुछ नहीं मिला। मैंने इसे शिवबाग नाले के खड्डे में गाड़ दिया। मुझे विश्वास नहीं था कि आप इतनी जल्दी मेरी खबर ले लेंगे। मेरी भूल हो गयी, आप क्षमा कर दीजिये। मैं महाराजश्री का बहुत बड़ा अपराधी हूँ।' श्री हीरालालजी संघवी ने जेब से दस रुपये का नोट निकालकर उसके हाथ में थमाते हुए कहा- 'आइन्दा, ऐसा अनुचित कार्य कदापि नहीं करना। ' उनने उसे उसके घर पहुँचा दिया तथा वे एक घंटे में पुनः 'निस्सीही' कहते हुए उपाश्रय में पहुँचे। तब तक गुरुदेवश्री अपने चिंतन में ही लीन थे। जैसे ही उनके आने की आहट सुनी, गुरुदेवश्री ने सहसा अपनी दृष्टि ऊँची उठाकर देखा और कहा- 'हीरा, आ गया तू ! स्थापनाचार्यजी लाया।' श्री हीरालालजी ने कहा कि गुरुदेव का आशीर्वाद एवं आपकी वाणी को आत्मसात करते हुए निकला था। बहुत ही अल्प समय में मैंने अपनी प्रतिज्ञा को सफल बना लिया। उनने अपने लम्बे कोट की जेब में रखे हुए स्थापनाचार्यजी को बाहर निकाला और गुरुदेवश्री के हाथों में थमा दिया। गुरुदेवश्री ने स्थापनाचार्यजी अपने हाथ में लेकर दोनों हाथ श्री हीरालालजी के सिर पर रखते हुए कहा- 'हीरा ! तू जहाँ जाएगा, तेरी विजय ही विजय होगी।' हीरालालजी ने कहा- 'आज गुरुदेव ! आपके शब्दों ने मुझे सम्बल दिया था एवं आपके आशीर्वचनों ने मेरी शक्ति को जागृत किया था। इसी के परिणाम स्वरूप मैं इस कार्य में सफलता प्राप्त कर सका हूँ।' कहते-कहते हीरालालजी ने गुरुदेव के चरणों में अपना सिर टिका दिया तथा अपने संकल्प की सफलता की अनुभूति की। संघवी हीरालालजी जब तक जीये, तब तक गुरु के कृपापात्र बने रहे। उनने अपने जीवन में गुरु की

वचनसिद्धि को सदैव के लिए अपने स्मृति पटल पर अंकित कर लिया। यह घटना विक्रम संवत् 1978 से 1980 के मध्य की है।

गुढा बालोतरा में चातुर्मास निश्चित हो चुका था। राजस्थान के ही ग्राम सियाणा से विहार कर गुढा की ओर विक्रम संवत् 2007 में गुरुदेवश्री अपने मुनिमंडल के साथ विहाररत थे। प्रथम मुकाम 'मायलावास' ग्राम में था। सम्पूर्ण ग्रामीण अंचल था। सड़क अथवा प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं थी। रात्रि में प्रतिक्रमण सम्पन्न हुआ। आकाश में बादल घुमड़-घुमड़ कर आने लगे। अपनी श्याम घटाओं में घुमड़ रहे बादलों में थोड़ी देर में गड़गड़ाहट शुरू हो गयी। बिजली की चमक ने सभी को चकाचौंध की स्थिति का दर्शन करवाना प्रारंभ कर दिया। मुनिमंडल को गुरुदेवश्री का निर्देश प्राप्त हुआ 'सभी अपने उपकरणों को सँभालकर सुव्यवस्थित कर लें।' इतनी देर में बादल फूट पड़े। जोरों से पानी बरसने लगा। पानी बरसने से पानी के नाले बहने लगे एवं थोड़ी देर में पानी रुक गया। साधु लोगों ने अपने उपकरण व्यवस्थित करने की शुरूआत की। साथ में अवस्थित गुरुभक्तों ने लालटेन की रोशनी से रोशनी दिखायी। वे देखते हैं कि चारों ओर चींटियों की भाँति बिच्छू ही बिच्छू चलते दिखाई दे रहे हैं। मुनिगण गुरुदेव से कहते हैं- 'गुरुदेव ! जिधर नजर डालें, बिच्छू ही बिच्छू हैं।' गुरुदेव ने कहा- 'घबराओं मत ! बिच्छू अपने मार्ग पर चले जायेंगे। तुम सभी नमस्कार मंत्र का स्मरण करो।' पूरा मुनिमंडल नवकार मंत्र के स्मरण में लीन हो जाता है। देखते ही देखते बिच्छू गायब हो जाते हैं। बिच्छुओं के अदृश्य हो जाने पर आधी रात के बाद समस्त मुनिगण विश्राम कर पाते हैं। सभी प्रातः उठते हैं। अपनी दैनन्दिनी की क्रियाएँ करते हैं। बाद में रात्रि में उत्पन्न हुए असंख्य बिच्छुओं की चर्चा करते हैं। गुरुदेव से पूछते है- 'गुरुदेव ! यह क्या उपद्रव था।' गुरुदेव ने एक टूक जवाब देते हुए फरमा दिया- 'भाई ! यही तो उत्पत्ति तथा विलय की सांसारिक स्थिति का दर्शन है।'

मुनिराज गुरुदेव के शब्दों में एवं नमस्कार महामंत्र के अनन्य

प्रभाव में सिक्त हो गुरुदेव के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं। गुरुदेवश्री के आत्म विश्वास और अडिग स्थिरता की स्थिति का बार-बार अभिनंदन करते हैं।

तथ्य मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले के नगर खाचरौद का है। विक्रम संवत् 2013 में पूज्य गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का चातुर्मास इस नगर में था। श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष श्री गगलभाई हालचंद संघवी (अहमदाबाद) वंदनार्थ आये। उस समय गुरुदेव की उम्र पचहत्तर वर्ष पार कर रही थी। इस उम्र में भी कलम हाथ से अलग होने के लिये तैयार नहीं थी। गुरुदेवश्री से श्री गगलभाई ने प्रश्न किया- 'गुरुदेव ! इतनी अस्वस्थावस्था में भी आपश्री का लेखन कार्य निरंतर जारी है।' गुरुदेव ने उत्तर दिया- 'गगल भाई ! शरीर में जब तक चेतना रहेगी, मेरा यह क्रम चलता रहेगा। मेरे परोपकारी गुरुदेव ने मुझे जो आदेश दिया था, तद्नुरूप मैं इस कलम से अनवरत लिख रहा हूँ।' गुरुदेव की लेखनी इस चर्चा के दौरान भी चल रही थी। श्री गगलभाई ने पूछा- 'अभी आप क्या लिख रहे हैं, गुरुदेव?' गुरुदेव ने उत्तर दिया- 'इन लोगों को बहुत सारा लिखकर दे दिया है। फिर भी अंधानुकरण एवं कूपमंडूक वृत्ति के लोग गुरुदेव तथा त्रिस्तुतिक सिद्धान्त के विषय में अकारण आक्षेप कर रहे हैं। इन आक्षेपों का उचित प्रतिकार करना मेरा कर्त्तव्य है। असत्यप्रलाप करने वाले लोगों को यदि समुचित जवाब नहीं दिया जाता है, तो ये कूकर की भाँति भौंकते रहते हैं।' श्री गगलभाई गुरुदेव की बात को पूरे ध्यान से सुनकर बोले- 'भविष्य में भी सिद्धान्त संरक्षण का कार्य अविरत चलता रहे, ऐसा आशीर्वाद आप हमको भी दीजिये।' इस चर्चा के समय मैं उपस्थित था। मैंने देखा गुरुदेवश्री ने श्री गगलभाई की बात को सुना। उन्होंने पुनः स्वकलम को उठाकर लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया। कलम उसी गति से दौड़ने लगी। गुरुदेव अपने विचारों को लिपिबद्ध करने में लीन हो गये।

विक्रम संवत् 2016 में पूज्य ग्रंथनायक स्व. श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज सा. का चातुर्मास श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर था। वे लगातार अस्वस्थ स्थिति में थे। उनकी शारीरिक शक्तियाँ क्षीण हो चुकी थीं। उठना-बैठना कष्टप्रद हो गया था। चलना-फिरना असंभव था। पूज्य मुनिमंडल पूरे मनोयोग से उनकी शुश्रुषा कर रहा था। उनके शारीरिक परीक्षण के लिए रतलाम से डॉ. सावंत सदलबल आये। उनने अपने उपकरणों का उपयोग कर पूज्य ग्रंथनायक के शरीर का पूरी तरह परीक्षण किया। बाहर आकर तब पूज्य मुनिराजश्री विद्याविजयजी महाराज से निराशा के स्वर में कहा कि- 'जो सेवा करना हो पूरी श्रद्धा से कर लीजिये। अब पूज्य महाराजश्री का समय अधिक शेष नहीं है। वे निकट भविष्य में ही चिर बिदा ले सकते हैं।' उसी समय बाली निवासी श्री उदयभाणजी प्रेमचंदजी द्वारा परम मंगलकारी उपधान तप की श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आराधना अपनी ओर से करवाने की भावना प्रबल हुई। वे भी वहीं अपनी प्रार्थना लेकर उपस्थित थे। पूज्य गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने डॉक्टर के जाने के पश्चात् पूज्य (तब) मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज को बुलाया तथा कहा कि 'विद्या ! इधर आ । डॉक्टर की बात पर भरोसा मत करना। मैं इतना शीघ्र नहीं जा रहा हूँ। तुम तो उपधान तप की रजा दे दो। सब आनन्द से सम्पन्न होगा।'

पूज्य मुनिराज श्री विद्याचंद्र सूरीश्वरजी म. ने गुरुदेव की आज्ञा से श्री उदयभाणजी प्रेमचंदजी को उपधान तप की स्वीकृति दे दी। तैयारियाँ हुई, पत्रिकाएँ प्रेषित की गई, पूज्य ग्रंथनायक के पवित्र सान्निध्य में उपधानतप सानंद सम्पन्न हो गया। कोई ढाई सौ आराधकों ने भाग लिया। उपधान तप सम्पन्न होने के चौबीस दिन बाद ग्रंथ नायक ने 'अरिहंत स्मरण' करते हुए चिर बिदाई ली। ऐसे भविष्यवेता थे पूज्य गुरुदेव। ■■■

श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी का साहित्यिक अवदान

राष्ट्रसंत श्रीमद् जयंतसेनसूरिशिष्य जैनाचार्य
श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी महाराज

भारत की पवित्र माटी का सपूत, जिसने बहुरत्ना वसुन्धरा के सुशोभन को सार्थक किया। यह रत्न वास्तव में रत्न ही बना। इस रत्न की ज्योति ने समग्र विश्व में गुरुप्रसादी पाकर ज्ञान का जो प्रकाश दिया वह अजोड़ है, अलभ्य है। जो प्रकाशपुंज प्रसारित किया उसने भारत ही नहीं विदेशों में भी अपने गुरु के नाम को उज्ज्वल किया है। विश्वपूज्य के पद के विश्व में फैलाने का भागीरथ कार्य करने वाले ये विश्वपूज्य गुरुदेव के ही परम विनयी शिष्य, सपूत से क्या कम थे ? श्री सुधर्मास्वामी की परम्परा में 68 वें पाट के कलिकाल कल्पवेली के समान शासन के सितारा, जिनने विश्वपूज्य पद को पाया है, ऐसे प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरुदेव ने श्री अभिधान राजेन्द्र कोश जैसे महान ग्रंथ की रचना की। लेखनकार्य की भगीरथता का परिश्रम किया, किन्तु आयुष्य की अंतिम घड़ी निकट आयी जानकर संघ ने आपश्री से प्रश्न किया- 'गुरुदेव ! संस्कृत, प्राकृत भाग की भाषा के इतने बड़े खजाने का क्या होगा ?' तब गुरुदेव ने अपने शिष्यों में से मुनिराज श्री दीपविजयजी म.सा. एवं मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी म.सा. की ओर संकेत कर कहा कि इस खजाने को बाहर निकालकर इसका प्रकाशन करवाकर न केवल भारतवर्ष में वरन् सम्पूर्ण विश्व में फैलाने का कार्य ये दोनों करेंगे। जैन शासन के दो दैदीप्यमान रत्न ने गुरुदेव के महान ग्रंथरत्न के अवशिष्ट कार्य का उत्तरदायित्व स्वीकार कर उसे पूर्ण करने के लिए दत्तचित्त होकर जुट गये। उनका कठोर परिश्रम उस समय मूर्तरूप ग्रहण कर पाया, जब उन्होंने इस कोश रत्न का सम्पादन, संशोधन कर प्रकाशित करवाकर विश्व के बड़े-बड़े ग्रंथालयों में इसकी प्रतियों को पहुँचाया। उच्च स्थान पर पहुंचाया। इस कोशरत्न ने विश्व

में उच्च स्थान प्राप्त किया अर्थात् इसके लेखन की विश्व के विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की और गुरुदेव के पावन चरणों में अपनी वंदना करते हुए विद्वानों ने अपना शीश झुकाया। इसी कारण श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. विश्वपूज्य कहलाये। गुरुदेव को विश्वपूज्य की ख्याति प्राप्त कराने में उनके सपूत शिष्यरत्न श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म. का योगदान अविस्मरणीय है। मैं अपनी लेखनी से उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिखने का दुःसाहस कर रहा हूँ।

शूरवीरों की भूमि राजस्थान, जहाँ वीर माताओं ने वीर पुत्रों को जन्म देकर धरती को भी वीरत्व का रूप प्रदान किया, उसकी गौरव गरिमा में वृद्धि की। वीरत्व की सौरभमय वह पावन धरती धौलपुर (धवलपुर) के नाम से विख्यात है। उसी पुण्य धरा पर धर्मनिष्ठ श्रेष्ठिवर्य श्रीमान् ब्रजलालजी अपनी पत्नी पतिपरायणा, धर्मपरायणा श्रीमती चम्पाकुँवर तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ निवास करते थे। वे दिगम्बर जैन मतावलम्बी थे। धौलपुर में सुखपूर्वक दिन व्यतीत करते हुए एक दिन माता चम्पाकुँवर ने एक चमकते-दमकते पुत्ररत्न को जन्म दिया। पुत्ररत्न की मुखकांति द्वितीया के चंद्र की भाँति थी। विकसित कला के दर्शनकर परिजनों का हृदय हर्ष विभोर हो रहा था। पुत्र के पाँव पालने में ही दिखाई देते हैं। इसके अनुरूप पुत्ररत्न को नाम दिया 'रामरत्न'। वास्तव में वे राम के ही रत्न थे। बाल्यकाल में ही कला कौशल में पैर उठते देखकर उन्हें व्यावहारिक, धार्मिक संस्कार केन्द्र पाठशाला में प्रवेश करवाया। वे तीक्ष्ण मेधाशक्ति के चलते-फिरते कोश थे। स्वयं तो रत्न जैसे थे, आगे जुड़ गया राम, तो फिर कमी किस बात की रही ? रामरत्न बुद्धि निधान अल्पायु में ही व्यावहारिक और धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर प्रथम स्थान प्राप्त कर गये। केवल दो वर्ष में ही मंगलपाठ, तत्वार्थ सूत्र रत्नकरंड श्रावकाचार, आलाप पद्धति, द्रव्य संग्रह, देवधर्म परीक्षा, नित्यस्मरण का पाठ का सार्थ अध्ययन करने के साथ ही भक्तामर, मंत्राधिराज, कल्याण मंदिर आदि स्तोत्र भी कंठस्थ कर लिये। अपने पुत्र को शिक्षा क्षेत्र में बाल्यावस्था से ही उत्साही देखकर माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न थे। बारह वर्ष की आयु में प्रवेश किया था। काल को परिवार का सुख स्वीकार नहीं था। वह इसे फलता- फूलता देख नहीं पा रहा था। विधाता क्या चाहता है ? कोई भी

जान नहीं पाता है। पिताश्री ब्रजलालजी को काल ने असमय ही अपना ग्रास बना लिया। माताजी पूर्व में ही काल कवलित हो चुकी थी। पिताश्री के स्नेहाधीन रामरत्न अपनी कला को विकसित कर रहा था कि यह वज्रपात हो गया। माता की ममता तो पहले ही दूर हो गयी थी, अब पिता के स्नेह से भी वंचित हो गये। वियोग के सागर में हिलोरे लेने लगे। ऐसे में परमात्मा की वाणी का प्रकाश हृदय पटल पर गुंजारव करने लगा और रामरत्न को स्थिर कर उसके चित्त को विचलित नहीं होने दिया। मनोबल दृढ होने लगा, आत्मकमल विकसित होने लगा, संसार की असारता के दर्शन करने लगे। माता-पिता के स्वर्गगमन के पश्चात् मामा के आश्रय में रहना पड़ा जो ममता और स्नेह जन्मदात्री माँ और पिता के सान्निध्य में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहीं न कहीं भेद चिह्न मिल जाते हैं। मामा के यहाँ आपको वैसा प्यार, स्नेह, ममता नहीं मिल पाये। रामरत्न ने धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते समय अपने आपको संस्कारित बनाया था। वे वियोगजनित घनघोर घटा से घबराये नहीं और सिंह की भाँति आत्मबली जीवन जीने की खोज में चिंतन की रश्मि को प्रभावित करने वाली जिनवाणी की राह के पथिक बनने का निर्णय कर उसकी खोज में निकल पड़े। जो जागृत आत्मा निज की खोज में चल पड़ता है, वह निज स्वरूप को अवश्य ही प्राप्त कर लेता है। ऐसे पुण्यवानों के लिए उनकी मंजिल दूर नहीं होती है। चले थे रामरत्न जिनस्वरूप का प्रकाश प्रकट करने वाले किसी दाता, दिलावर योगी महात्मा, जिनवाणी के सच्चे मार्गदृष्टा की खोज में। एकलव्य की भाँति एक ही लक्ष्य को लेकर निकल पड़े। वे हेमचंद्राचार्य की भाँति निकल पड़े। हेमचंद्राचार्य सरस्वती को पाने के लिए निकले थे। अपने प्रथम मुकाम पर पहुँचे, वहाँ सरस्वती स्वयं चलकर उनके सामने आयी और कहा- 'मुनिप्रवर ! कहाँ जा रहे हो ? अब तुम्हें आगे जाने की आवश्यकता नहीं है। जिसे साधने के लिए आप आगे जा रहे हैं, वह मैं स्वयं आपके सामने आ गई हूँ, बताईये क्या आज्ञा है ? मैं तैयार हूँ।' उसी प्रकार रामरत्न भी अपने जीवनदर्शन की ज्योति को प्रज्ज्वलित करने वाले परमातारक वीतराग पथगामी की खोज में निकले थे। भोपाल मामा के घर से मक्सी आए। यहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन कर महिदपुर आये, वहाँ से उज्जैन

सिंहस्थ का मेला देखने जाने वाले थे, किन्तु जीवन बाग को जिनवाणी से सिंचित करने वाले पंचमकाल के कल्पतरू कलिकाल सर्वज्ञ श्री अभिधान राजेन्द्रकोश के रचयिता प्रातः स्मरणीय विश्व पूज्य प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. इस समय महिदपुर में विराजमान थे। अकस्मात् रामरत्न को उनके दर्शन हो गये और उनके दर्शन करते श्री रामरत्न का हृदय सरिता के शीतल जल की लहरों में अवगाहन करते हुए प्रसन्नता से अभिभूत हो गया। रामरत्नजी पहुँच गये, विश्वपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पावन शरण में और वहाँ आत्मचिंतन में लीन हो गये। गुरुदेव से रामरत्नजी की भेंटवार्ता हुई। इस भेंटवार्ता में तीक्ष्ण बुद्धि वाले रामरत्न ने जिनवाणी से परिपूरित वचनों में अध्यात्म भाव से भरी बातें कर जीवन का सच्चा भाव गुरुदेव के सम्मुख प्रकट किया। अपने इन भावों के द्वारा रामरत्न ने गुरुदेव के हृदय में अपना स्थान बना लिया। जिसकी खोज में वे निकले थे वह दिव्य विभूति उन्हें मिल गयी। अब आगे जाने का कहीं प्रश्न ही न था ? उस ज्योति में उन्होंने अपने जीवन को अर्पित कर दिया। गुरु शरण स्वीकार कर ली और वीतराग परमात्मा के पथ पर चलने की उत्कृष्ट भावना के साथ गुरुदेवश्री के शिष्य बनने का परम सौभाग्य प्राप्त कर लिया। गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने भी योग्य परीक्षा का इस अनमोल रत्न की प्रतिभा को पहचान कर भागवती प्रव्रज्या का संवाहक जान लिया और उसके उज्ज्वल भविष्य को जानकर संयमपथ का पथिक बना दिया। वह घड़ी वह दिन वह समय गुरुदेव को अमूल्य रत्न प्राप्ति का दिन था विक्रम संवत् 1954 आषाढ़ कृ. 2 सोमवार स्थान खाचरौद जिला उज्जैन। मंगल मुहूर्त्त में इस दिन गुरुदेव आचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने रामरत्न को दीक्षाव्रत प्रदान कर मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी म.सा. से नामांकित किया। जिसके हृदय में आत्मकल्याण की सरिता तीव्र वेग से प्रवाहित होती हो, वह चट्टानों से पर्वतों की खाइयों को पार करते-करते महासमुद्र तक पहुँचने का मार्ग सरलता से पार लेता है। उसी प्रकार ज्ञानराशि के विपुल खजाने को पाने के लिए महान गंभीर ज्ञाननिधि, करुणा निधि, अनेकानेक गुणों से भरपूर सागरसम विश्वपूज्य गुरुदेव की परम पावन शरण मिली। उत्कृष्ट त्याग पथगामी गुरुदेव

का पावन सान्निध्य मिला। फिर स्वयं की जिज्ञासा भी प्रबल थी। ज्ञानसागर में समा जाने की चाह रखने वाला भव्य प्राणी समा जाने की चाह रखने वाला भव्य प्राणी उसे प्राप्त कर ही लेता है। गुरुदेव की शरण में, सेवा में रहते हुए उत्कृष्ट चारित्र का पालन करते हुए ज्ञानार्जन की प्राप्ति में त्रिकरण योग से संलग्न बने और गुरुदेव का ऐसा अंतर आशीर्वाद पाया कि अल्पकाल में ही जैनागमों के सारगर्भित अर्थ- भावार्थ सह उच्च कोटि के ज्ञाता बन गये और गुरुदेव के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करने में विश्वपूज्य के पश्चात् प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया। गुरुदेव के सिद्धांतों को सुदृढ़ करने में सुशिष्य के रूप में दृढ़ प्रहरी की भांति दक्ष बनकर साहित्य सृजन के अमूल्य कार्य में भी लग गये।

आपश्री ने अपने जीवन काल में जैनागम प्रमाणित साहित्य का सृजन किया और लगभग साठ छोटे बड़े ग्रंथों की रचना कर हिन्दी साहित्य के भंडार की अभिवृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया। आपश्री ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में ग्रंथों की रचना की। अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन कर उनका प्रकाशन भी करवाया। ऐसे सम्पादित ग्रंथों में ग्रंथराज श्री अभिधान राजेन्द्र कोष का नाम उल्लेखनीय है। यह ग्रंथराज दस हजार पृष्ठों का कालजयी ग्रंथरत्न है। विश्व के मान्य विद्वानों ने इस ग्रंथरत्न की महत्ता को स्वीकार करते हुए इसे अपने शीश पर लगाया। ऐसे महान कोश रत्न को गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. तो लिपिबद्ध कर छोड़ गए थे। अपना कर्त्तव्य मानकर आपश्री ने इसका प्रकाशन करवाकर समूचे विश्व में पहुँचाया।

एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि आपको इतिहास से काफी लगाव रहा।

इनके अतिरिक्त आपश्री ने संस्कृत में कुछ चरित्र ग्रंथों की भी रचना की है। जैसे अघटकुमार चरितम् रत्नसारचरितम्, हरिबलधीवचरित्रम्, श्री जगडूशाह चरित्रम्, श्री कयवन्ना चरित्रम् । इन संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद होता है तो आज ये उपयोगी हो सकते हैं।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि पूज्यपाद आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. जहाँ एक ओर एक महान साधक और समाज सुधारक तथा कुशल प्रवचनकार थे, वहाँ वे हिन्दी साहित्य के भी महान विद्वान थे और विद्वानों का सम्मान करने वाले थे।

एक जीवन गाथा
विजय यतीन्द्रसूरिजी

(साध्वी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा.)

जन्म : विक्रम संवत् 1940, कार्तिक शुक्ला 2, देहावसान : वि.सं. 2017

पौष शुक्ल 31 आचार्य विजय यतीन्द्रसूरिजी महाप्रभावक पुरुष थे। वे विश्व पूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी महाराज के अनन्यतम शिष्य थे और उन्हीं के चतुर्थ पट्टधर भी। उन्होंने अपने जीवनकाल में जो शासन सेवा की तथा जो साहित्य निर्माण किया उससे त्रिस्तुतिक समाज का हर श्रावक प्रभावित है। उनका जन्म धौलपुर नगर में हुआ था। उनके पिताश्री बृजलालजी और माता चंपाकुंवरजी दोनों बड़े धर्म परायण थे और दिगंबर संप्रदाय के अनुयायी थे। उनका जन्म नाम रामरत्न था। जब रामरत्न की उम्र सात वर्ष की हुई, तब उनके पिता धौलपुर का परित्याग कर भोपाल में बसे। वहाँ उन्होंने अपने पुत्र रामरत्न की शिक्षा-दीक्षा के लिए प्रयत्न किये। उन्होंने उसे दिगंबर जैन पाठशाला में भर्ती करवाया और खुद भी नई-नई बातें सिखाने लगे। केवल दो साल में ही रामरत्न ने पंच मंगल पाठ, तत्वार्थ सूत्र, रत्नकरंड श्रावकाचार, आलाप पद्धति, द्रव्यसंग्रह, देवधर्म परीक्षा और नित्यस्मरण पाठ का सार्थ अध्ययन कर लिया और इन्हें कंठस्थ भी कर लिया। इसी से उनकी कुशाग्रबुद्धि का पता चलता है। इसके अलावा उन्होंने भक्तामर, मंत्राधिराज, कल्याण मंदिर, विषापहार आदि स्तोत्र भी कंठस्थ कर लिए थे। ऐसे सुयोग्य और विद्वान पुत्र को पाकर श्री बृजलालजी बड़े प्रसन्न थे। अब रामरत्न की उम्र बारह वर्ष की हो गई थी। इस अल्पायु में ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। माता तो पहले ही चल बसी थी। माता-पिता की मृत्यु के बाद रामरत्न अपने मामा के घर रहने लगे। मामा-मामी उसे वह प्यार न दे सके जो माता-पिता दे सकते हैं। अतः मामा के साथ अनबन हो जाने के बाद (करण) उन्होंने मामा का घर हमेशा के लिए छोड़ दिया और वे नौकरी करके अपना गुजारा करने लगे।

एक बार वे सिंहस्थ मेला देखने उज्जैन गए , मेला देखकर उनने श्रीमक्सी पार्श्वनाथ तीर्थ की यात्रा की और वहाँ से आकर महेन्द्रपुर नगर में मुकाम किया। महेन्द्रपुर में उस समय श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज अपने शिष्य मंडल सहित विराजमान थे। रामरत्न आचार्यश्री जी के दर्शन से प्रभावित हुए और उन्होंने सूरिजी महाराज के साथ रहने का निश्चय कर लिया। विहार में भी उनके साथ रहने लगे। उनके संस्कारी हृदय पर विहारकाल में श्रीमद् के क्रियाकांड का और उनकी दैनिक दिनचर्या का अद्भुत एवं अमिट प्रभाव पड़ा। वे अब वैराग्यरस में रंग गए। दीक्षा लेने की भावना उनके हृदय में प्रबल हो उठी और एक दिन उन्होंने गुरु महाराज से अपने को शिष्य रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की। रामरत्न की उम्र अब चौदह (14) वर्ष की हो गई थी। उनकी दृढ़निष्ठा देखकर गुरु महाराज ने खाचरौद नगर में संवत् 1954 आषाढ़ कृष्णा 2 को उन्हें दीक्षित किया और उनका नाम मुनि यतीन्द्र विजय नाम रखा। मुनिश्री यतीन्द्र विजयजी सुसंस्कारी एवं सुसंस्कृत तो थे ही फिर भाग्य से ऐसे प्रखर महाविद्वान एवं शुद्ध साध्वाचार के पालक महातपस्वी विलक्षण बुद्धिशाली गुरु की निश्रा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर क्या कमी रह सकती है ? बस आप साध्वाचार का पालन करने लगे। दस वर्ष तक आप गुरु महाराज के साथ रहे। इन दस वर्षों में आपने गुरु महाराज के साथ मेवाड़, मारवाड़, मालवा,निमाड़ और गुजरात आदि प्रदेशों का भ्रमण किया। छोटे- बड़े अनेक प्रसिद्ध-अप्रसिद्द स्थानों में विहार किया। गुरु महाराज के कर कमलों से की गई अनेक बड़ी-बड़ी प्रतिष्ठाओं में भाग लिया तथा प्रतिष्ठाएँ करवाने की क्षमता प्राप्त की। अनेक ग्राम-नगरों के श्री संघों में पड़े विवाद को गुरु महाराज के तेज प्रताप ने नष्ट होते देखा और शांति स्थापित होते देखी। गुरु महाराज ने अनेक ज्ञान-भण्डारों की स्थापना की। उद्यापन करवाए और प्राचीन एवं प्रसिद्ध जिनालयों के जीर्णोद्धार करवाए, गुरुदेव के इस प्रकार के धर्म कार्यों से आपको सर्वतोमुखी अनुभव और ज्ञान प्राप्त हुआ। गुरुदेव के साथ आपने मण्डपाचल श्रीमक्सीजी श्री आबूजी, श्री कोरटाजी आदि तीर्थों की और गोड़वाड़ पंचतीर्थों की भी यात्रा की। इस प्रकार इन दस वर्षों में गुरुदेव के साथ रहकर काफी अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया।

आप जिज्ञासु, विनयी, सुसंस्कृत, प्रतिभासम्पन्न परिश्रमी और गुरु आज्ञा पालक थे। अतः गुरु महाराज की निश्रा में बराबर उनके स्वर्गारोहण काल पर्यन्त बने रहे। गुरुदेव का देहावसान संवत् 1963 पोष शुक्ला 6 को राजगढ़ में हुआ था। देहावसान के पहले ही मुनिश्री दीप विजयजी और मुनिश्री यतीन्द्र विजयजी ने अभिधान राजेन्द्र कोष के प्रकाशन का भार प्रतिज्ञा पूर्वक उठा लिया था। अभिधान राजेन्द्र कोष सात भागों में विभाजित है और उसके कुल पृष्ठ दस हजार से भी ज्यादा हैं। इस कोष में प्रथम प्राकृत शब्द उसके संस्कृत रूप के साथ दिए हैं। और वाद में उनके लिंग और व्युत्पत्ति दिए गए हैं और उनके तमाम अर्थ सप्रयोग आधार, अध्ययन तथा उद्देश्यों के अंकन सहित आगमों के ग्रंथागारों के उदाहरण सहित दिए हैं तथा व्याख्या भी बड़ी कुशलता एवं योग्यतापूर्वक दी गई है। यह ग्रंथ एक प्रकार से जैन विश्वकोष ही है ऐसे महाकोष का लेखन जितना कठिन था उतना ही कठिन उसका संपादन और प्रकाशन भी था। इस ग्रंथ को सम्पादित और प्रकाशित कर मुनिश्री दीपविजयजी और मुनिश्री यतीन्द्रविजयजी ने अपनी तत्परतापूर्ण कुशलता और सुयोग्य संपादकत्व का भी परिचय दिया है।

गुणानुराग कुलक का विवेचन, यतीन्द्र प्रवचन, समाधान प्रदीप, साधु प्रतिक्रमण सूत्र, साध्वी व्याख्यान समीक्षा, जगडुशाह चरित्रम्, कयवन्ना चरित्रम्, चंपकमाला चरित्रम्, अघट कुमार चरित्र आदि साहित्य गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री के मैंने पढ़े खूब आनंद का अनुभव हुआ। इस अर्धशताब्दी महोत्सव पर गुरुदेव की आत्मा जहाँ बिराजमान हो वहाँ से इस साध्वी वृंद एवं श्रीसंघ पर सदा कृपा बरसाते रहें। इसी अभिलाषा से।

■■■

रजत रश्मियां

2100 /- श्री राजेन्द्र परिणय रिसोर्ट के संचालक मदनलालजी मोतीलालजी चपरोत द्वारा श्रीमती कमलाबाई चपरोत पति श्री पारसमलजी चपरोत की स्मृति में शाश्वत धर्म को सहायतार्थ प्रदान किये गये।

मौन एकादशी

मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी 8 दिसम्बर 2019

(श्री छगनलाल भुगड़ी)

भारतीय संस्कृति में मौन का विशेष महत्व है । इसे शक्ति -संचय का माध्यम माना जाता हैं। इसी कारण भारतीय संस्कृति में मागसर सुदी 11 को मौन एकादशी पर्व के रूप में मनाया जाता है। जैन धर्म में भी मौन का बड़ा महत्व है। कई जैन साधु-साध्वी चातुर्मास के दरम्यान नियत अवधि के लिए मौन व्रत धारण करते हैं। इस मौन के पीछे मुख्य कारण शक्ति का संचय करना है। इस संचित शक्ति का उपयोग वे जनहित के कार्यों यथा उपदेश देने, मार्गदर्शन देने में करते हैं। मौनव्रत तपस्या की श्रेणी में आता है, जिससे **अशुभ कर्मों** का क्षय करने में मदद मिलती है।

मौन मानसिक शक्ति का प्रतीक है।

स्वयं से मिलने की कला -

* मौन जीवन की श्रेष्ठतम साधना है, मौन से वचन सिद्धि प्राप्त होती है।
* मौन से राग-द्वेष व ईर्ष्या समाप्त हो जाती है।
* मौन में परम शान्ति और परम शान्ति में ही परम शक्ति है।
* मौन में अन्तः करण की शक्ति को जगाने की अद्‌भुत क्षमता होती है।
* मौन से विकार समाप्त होते है, गलत कार्य रूक जाते हैं और पापों का निरोध हो जाता है।
* मौन से झूठ के द्वार बन्द हो जाते हैं तथा गम्भीरता और धैर्यता के गुण आ जाते हैं।
* मौन आत्मरक्षक है, इससे साधना में सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।
* मौन से अन्तर में और बाहर दोनों ओर शान्ति छा जाती है।
* मौन से मन और बुद्धि में पवित्रता आ जाती है।
* मौन मन का निरोध एवं अन्तकरण को पवित्र करने का श्रेष्ठ तप है।

इसलिए गाँधीजी तथा विनोबा भावे दोनों मौनव्रत के प्रबल समर्थक थे।

सारांश - यदि मनुष्य कम बोलने का अभ्यास कर ले, तो उसके जीवन की आधी मुसीबतें तो ऐसे ही कम हो जाएँ बोलना ऊर्जा का विघटन है और मौन ऊर्जा का संकलन एवं संपादन है।

मित्रों - मौन रहने का अभ्यास करें। जीवन धन्य हो जायेगा। अतः हमें समय - समय पर मौन धारण कर ईश्वर की इस बहुमूल्य सौगात का लाभ उठाना चाहिए एवं अपने जीवन के आचरण में उतारे। ■■■

मौन की परिभाषा

'मौन का शाब्दिक अर्थ है' शांत होना, चुप्पी साधना या चुपचाप रहना, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से मौन का अर्थ कुछ अलग ही प्रतीत होता है। जैसे मौन एक शांतिपूर्वक जीवन जीने का मार्ग है। मौन एक ईश्वरीय चेतना है। मौन के द्वारा हम अपनी आत्मा को परमात्मा से साक्षात्कार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज संसार में कई भाषाओं का ज्ञान बताया जाता है। कई भाषाओं को पढ़ाया जाता है वहीं मौन को सिखाना बहुत बड़ी प्रेरणा देना है। मौन से शांति और साधना का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। मौन के द्वारा कई प्रकार की बुरी भावनाओं से बचा जा सकता है। मौन हमारे अन्तर्मन व आंतरिक भावनाओं को सुदृढ़ बनाता है।

मौन मनुष्य जीवन की पहली सीढ़ी ही नहीं साधना का अंतिम चरण भी है। समाज में सामाजिक रिश्तों को कायम करने के लिए जितनी भूमिका भाषा और वाणी की होती है उतनी ही भूमिका मौन की भी होती है। भाषा और मौन एक-दूसरे के विपरीत हैं। जहाँ मौन असफल होता है, वहाँ भाषा सफल हो जाती है और जहाँ भाषा असफल होती है, वहाँ मौन अपना प्रभाव दिखाता है। भाषा अगर जीवन की सुंदरता है, तो मौन जीवन का हृदय है।

भाषा यदि रिश्तों को बनाती है तो मौन उसे सुरक्षा प्रदान करता है। भाषा की तो सीमा रहती है, परन्तु मौन की कोई सीमा नहीं होती है। वह तो असीम होता है। मानसिक तनावों व अवसादों को समाज से दूर करने के लिए मौन की भूमिका महत्वपूर्ण समझी जाती है। मौन के द्वारा मनुष्य शांति के मार्ग पर अग्रसर होता है जो व्यक्ति शांति से और होशपूर्वक चलना चाहता है, वह व्यक्ति अपने जीवन में मौन को अपनी अंतरात्मा से जोड़ दे। जो परिणाम, सफलताएं मौन से मिल सकती हैं, वह बोलने से प्राप्त नहीं हो सकती है।

मौन के महत्व को हर कोई नहीं समझ सकता है। जिसने मौन के महत्व को समझ लिया उसने अपनी आत्मा का कल्याण हमेशा के लिए कर दिया। महापुरुष या महात्मा लोग वाणी को इतना महत्व नहीं देते जितना मौन को देते हैं। जो भी कर्मकाण्ड,पूजा, प्रार्थना, तपस्या आदि शब्दों से पूरी नहीं हो पाती है। वह मौन के द्वारा पूर्ण होती है। मौन तो अंतरात्मा की आवाज है। कहीं जंगल में जाकर तपस्या करने वाला साधु ऊपर से तो मौन होता

है, लेकिन अन्तर्मन से वह मौन नहीं होता है।

मन के मौन की परीक्षा तो तभी होती है जब व्यक्ति अपमान के शब्द सुनकर भी स्वयं को शांत, प्रसन्नचित व सौम्य रखता है। जब भी हमारे हृदय में मौन का प्रवेश होता है तो हमारा हृदय मन आनंद विभोर हो उठता है। अंदर ही अंदर हृदय नृत्य करता है। जब भी व्यक्ति मौन की तरफ कदम बढ़ाता है तो उसे कई विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन जो सच्चाई और दृढ़ता के साथ मौन के मार्ग पर अपने कदम बढ़ाते हैं उनके लिए मौन वरदान स्वरूप बन जाता है। एक से दूसरे व्यक्ति के साथ संबंध बनाने में भाषा का सहारा लिया जाता है। असंयमित भाषा का उपयोग करने से कई मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है।

महापुरुषों ने कहा है कि- भाषा अथवा बोलने में गुण है तो मौन में उससे भी कई गुना अधिक गुण हैं। बोलने को अगर स्वर्ण की उपमा दी गई है तो मौन रहना अर्थात चुप रहने के रत्नों के समान गुण वाला बताया गया है।

बोलने से इंसानों को पहचान मिलती है, उनसे संबंध स्थापित होते हैं तथा मौन रहने से ईश्वरीय अनुभूति प्राप्त होती है। ईश्वरीय चेतना से सम्पर्क स्थापित होता है। इसलिए कहा गया है कि बिना जरूरत के कभी नहीं बोलना चाहिए किन्तु जब जरूरत हो तो चुप भी नहीं रहना चाहिए।

मुँह से चुपचाप रहना मौन की शुरुआत है, लेकिन मन से मौन रहना ही असली मौन की कसौटी है। जो व्यक्ति समझदार और बुद्धिमान होते हैं, वह अपनी भाषा का सार्थक उपयोग करते हैं। ज्यादा बोलनेवाले लोग मूर्खों की श्रेणी में आते हैं। जहाँ बोलने से कई फायदे होते हैं, लेकिन मौन रहने से उससे भी ज्यादा लाभ होता है। जिनमें लाभ निम्नलिखित हैं :-

* जो मनुष्य मौन रहता है वह किसी की बुराई नहीं कर सकता है।
* जो मनुष्य मौन रहता है वह कभी भी किसी पर क्रोध नहीं करेगा।
* जो मनुष्य मौन रहता है वह कभी भी झूठ नहीं बोलेगा।
* मौन रखने से कभी भी व्यर्थ का झगड़ा नहीं होगा।
* मौन रखने से मन को परम शांति प्राप्त होगी ।
* मौन रखने से हमारी बुद्धि व ज्ञान सुरक्षित रहते हैं।
* अनावश्यक कर्मों का संचय नहीं होगा।
* अपनी अंतरात्मा के बारे में

सोचने के लिए ज्यादा समय मिलेगा।

* ईश्वरीय चेतना को अपने मन में जागृत कर सकेंगे।

* आत्म साक्षात्कार होने लगेगा।

सामान्य भाषा में लाभ बताये गये हैं, लेकिन लाभ तो जितने ढूंढते जाओगे उतने ही नजर आते जायेंगे। अपने जीवन में मौन को कैसे उतारें इसके बारे में जानना बहुत जरूरी है। कुछ चीजें अपने दैनिक जीवन में मौन के साथ जोड़ दें जिनमें प्रमुख भोजन है। भोजन हमेशा मौन रहकर करें अर्थात भोजन करते समय कोई भी घटना घटे उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए, पूर्ण मौन रहना चाहिए। भोजन करने बैठें तब मन ही मन यह संकल्प करें कि मैं जब तक भोजन करूंगा तब तक भाषा का प्रयोग नहीं करूंगा अगर बोल गया तो अगला भोजन का टुकड़ा मुख में नहीं लूंगा। 10 मिनट का यह संकल्प आपके जीवन में बहुत सारे परिवर्तन कर सकता है। इससे आपके व्यवहार में काफी बदलाव आने लगेगा। घर में जो भी और जैसा भी खाना बना है, उसे प्रेमपूर्वक, मौन पूर्वक शांत भाव से स्वीकार कीजिये।

दूसरी बात है कई बार घर का वातावरण अनुकूल नहीं रहता है, ऐसी परिस्थितियां बन जाती हैं जो हमें पसंद नहीं होती हैं। ऐसी परिस्थितियों के समय अपने मन को मौन की स्थिति में ले जायें। बस तभी आप देखते हैं कि सारा माहौल अपने अनुकूल दिखाई देता है। 10 मिनिट का रखा हुआ मौन आपको दुखी होने से बचा सकता है। दस मिनिट के मौन से अगर आपके घर का वातावरण सुखमय हो सकता है तो क्यों न मौन को अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या में शामिल किया जाये।

तीसरी बात यह है कि मौन को अपनी दिनचर्या में एक घंटे का समय दिया जाये अर्थात एक घंटे का मौन हमेशा रखा जाये। उसके लिये कुछ समय को निश्चित कर लें। उस समय के दौरान आप कोई भी धार्मिक, सामाजिक अथवा आर्थिक कार्यक्रम संपादित नहीं करें।

■■■

* काबिल लोग न तो किसी को दबाते हैं और न ही किसी से दबते हैं।
* जमाना भी अजीब है, नाकामयाब लोगों का मजाक उड़ता है और कामयाब लोगों से जलता है।
* कैसी विडंबना है। कुछ लोग जीते-जी मर जाते हैं। और कुछ लोग मरकर भी अमर हो जाते हैं।
* इज्जत किसी आदमी की नहीं, जरूरत ही होती है। जरूरत खत्म तो इज्जत खत्म।

चिन्तन का चित्रांकण

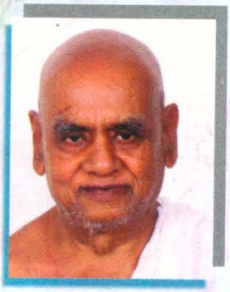

इच्छाएँ बढ़ती ही जाती हैं

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 29.01.2017

अनेक में न रहकर एक में रहे वो सब कुछ है, एक नहीं तो सर्व शून्य है । जन्म लिया तब एक सुख का, कर्मों का कर्जदार भोक्ता एक, मृत्यु शरण पद एक, कर्मों की सजा भी एक को ही पाता है। धर्म आराधना का फल एक से ही पाना है। एक ही अरिहंत वीतराग परमात्मा शरण, गुरुदेव का जीवन सर्वश्रेष्ठ माना है। अनेक में पड़ने वाला अनन्त की यात्रा का प्रवासी बनकर संसार की भ्रमणा में भटकता है, भ्रमणा का अन्त करना है तो एक में समा जाओ।

दिनांक 30.01.2017

गुजरात की कहावत है पकड़े एक, झगड़े बे ! एक है, एकत्व भाव है, एकत्व झरना बह रहा है माने एकत्व आत्म स्वरूप में आत्म तत्व को पाने का झरना बह रहा है वह आत्मा ऊर्ध्वगामी के पथ पर गति कर रहा है, और एक से छटकर बे (दो) में गया कि फिर से बिगड़े! फिर वह आत्म स्वरूप के तत्व से विमुख रह जाता है। दो होने से राग-द्वोष जुड़ जाता है। ममत्व माया बढ़ जाती है। इसीलिये जीव संसार के कादव में अधोगति का राही बनता है और वह आत्मानन्द के स्वरूप के नहीं पा सकता है।

दिनांक 31.01.2017

युक्ति की पथगामी आत्मा संसार के भौतिक परिणामों की प्रवृत्ति से दूर रहकर स्वयं की आत्मा के परिणामों में विचरण करती है। वही आत्मा अनन्त संसार की भव भ्रमणा का अन्त करती है। वह जीवन के हर पल में हर श्वांस में आत्मश्रेय का पथ अपनाकर आत्मश्रेय का पथगामी बना रहता है।

दिनांक 01.02.2017

चाह किसी की पूर्ण हुई है ? आकाश की दूरी कितनी है नाप

सकते हैं। पाताल की गहराई को नापा जा सकता है किन्तु इच्छा का कोई नाप नहीं होता। इच्छा जीव की कभी कम नहीं होती है और न ही होगी। इच्छा कम करने के लिए जिनमार्ग गुरुवर द्वारा बताये पथ पर चलकर आत्म चिंतन करते-करते अनेक प्रकार की इच्छाएँ समाप्त कर सकते हैं।

दिनांक 02.02.2017

तुलना कभी किसी की नहीं करना। स्वयं के आत्मबल से, आत्म विश्वास रखकर कार्य करना चाहिये। आत्म विश्वास से जो भी कार्य करते हैं वो अवश्य ही सफलता को पाता है। अज्ञानवश, ईर्ष्यावश, अहं पैदा होता है तब नाम की ललक जागृत होती है तब होड़-दौड़ लगाने में लगते हैं। अन्त में जीरो ! यानि शून्य ! इससे अच्छा, स्वयं की बुद्धि, स्वयं के आत्म विश्वास से काम करना चाहिए।

दिनांक 03.02.2017

जोड़ करना सीखो, परन्तु कभी होड़ करने के भाव न रखो। खण्डन कभी ना करो, मण्डन करना सीखो। बड़े को मिटाकर बड़ा बनने की प्रवृत्ति न करो, परन्तु मिटाये बिना बड़ा होकर दिखाओ, सामने वाला स्वयं छोटा हो जायेगा। बस लक्ष्य अपने काम का रखकर कार्य में गति करो, जोड़ में मजा है होड़ के तोड़ में नहीं।

दिनांक 04.02.2017

फूल अनेक प्रकार के होते हैं, पंकज गुलाब का फूल ! फूल उगाने के लिये सूर्य किरणें पंकज के पौधे को प्रकाश देकर प्रफुल्लित करती है। वह पौधा तब ही उगेगा जब आकाश में से मेघ की वर्षा होगी। मेघ गगन में गर्जना कर पृथ्वी पर बरसता है तो वनस्पति भी उग जाती है, अनाज पैदा होता है, फूल खिलते हैं पंकज की महक फैलती है उसी तरह जीवन के सद्गुणों की महक प्रसरित करने की वृत्ति मनोवृत्ति बनायें।

दिनांक 05.02.2017

योजना, आयोग विभाग के हाथ है, आयोग सुबुद्धि वाला है तो हर योजना सहज सफलता के शिखर चूम लेती है। मन कार्यकर्ता है। आत्मा आयोग विभाग का राजा है। राजा की सुबुद्धि मन उसी तरह दौड़कर अपना काम करके दसों दिशा में यश पताका का ध्वज लहराता है। जीवनोत्थान की योजना बनाकर मन के वाहन को ऊर्ध्वगामी पथिक के पथ पर प्रशस्त करें। सर्व सुख ही सुख है।

■■■

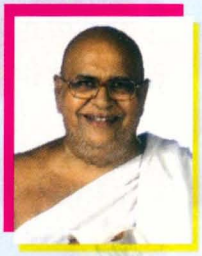

प्रश्नोत्तरी

स्थावर नामकर्म किसे कहते हैं ?

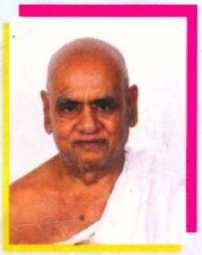

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. स्थावर नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव स्थिर रहे, सर्दी, गरमी आदि से बचने का उपाय न कर सके, उसे स्थावर नाम कर्म कहते हैं। इसके उदय से पृथ्वी, अप, तेज, वायु और वनस्पति में जन्म होता है।

प्र. सूक्ष्म नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव को सूक्ष्म शरीर (जो किसी को न रोके और न किसी से रुके) की प्राप्ति हो उसे सूक्ष्म नामकर्म कहते हैं।

प्र. अपर्याप्त नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव अपने योग्य पर्याप्तियाँ पूर्ण न करे, उसे अपर्याप्त नाम कर्म कहते हैं। इसके दो भेद हैं- 1. लब्धि अपर्याप्त और 2. करण अपर्याप्त जिस कर्म के उदय से जीव अपनी पर्याप्ति पूर्ण किये बिना ही मरे उसे लब्धि अपर्याप्त कहते हैं और जिस के उदय से आहार, शरीर और इन्द्रिय इन तीन पर्याप्तियों को अभी तक पूर्ण नहीं किया, किन्तु आगे पूर्ण करने वाला हो उसे करण अपर्याप्त कहते हैं।

प्र. साधारण नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से एक शरीर के अनन्त जीव स्वामी हों उसे साधारण नाम कर्म कहते हैं।

प्र. अस्थिर नामकर्म किसे कहते हैं।

उ. जिस कर्म के उदय से कान, भौं और जीभ अवयव अस्थिर अर्थात् चपल हों, उसे अस्थिर नामकर्म कहते हैं।

प्र. अशुभ नामकर्म किसे कहते हैं।

उ. जिस कर्म के उदय से शरीर के पैर आदि अवयव अशुभ हों उसे अशुभ नामकर्म कहते हैं।

प्र. दुर्भग नामकर्म किसे कहते है ?

उ. जिस कर्म के उदय से दूसरे जीव शत्रुता एवं वैर भाव करें, उसे दुर्भग नामकर्म कहते हैं। ■■■

उत्तम आहार-शाकाहार-27

स्वास्थ्य तथा जेब दोनों की रक्षा शाकाहार से

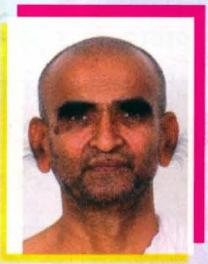

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

हम जो भी खाते हैं या पीते हैं उसका हमारे स्वास्थ्य पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसीलिए कहा गया है कि- 'जैसा खाएं अन्न वैसा बने मन, जैसा पीएं पानी वैसी बोले वाणी' यह केवल कहावत ही नहीं है बल्कि यह एक जीवंत सत्य है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इस सत्य को ठीक तरह से समझें, अर्थात् अपने जीवन में इस कहावत को उतारें और आहार आदि को सुधारें। आहार, भोजन के बिना कोई भी चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकता। प्रत्येक व्यक्ति को कुछ खाना ही पड़ता है लेकिन हमें इस बात का ज्ञान अवश्य होना चाहिये कि हम जो भी खाएं वह सात्विक और संतुलित होना चाहिए। शाकाहार अच्छे स्वास्थ्य का आधार है न केवल धर्म ने अपितु विज्ञान ने भी शाकाहार को सर्वाधिक सुरक्षित और सर्वोत्तम भोजन की संज्ञा दी है। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि उचित शाकाहार से हृदय संबंधी रोगों, मोटापे, उच्च रक्तचाप, तनाव ही नहीं कैंसर पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है, जबकि मांसाहार इन बीमारियों को निमंत्रण देने वाला भोजन सिद्ध होता है।

बैंजामिन फ्रैंकलिन नामक वैज्ञानिक थे उन्होंने मांसाहार को पूरी तरह से छोड़ दिया था तथा उन्होंने कहा कि यदि आप अपने स्वास्थ्य और जेब दोनों को सही सलामत रखना चाहते हैं तो मांसाहार का कभी भी सेवन नहीं करें।

महात्मा गांधी शाकाहार के प्रबल तथा कठोर समर्थक थे। गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जो शाकाहार करता है वह आचार-विचार एवं व्यवहार की दृष्टि से पूर्णतः निर्मल रहता है।

हमारे श्रद्धेय आचार्यश्री सुशील मुनिजी महाराज ने अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए जीवन की अंतिम वेला तक अपने आपको समर्पित रखा। जो लोग यह कहते हैं कि मांसाहार में विशेष तत्व है वे भ्रांति एवं अंधविश्वास में जी रहे हैं।

प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम,

आयरन, जिंक आदि यह सब पनीर, दूध, दही, साबुत अनाज, पालक, सलाद, मटर, फल आदि में जिस तरह से विद्यमान है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है।

आज आवश्यकता है कि शाकाहार के महत्व को जनमानस तक पहुँचाया जाए एवं उसे अन्तर-बाह्य दृष्टि से स्वस्थ बनाया जाए तथा शाकाहार के सेवन से व्यक्ति स्वस्थ, तन्दुरुस्त, बुद्धिमान, दीर्घायु रहता है। इसके विपरीत मांसाहार से व्यक्ति के शरीर के नाश के सिवाय और कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। मांसाहार सेवन करने से नई-नई बिमारियाँ पैदा होती हैं जो व्यक्ति के जीवन की समयावधी कम करती है।

अतः हमें मांसाहार का सेवन बिलकुल नहीं करना चाहिए। तथा जो व्यक्ति मांसाहार सेवन करता है उसे भी शाकाहार भोजन सेवन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(क्रमशः)

■■■

साहित्य समीक्षा

जैन महाभारत

जैन महाभारत : लेखक- जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा., प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान- दिव्य सन्देश प्रकाशन, ठि. सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस. एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनपुर गली के सामने, मरीनलाइन्स (ई), मुंबई -400002, मो. 9892069330, आवृत्ति- द्वितीय मूल्य- 230 रु., पृष्ठ - 380। सफाई-छपाई-ठीक।

हिन्दी भाषा में 'जैन महाभारत' के प्रकाशन का यह प्रथम प्रयास है। महाभारत इन्द्रधनुषी गाथा का निर्माण करती है। इसमें परस्पर विपरीत दो प्रकार के पात्र हैं। भीष्म, युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम आदि सज्जन पात्रों की श्रेणी में आते हैं जबकि दुर्योधन, कंस, दुश्शासन, शकुनी, धृतराष्ट्र आदि दुर्जनों की श्रेणी की पूर्ति करते हैं। इनके कृत्यों के परिणाम इनके चरित्र को उजागर करते हैं तथा मानव को सद्मार्ग के अनुगमन की प्रेरणा देते हैं। कुल मिलाकर यह गाथा आत्म तत्व के स्वीकार एवं सर्व के हित के सम्यक् विचार को रेखांकित करती है। इस पुस्तक का आधार पाण्डव चरित्र नामक प्राचीन ग्रंथ है जिसके कर्ता पूज्य देवविजयजी गणी है। जैनाचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म. ने अपने सुरेन्द्र नगर के चातुर्मास में इसका रविवारीय प्रवचनमाला के रूप में व्याख्यान दिया। उन्हीं व्याख्यानों को पुस्तकाकर इस ग्रंथ के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। पुस्तक प्रशंसनीय है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

(लेखांक-2)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

कनकपुर नगर को राजा वीरधवल ने अपनी नगर योजना के अनुरूप बीस विभागों में बसाया था। प्रत्येक विभाग एक छोटे नगर के समान था। नगर के आन्तरिक मार्ग काफी चौड़े रखे गए थे। भवन इस प्रकार बनवाए गए थे कि उनके बीच में कुछ दूरी रहे और सभी एक ही आकार प्रकार के थे। भवनों के पीछे पेयजल के लिए कुएं खुदवाये गये थे। प्रायः आठ दस भवनों के पीछे एक कुआँ होता था। प्रत्येक चौराहे पर एक उद्यान बनवाया गया था। आन्तरिक मार्गों के किनारे और भवनों के मध्य छायादार वृक्ष लगाये गये थे। प्रजा के मनोरंजन के लिए भी वहाँ स्थान नियत थे। तरण पुष्कर था, तो नाट्यकर्मियों के लिए विशाल रंगशाला भी थी। जहाँ समय-समय पर प्रसिद्ध नाटकों का मंचन होता रहता था और जनता का भरपूर मनोरंजन होता था। अनेक अवसरों पर स्वयं राजा वीरधवल भी रंगशाला में नाटक देखने जाया करता था। ऐसे अवसर पर रानी पद्मावती, महामात्य सुमितचन्द्र भी उसके साथ होते थे।

नगर के समीप ही जल से भरपूर कलकल करती सरिता थी। इसके तट पर घाट बने हुए थे। स्त्री और पुरुषों के लिए अलग-अलग घाट बने हुए थे। इन सामान्य घाटों से कुछ दूर एक विशेष घाट बना हुआ था। यह घाट राजपरिवार के लिए था। घाटों पर और विशेषकर स्त्री-घाटों पर वस्त्र बदलने के लिए कक्ष भी बने हुए थे। राजपरिवार के लिए बने घाट पर निर्मित कक्ष विशेष रूप से बनवाये गये थे। यहाँ एक छोटा किन्तु सुन्दर विश्राम गृह भी था। अनाज का भण्डारण रखने के लिए नगर की चारों दिशाओं में विशाल भवनों का भी निर्माण करवाया गया था। इन भण्डार गृहों से कुछ दूरी पर उद्यान

बनवाये गए थे और प्रत्येक उद्यान में अतिथि शाला भी बनी हुई थी। अतिथि शालाओं में स्थाई रूप से सेवक रहते थे। जो अतिथियों अथवा आगन्तुक यात्रियों के लिए आवश्यक व्यवस्था करते थे।

नगर के समीप एक पहाड़ी थी। इस पहाड़ी पर एक विशाल जिनालय बना हुआ था। कहा जाता है कि इस भव्य जिनालय का निर्माण सुमतिचन्द्र के पूर्वजों के द्वारा करवाया गया था। जिनालय में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के नीलम की भव्य प्रतिमा विद्यमान थी। वहाँ अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ भी विद्यमान थीं। यहाँ प्रतिवर्ष भगवान पार्श्वनाथ की जन्म कल्याणक के अवसर पर विशाल मेला लगता था जिसमें दूर - दूर से दर्शनार्थी तो आते ही थे, व्यापारी भी आते थे। मेले के अवसर पर पहाड़ी की तलहटी से लेकर कनकपुर तक के पूरे मार्ग के आसपास व्यापारी अपनी-अपनी दुकान सजाकर बैठ जाया करते थे। यह मेला मूलतः सात दिन का था किन्तु इसकी रौनक लगभग पन्द्रह दिन तक रहती थी।

मेले के समय कनकपुर में भी चहल-पहल बढ़ जाया करती थी। जिनालय के समीप एक विशाल धर्मशाला और एक उपाश्रय भी बना हुआ था। धर्मशाला तो सदैव खुली रहती थी। वहाँ स्थाई रूप से कुछ सेवक रहते थे। उपाश्रय उस समय खोला जाता था जब कोई मुनिराज अथवा साध्वी जी अपने शिष्य/शिष्या परिवार के साथ वहाँ विराजित रहते थे। धर्मशाला के सेवक ही उपाश्रय की साफ-सफाई का कार्य करते थे।

कनकपुर राज्य में चारों ओर सुख और समृद्धि का राज था। समय पर वर्षा होती थी जिससे भरपूर अनाज का उत्पादन होता था। दूध-दही, घी का उत्पादन भी विपुल मात्रा में होता था। जब से राजा वीरधवल ने शासन की बागडोर सम्हाली थी तब से राज्य ने किसी भी प्रकार के अभाव का मुंह नहीं देखा। कनकपुर राज्य में नागरिक ही नहीं समस्त पशु-पक्षी भी निर्भय होकर विचरण करते थे। इतना सब कुछ होते हुए भी राजा वीरधवल ने अपने राज्य में पट्ट पड़वा रखी थी कि कोई भी व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए, अपना दुःखड़ा सुनाने के लिए उससे किसी भी समय आकर मिल सकता है।

उसने अपने सेवकों को स्पष्ट निर्देश दे रखे थे कि प्रजा में से जब भी कोई व्यक्ति आवे, तब उसे उसकी तत्काल सूचना दी जावे। राजा वीरधवल का विचार था कि व्यक्ति असमय तभी उपस्थित होता है जब उसका कार्य अनिवार्य होता है। राजा तो अपनी प्रजा का सेवक होता है और राजा को प्रजा की सेवा के लिए चौबीसों घंटे तत्पर रहना चाहिए। (क्रमशः) ■■■

(प्रासङ्गिकम्)

परमात्मा से क्या मांगना चाहिए ?

(पुण्यसम्राट् गुरुदेव श्री के शिष्य मुनि श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)

पोष दशमी पर्व

परमात्मा पार्श्वनाथ का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक पर्व-

परमात्मा की स्तवना, भक्ति, स्मरण ध्यान, जाप आदि द्वारा नाम निक्षेप की आराधना की जाती है। पूजा, प्रतिष्ठा द्वारा स्थापना निक्षेप की आराधना होती है। वैसे ही साक्षात् परमात्मा एवं मोक्षगमन पश्चात् क्रमशः द्रव्य एवं भाव विशेष की आराधना की जाती है। लेकिन प्रश्न यह है कि आराधना क्यों करना चाहिये? परमात्मा अनंत गुणों के स्वामी है, उनकी भक्ति करने वाला भक्त स्वयं भगवान तुल्य - परमात्मा तुल्य बन जाता है, ऐसे शास्त्रवचनों का आशय हमें यही समझा रहा है कि परमात्मा की भक्ति करने के पीछे हमारा आशय यही होना चाहिये कि हमें हमारे शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति हो एवं भवबंधनों से मुक्ति हो। ऐसा निर्मल आशय ही भक्ति की सार्थकता है अगर, हम परमात्मा की भक्ति करके उनके पास संसार के क्षणिक सुखों की याचना करते रहेंगे तो हमारी भक्ति निष्फल होगी। अतः हमारे और परमात्मा के बीच का सम्बन्ध अमर बनाने के लिये हमारी भक्ति का आशय मात्र मुक्ति ही होना चाहिये। हमारे और परमात्मा के मध्य कोई भी छोटा सा स्वार्थभाव, अपेक्षाभाव आ गया तो, वो हमें परमात्मा से दूर कर देगा।

पंचसूत्र ग्रंथ के पाँचवे प्रव्रज्याफल सूत्र में लिखा है अविक्खा अणानंदे अपेक्षारहित आनंद श्रेष्ठ है, अपेक्षा दुःख का कारण है, अपेक्षा संसार है। संसार में ऐसे अनेक उदाहरण-प्रसंग देखने को मिलते हैं। सभी को एक-दूसरे के प्रति अपेक्षा रहती है। वो पूरी होने पर प्रसन्न हो जाते हैं पूरी न होने पर दुःखी। जो हमारी अपेक्षा पूरी करते हैं, वो हमें अच्छे

लगते हैं, जो अपेक्षापूर्ति नहीं करते हैं वो अच्छे नहीं लगते। मात्र और मात्र स्वार्थभावों की दुर्गन्धता भरे सम्बन्धों के अनेक दृश्य संसार में दिखते हैं। यह दृश्य संसार तक सीमित हो तो अच्छा है, लेकिन ऐसे मलिन भावों को लेकर व्यक्ति देव-गुरु-धर्म की शरण में भी पहुँच जाता है। जहाँ देव-गुरु-धर्म मोक्ष प्रदायक आलम्बन है, वहाँ हम क्षणिक सुखों की कामनाओं से इतिश्री कर लेते हैं। हमारी कामना पूरी हो जाये तो वह श्रेष्ठ है, वरन् उन्हें छोड़कर और कहीं जाने में हमें लज्जा तक नहीं आती। हमारे बुद्धिहीन इन कृत्यों को ज्ञानी 'मूर्खता' का बिरुद देते हैं।

'परमात्मा' एक असीम शक्ति है। जिसे पहचानने के लिये हमारे पास दिव्य दृष्टि होना चाहिये। जो हमें 'सदगुरु' के सानिध्य में ही प्राप्त हो सकती है। शास्त्रों के गहन अध्ययन द्वारा भीतर की मलिनता दूर होती है तब चित्त निर्मल बनता है। चित्त निर्मल होने पर हम परमात्मा के अनंत गुणों की सम्पत्ति को देख सकते हैं। साथ ही हमारे स्वयं के अनंत गुणमय स्वरूप का भी अनुभव हो जाता है। उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये ही हमें 'परमात्माभक्ति' करना है। सत्ता, सम्पत्ति, सुख सामग्री को प्राप्त कर हमें संतोष नहीं करना है, ये सारे पदार्थ तो तृणतुल्य है, जो धान्य की फसल कटने पर किसान सहज में प्राप्त कर लेता है। हमें भी परमात्मा भक्ति से क्या प्राप्त करना है, यह बात बहुत ही अच्छी तरह से समझना है। परमात्मा के गुणों को प्राप्त करने से पूर्व हमें 'परमात्मा के गुणों' के दर्शन होना जरूरी है। वो दिव्य दर्शन नहीं होंगे, तब तक प्राप्ति असंभव है। दर्पण में मुख देखने पर ही हमें हमारे चेहरे पर रहे दाग दिखते हैं, पश्चात् हम उसे दूर कर सकते हैं। वैसे ही परमात्मा के मुख पर रहे 'प्रशमगुण' के दर्शन होने पर हमें हमारे भीतर रहे अमल, अखण्ड, अलिप्त स्वरूप का अनुभव होता है, फिर परभाव सम्पूर्ण रूप से छूट जाता है।

परमात्मा पार्श्वनाथ के 'समभाव' गुण की स्तवना कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी ने सकलार्हत् स्तोत्र में कमठ और धरणेन्द्र के दृष्टांत द्वारा की है।

कमठ ने पूर्व भव के वैर के कारण मेघमाली के रूप में काउसग्ग ध्यान में लीन परमात्मा ऊपर अखण्ड वर्षा द्वारा उपसर्ग किया। प्रभु का शरीर नासिका तक पानी में डूब गया, फिर भी प्रभु ध्यान में ही लीन रहे। हमारे काउसग्ग कैसे होते हैं, वो इस प्रसंग का श्रवण करने पर सोचना चाहिये। इसी समय पूर्व भव के उपकार का स्मरण करते हुए भवनपति के नागकुमार देवों के जाति में उत्पन्न धरणेन्द्र तुरंत वहाँ आया, स्वर्णकमल की रचनाकर प्रभु के सिर पर सात फणों द्वारा छत्र स्थापित किया और मेघमाली के उपसर्ग का निवारण किया सार यही है कि- प्रतिकूल उपसर्ग करने वाले कमठ के प्रति प्रभु को द्वेष नहीं है, शत्रुभाव नहीं है। अनुकूल उपसर्ग करने वाले धरणेन्द्र के प्रति राग नहीं है। मित्रभाव नहीं है। दोनों के प्रति मात्र 'समभाव' ही है।

हमारे मन की क्या हालत है ? ये हम स्वयं जानते हैं। सुबह जिस पर राग है, शाम को द्वेष हो जाता है। अनुकूल व्यक्ति अच्छा लगता है, उसकी हम प्रशंसा करते हैं। प्रतिकूल व्यक्ति हमें पसंद नहीं है, उसकी निंदा का पाप भी कर देते हैं। इस स्थिति में हमें परमात्मा पार्श्वनाथ से 'समभाव गुण' की प्रार्थना करना चाहिये। समभाव आने पर हम अनेक पापों से बच जायेंगे। समता गुण आत्मा का स्वाभाविक गुण है। एक मात्र समता गुण हमें मोक्ष प्राप्ति करवा सकता है। ऐसा शास्त्रवचन है। **'समभाव भावि अप्पा, लहइ मोक्खं न संदेहो'** अतः इस बार हमारी 'पोषदसमी' की आराधना मात्र इसी शुद्ध आशय से होनी चाहिये कि परमात्मा ! हमें भी समता की प्राप्ति हो। समभाव की वृद्धि हो।

ज्ञानसार, अध्यात्म कल्पद्रुम, अध्यात्मसार, प्रशमरति आदि अनेक ग्रंथों में 'समता' के गुणगान किये गये हैं। स्वर्ग एवं मोक्ष बहुत दूर है, लेकिन एक मात्र 'समता' ऐसा गुण है, जो हमारे सबसे समीप है। प्रतिमास शंखेश्वर की यात्रा करने वाले भक्तों को भी यही कहना है कि अब 'शंखेश्वर की यात्रा' अखण्ड रखें लेकिन आशय 'समभाव' का ही रखें। चिन्तन करें।

■■■

108 पार्श्वनाथ तीर्थ अन्तर्गत् पाटण एवं पाटण समीपस्थ पार्श्वनाथ तीर्थ

(पुण्यसम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व–पाटण)

1.	श्री पंचासरा पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
2.	श्री महादेवा पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
3.	श्री चंपा पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
4.	श्री वाडी पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
5.	श्री नारंगा पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
6.	श्री कोका पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
7.	श्री धींगडमल्ल पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
8.	श्री कंकण पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
9.	श्री टांकला पार्श्वनाथ	पाटण तीर्थ
10.	श्री भटेवा पार्श्वनाथ	चाणस्मा तीर्थ (22 कि.मी.)
11.	श्री चारूप पार्श्वनाथ	चारूप तीर्थ (10 कि.मी.)
12.	श्री आनंदा पार्श्वनाथ	उंबरी तीर्थ (30 कि.मी.)
13.	श्री मनमोहन पार्श्वनाथ	कंबोइ तीर्थ (33 कि.मी.)
14.	श्री भीलड़ीया पार्श्वनाथ	भीलड़ीया तीर्थ (50 कि.मी.)
15.	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ	शंखेश्वर तीर्थ (50 कि.मी.)
16.	श्री सुलतान पार्श्वनाथ	सिद्धपुर (20 कि.मी.)
17.	श्री जोटींगडा पार्श्वनाथ	मुजपुर (40 कि.मी.)
18.	श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ	गाम्भू (32 कि.मी.)
19.	श्री सांकलापार्श्वनाथ	सांखलपुर (43 कि.मी.)
20.	श्री पल्लवीया पार्श्वनाथ	पालनपुर (60 कि.मी.)

नोट :– अन्य तीर्थों की दूरी पाटण से बताई गई है।

पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री द्वारा 56 वर्ष एवं मुनिपद ने लिखे गये अद्भूत चिंतन

मधुकर मंथन

सिद्धाचल पवित्र तीर्थ भूमि और निर्वाण क्षेत्र है। यहाँ की यात्रा करने के बाद आदमी अगर सीधा चलना सीख लेता है तो उसका जीवन परम आदर्श बन जाता है अन्यथा कड़वी तुम्बी ज्यों 68 तीर्थों में स्थान कर लेने के बाद भी कटु - जहर जैसी रह जाती है। उसका ध्यान रखकर यात्रा सफल हो ऐसा मार्ग अपनाना चाहिये।

गिरिराज कहता है हरदम हर हर एक को कि - 'भोले मानव ! 'शत्रुंजय', तेरे जो भी आत्म शत्रु हैं, उनको जीतने का है तुझे, तू जीत। तू समझ रहा है कि कर्म के आगे कुछ नहीं चलता, मैं कहता हूँ अगर तू परिश्रम एवं पुरुषार्थ करे तो उन कर्मों की तेरे सामने कुछ भी नहीं चलेगी जो आज तक चलाते आये हैं ।

ज्यों-ज्यों गिरिराज के समीप जा रहे वास्तव में अपूर्व उल्लास एवं आल्हाद बढ़ रहा है। परम पावन सिद्ध क्षेत्र जिसकी भाव पूर्वक यात्रा-स्पर्शना भव्यत्व की प्रतिपादक है। जिसके खण्ड-खण्ड में, कंकर-कंकर में और कण-कण में सिद्ध बुद्ध का संदेश भरा पड़ा है। जिसके परमोच्च श्रृंगों पर परमोत्कृष्ट पद पाने का सौभाग्य मिला है अनंतानन्त जीवात्माओं को। यह गिरि शाश्वत है। इसीलिये सभी तीर्थों का राजा इसे कहा गया है। जाना और यात्रा करना दोनों भिन्न है, पैर जाते हैं किन्तु यदि आपने नहीं साथ दिया तो वह जाना ही रह जायगा।

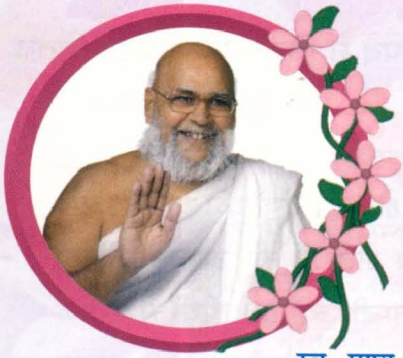

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (32)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

फिर सम्मानपूर्वक श्री हर्ष को शास्त्रार्थ के लिए राजपण्डित के समकक्ष आसन पर बिठा दिया गया। राजा ने आदेश दिया कि आप दोनों शास्त्रार्थ शुरू करें। मध्यस्थता हम करेंगे और निर्णय सुना देंगे कि कौन जीता और कौन हारा? जो भी विजेता होगा, उसे 'राजपण्डित' का पद दे दिया जाएगा।

लेकिन यह क्या ? आश्चर्य से सबने देखा कि 'राजपण्डित' के लिए लाया गया पुष्पहार स्वयं अपने हाथों से श्री हर्ष को पहिनाकर राजपण्डित ने कहा- 'अध्यक्ष पदासीन महाराज ! एवं सभा में उपस्थित सभासदों ! शास्त्रार्थ किए बिना ही आज मैं अपनी हार स्वीकार करता हूँ, क्योंकि जिसके बनाए गए साधारण प्रशस्ति पद्य का अर्थ भी जब मैं नहीं समझ सका, तब उसने शास्त्रार्थ भला कैसे कर पाऊँगा ?'

राजा ने श्रीहर्ष को विजयजी घोषित करके 'राजपण्डित' की उपाधि देते हुए उन्हें राजपण्डित के लिए निर्धारित आसन पर बिठा दिया। सभासदों ने भी श्री हर्ष की जय जयकार की ध्वनि से उनका स्वागत किया। सभा समाप्त हुई। सब अपने-अपने घर गए।

श्री हर्ष भी अपने ठहरने के आस्थानक में गए और वहाँ

चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगे। कहते हैं कि इस रुदन को सुनकर सरस्वती देवी ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिए। उनने रोने का कारण पूछा तो श्री हर्ष बोले - माँ ! तूने अच्छा नहीं किया, इसीलिए मुझे रोना आ रहा है।

सरस्वती ने कहा- 'शास्त्रार्थ के बिना ही तुम्हें राजपण्डित की पदवी मिल गई। सर्वत्र तुम्हारी प्रशंसा हो रही है, फिर भी तुम असन्तुष्ट हो। इस असन्तोष का कारण मुझे समझ में नहीं आ रहा है। तुम्हीं बताओ कि मैंने क्या अच्छा नहीं किया ?'

श्री हर्ष - ' माँ ! तूने मेरी बुद्धि इतनी प्रखर बनाकर अच्छा नहीं किया। यदि मैं कोई महाकाव्य लिखकर अपना शरीर छोड़ दूँ तो क्या होगा ? लोगों को जब वह समझ में नहीं आयेगा तो उसका वे आनन्द कैसे ले पायँगे ? मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा ? जो काव्य समझ में नहीं आयेगा, उसे कोई संभालकर भी क्यों रखेगा ? रद्दी की टोकरी में उठाकर डाल देगा न ?'

सरस्वती - ' हाँ, बात तो तुम ठीक ही कहते हो, परन्तु मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ ?'

श्री हर्ष - ' आप मेरी बुद्धि निर्बल बना सकती हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरी बुद्धि निर्बल हो जाय कि उस अवस्था में बनाए गए मेरे काव्य को साधारण लोग भी आसानी से समझ लें।'

सरस्वती - 'तथास्तु, पुत्र ! बुद्धि को निर्बल बनाने के लिए मैं तुम्हें एक अच्छा नुस्खा बताती हूँ।' सुन -

अशेषशेमुषीमुषमशान माषम् ।।

(संपूर्ण बुद्धि को कम करने वाले उड़द खा)

यदि एक महीने तक प्रतिदिन जब भी भूख लगे, केवल उबले हुए उड़द खाते रहोंगे तो तुम्हारी बुद्धि अवश्य कुछ निर्बल हो जाएगी।'

यह कहकर सरस्वती अन्तर्ध्यान हो गई। उसके बताए हुए नुस्खे का श्रीहर्ष ने सेवन किया। उनकी बुद्धि निर्बल हो गई। फिर उन्होंने अपने महाकाव्य 'नैषधीयचरितम्' की रचना की, जिसमें बाईस सर्गों के माध्यम से 'नल दमयन्ती' की कथा प्रकट की गई है। यह महाकाव्य साहित्य में सर्वोत्तम पद पर आज तक प्रतिष्ठित है।

श्रीहर्ष के जीवन की यह घटना इस बात की हमें प्रबल प्रेरणा देता है कि हम लिखने और बोलने में इतनी सरल भाषा का प्रयोग करें कि पाठकों और श्रोताओं की समझ में आ जाय।

एक मुस्लिम महात्मा थे- हमदुन कस्सार नेशापुरी। लोगों ने उनसे प्रार्थना की कि आप सभा में पधारें और प्रवचन के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करें।

उत्तर में उन्होंने कहा- 'मैं उपदेश देने का अधिकारी नहीं हूँ, क्योंकि मेरा मन सांसारिक प्रतिष्ठा पाने की इच्छा से मुक्त नहीं हो पाया है। जो उपदेश श्रोताओं के हृदयों में प्रविष्ट होकर उन्हें प्रभावित न कर दे, वैसे उपदेश से ज्ञान का उपहास होता है। ज्ञान का आचरण न करके उसका उपयोग जो सिर्फ दूसरों को उपदेश देने में करते हैं, अपने उपदेश को आचरण में उतारने का जिनमें साहस न हो, उन्हें चुप ही रहना चाहिए।'

एक महात्मा के पास एक बुढ़िया आई। उसके साथ एक छोटा - सा बालक भी था। उसने प्रार्थना की कि मेरा यह पुत्र है। इसे गुड़ खाने की आदत है। भोजन के साथ तो यह गुड़ खाता ही है। उसके अलावा भी दिन में अनेक बार गुड़ उठा-उठाकर खा लिया करता है। आप इसे ऐसा उपदेश दें कि जिससे इसकी यह आदत छूट जाय।

इस पर महात्माजी ने कहा- 'माताजी ! आज बुधवार है। आप सात दिन बाद अगले बुधवार को आइएगा। मैं इसे समझा दूँगा। (क्रमशः)

■■■

अध्यक्षीय पाती

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

आहुति दें ज्ञान के महायज्ञ में

प्रत्येक समाज के उन्नयन का आधार ज्ञान होता है। जैन धर्म ने सम्यक् ज्ञान पर बल दिया है। ज्ञान के बिना आचरण अपंग है। ज्ञान युक्त क्रिया या आचरण व्यक्ति को आत्म कल्याण की ओर अग्रसर करती है। जीवन में व्यावहारिक शिक्षण हमें भौतिक सुविधाएँ जुटाने में सहयोगी हो सकता है लेकिन धार्मिक शिक्षा से ही जीवन की दिशा प्राप्त हो सकती है। धार्मिक शिक्षा का श्री गणेश क्रियाओं के सूत्रों से होता है। धार्मिक क्रियाओं के लिए सूत्रों का कण्ठस्थ अभ्यास करना पहली आवश्यकता है. जैन समाज में सदियों से पाठशालाओं के माध्यम से धार्मिक शिक्षण प्राप्त करने की महत्वपूर्ण परम्परा रही हैं। ऐसी संस्थाएँ भी हैं जो धार्मिक शिक्षक तैयार करती हैं तथा उन्हें पाठशालाएँ संभालने योग्य बनाती हैं। पाठशालाओं के संचालन में व्यवस्थित पाठ्यक्रम तथा उसके अनुसार पाठ्यपुस्तकें होनी जरूरी हैं। इनके बिना धार्मिक शिक्षण को क्रमिक नहीं बनाया जा सकता।

प्रसन्नता है कि विगत पंद्रह वर्षों से अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ को गति दी जा रही है। ज्ञानपीठ वार्षिक परीक्षाओं को आयोजित करता है। प्रावीण्य तथा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को नकद पुरस्कार एवं आकर्षक प्रमाणपत्र दिया जाता है। शेष सभी उत्तीर्ण छात्रों को आकर्षक प्रमाणपत्र पुरस्कृत किय जाते हैं. इस वर्ष श्री सम्यग्ज्ञान अभिवृद्धि योजना का प्रशसनीय रूप में संचालन हुआ है, जो सफल रही है। जिन सथानों पर दस से अधिक छात्र हो, वहाँ ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र की स्थापना करता है। श्रीसंघ तथा परिषद शाखाओं का कर्तव्य है कि वे ज्ञानपीठ का पाठ्यक्रम अपने यहाँ लागू करें एवं परीक्षा केन्द्र स्थापित करें। इसकी तैयारी कभी से की जानी चाहिए। यह ज्ञान के महायज्ञ में अपनी आहुति देने के समान है। ज्ञान की सुविधा जुटाना पुण्यकार्य है। सर्वत्र अपने स्तर पर शिक्षा समिति का गठन हो सकता है। यह धार्मिक शिक्षा के प्रसार की योजना बनाकर अपने यहाँ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करने के लिए ठोस उपाय कर सकती हैं। हमारी आगे आने वाली पीढ़ी तभी उपयोगी रह सकती है जबकि उनका धार्मिक ज्ञान एवं संस्कारजन्य जीवन हो।

जय जिनेन्द्र।

अध्यक्षीय संदेश

परिषद् अब परिवर्तन लाये

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की संस्थापना त्रिस्तुतिक समाज के संकान्ति काल में हुई थी। योगीराज दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. द्वारा जावरा में आषाढ़ कृष्णा (गुजराती ज्येष्ठ विदी) दशमी को किया था। उनकी यह उद्घोषणा उस समय व्याप्त शिथिलाचार, परावलम्बी साधना तथा बहुदेववाद के विरुद्ध थी। उनने उत्तम क्रिया एवं वीतराग सम्मत साधना मार्ग का प्रतिपादन कर जैन आध्यात्मिक जगत को उज्ज्वल प्रकाश दिया। फलतः त्रिस्तुतिक परम्परा को जीवन प्राप्त हुआ तथा समाज। श्रीसंघ सही मार्ग पर आरूढ़ हो गया। दादा गुरुदेवश्री की धारणाओं ने युग को बदलना प्रारंभ कर दिया। उनके पट्ट पर आसीन श्रीमद् धनचंद्रसूरिजी तथा श्रीमद् भूपेन्द्रसूरिजी का आचार्यकाल अल्प रहा। गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने त्रिस्तुतिक समुदाय को स्वरूप का आकार देने का स्वप्न दृष्टिगत किया तथा उसी का पारिमाणिक साकार परिणाम अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के रूप में गुरुदेवश्री के शिष्य तथा पट्टधर राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने जीवन अर्पण के माध्यम से प्रकट कर चमत्कार किया। उनका परिश्रम, पुरूषार्थ तथा पराक्रम ही परिषद को बीजारोपण से विशाल वटवृक्ष में विकसित कर पाया जो आज चहुंदिशाओं में दृष्टव्य है।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की प्रगति ने समाज की प्राप्ति का स्थान ग्रहण कर लिया, ऐसा ही इसके संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की भावना थी एवं ऐसा ही अपने सुयोग्य शिष्य पूज्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. को निर्देशन था।

समाज में भ्रांतियां परिपक्व होकर परिवर्तन लाती है। परिषद भी आज इसी स्थिति में है। अपने संस्थापक गुरुदेव के जन्म दिवस पर हम संकल्प लें कि परिषद को सुदृढ़तम स्थिति में ले जाकर ही चैन लेंगे। इसके उद्देश्यों की प्राप्ति से समाज का अभिषेक करेंगे तथा इसके विस्तार से जन्मदाता तथा जीवनदाता पूज्य गुरुदेवों के संकल्पों को मूर्त्तरूप देंगे।

■■■

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

दासियों ने अभयकुमार से आकर कहा- 'तुम्हारे स्वामी का चित्र हमारी राजकुमारी देखना चाहती हैं, हमें दे दो।'

अभय ने कहा- 'नहीं ! नहीं ! मेरे पास एक ही चित्र है और तुम इसे राजमहलों में ले जाओ और कल कुछ हो जाये तो मैं क्या करूंगा ? इस चित्र को देख लेने के बाद आपकी राजकुमारी तो क्या, उर्वशी और इन्द्राणी का दिल भी अपने हाथ में नहीं रहता ! नहीं यह चित्र तुम राजमहलों में नहीं ले जाओगी। फिर कहीं महाराज चेटक को इसका पता चल गया, तो तुम्हारी और मेरी जान जोखिम में पढ़ जायेगी।

दासियों ने अत्यन्त आग्रह किया और चित्र उठा लिया और चुपके से राजमहलों में ले जाकर सुज्येष्ठा को वह चित्र दिखाया। उस समय चेलना भी सुज्येष्ठा के पास ही बैठी थी। दोनों ने ही चित्र देखकर कलेजे पर हाथ रख लिया, और बोली- 'हाय ! ऐसा अद्भुत रूप ! लावण्य ! और चेलणा से बोली बहन ! कौन है यह दिव्य पुरुष ! चेलणा ने बोला- ' जिसके सामने देवताओं की सुषमा पानी भरती है।'

सुज्येष्ठा ने कहा 'चेलणा ! धीरे बोल ! कहीं कोई सुन न ले ! ये हैं मगध सम्राट भंभासार श्रेणिक ! बहुत बड़े - वीर ! महान् नीतिमान और बुद्धि-निधान !' सुज्येष्ठा और चेलणा उस चित्र को घंटों तक देखती रहीं। कभी वक्षस्थल से चिपकातीं तो कभी सिर, आँखों पर रखतीं। चेलणा ने कहा- 'दीदी ! जिस स्त्री को ऐसा पति मिले उसी का जीवन धन्य है। अन्यथा तो संसार में कुँवारी ही रहना अच्छा है।' सुज्येष्ठा ने चेलणा के कान में धीरे से कहा- 'यही तो मेरा मन कह रहा है। यदि हम पति बनायेंगे तो इसी पुरुष को, अन्यथा कुंवारी ही रहेंगे।

सुज्येष्ठा ने अपनी प्रिय विश्वस्त दासी को बुलाकर अपने मन की बात कही- 'तू जा ! और उस वणिक से कह, की हम जीवनभर तुम्हारा उपकार मानेंगे, कैसे भी तुम महाराज श्रेणिक के साथ मेरा विवाह करवा दो।'

दासी ने आकर अभयकुमार से एकांत में सब बातें कहीं। दासी की

बात सुनकर अभय का हृदय तो बाँसों उछल पड़ा, खुशी से झूम उठा, किन्तु अभय ने मन की सब खुशी भीतर ही छुपाकर उसने बड़ी गंभीरता से उस दासी को कहा- 'तुम्हारी राजकुमारी को कहो, यह बड़ा गंभीर प्रश्न है, जीवन-मरण का प्रसंग है, इसलिए भावावेश में नहीं आयें। अच्छे से सोच-विचार कर लें। और हाँ, 'मुझसे जो भी सहयोग हो सकेगा, हितैषी के नाते मैं तुम्हारा पूर्ण सहयोग करूँगा।' यह बात भी आपकी राजकुमारी से कह देना।

दासी ने सुज्येष्ठा और चेलणा से अभयकुमार की सारी बात कही। दोनों का ही मन बड़ा बेचैन हो रहा था। उन्होंने कहलाया 'हम तो अन्तर मन से अपना जीवन- धन, जीवन साथी उन्हें स्वीकार कर चुकी हैं। इस जन्म में या तो हमारा पति वहीं होगा या फिर हम कुँवारी ही रहेंगी। जो भी खतरा होगा, जो भी परेशानियाँ आयेंगी, हम वह उठाने को तैयार हैं।' दासी ने यह सब अभयकुमार से आकर कहा तब अभय ने सुज्येष्ठा को वापस कहलाया कि- 'मैं महाराज श्रेणिक से मिलाने के लिए गुप्त योजना बना रहा हूँ, तुम तैयार रहो!' और अब उसने राजमहलों से लेकर वैशाली के दुर्ग से बाहर तक एक विशाल सुरंग बनाई। महाराज श्रेणिक को इस सुरंग के रास्ते पर आने का संकेत दे दिया। (क्रमशः) ■■■

मैं और मेरे गुरुदेव

मैं और मेरे गुरुदेव : लेखक- अनिल जैन, प्रेरक- मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म., प्राप्ति स्थान - श्री जयंतसेन म्युजियम, मोहनखेड़ा तीर्थ रोड़, राजगढ़ (जि. धार , म.प्र.) पृष्ठ -56 कव्हर- बहुरंगी आर्ट कार्ड, छपाई- सफाई ठीक। प्रथम संस्करण।

प्रस्तुत पुस्तक गुरु भक्त श्री अनिल जैन को राष्ट्रसंत युग प्रभावकाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. के सान्निध्य में प्राप्त अनुभूतियों का संग्रह है। लेखक ने बारह प्रसंगों को शब्दबद्ध किया है। साथ ही नवकार के दोहे, गुरुदेव पर कविताएं, स्तवन आदि भी दिये हैं। लेखन स्पष्ट तथा समझपूर्ण है। प्रकाशित लेखों से गुरुदेव श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश आलोकित होता है। लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

उसी समय स्नान करके वस्त्र तथा आभूषण से सुसज्जित होकर भगवतीमल्ली ने महाराज कुम्भ के पास आकर उनके चरणों को प्रणाम किया। परन्तु उदास होने के कारण महाराज कुम्भ चिन्तामग्न ही रहे। न तो वे भगवती मल्ली से बोले और न उन्होंने भगवती मल्ली के सामने देखा। अपने पिता की इस प्रकार की मनोदशा देखकर भगवती मल्ली ने उनसे पूछा– 'पिताजी ! आज से पहले तो सदा आप मुझे आते देखते ही प्रफुल्लित, खुश हो जाते थे, मेरा आदर एवं दुलार करके आप मुझसे बहुत बातें करते थे, परन्तु आज ऐसा क्या कारण है जो आज मुझसे बात नहीं कर रहे, मेरे सामने तक नहीं देख रहे और आप इस प्रकार हतोत्साह हुए चिन्तामग्न बैठे हैं ?'

अपनी पुत्री का ऐसा प्रश्न सुनकर महाराज कुम्भ ने कहा– 'हे पुत्री ! तुम्हारे साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जितशत्रु आदि इन छहों राजाओं ने मेरे पास अपने दूत भेजे थे। उनके विवाह के प्रस्ताव को मैने ठुकरा कर उनके छहों दूतों को अनादर करके, अपमान करके, महल के द्वार से बाहर निकलवा दिया। जब अपने–अपने दूतों के मुँह से उन छहों राजाओं ने यह सब वृतांत सुना तो वे बड़े क्रोधित हुए। इसी कारण से उन छहों राजाओं ने मिथिला नगरी को चारों ओर से घेर लिया है, न किसी को बाहर जाने देते हैं और न किसी को बाहर से अन्दर आने देते हैं। मैंने इन छहों राजाओं को परास्त करने के विचार पर अनेक प्रकार से उपाय सोचे परन्तु न तो उनका कोई छिद्र ही दिखाई दे रहा है और न इनको परास्तकरने का कोई उपाय । इसी कारण से मैं इतना उदास और चिन्ता में डूबा बैठा हूँ।'

अपने पिता की यह सब बात सुनकर भगवती मल्ली ने कहा– 'है पिताश्री न तो आपको हताश होने की आवश्यकता है और न चिन्ताग्रस्त

होने की। इस विषय में मैं आपको एक उपाय बताती हूँ। वह उपाय यह है कि आप उन जितशत्रु आदि छहों राजाओं में से प्रत्येक के पास एकान्त में अपना दूत भेजिये। वह दूत प्रत्येक राजा को यह बात कहे कि- 'हम अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी को तुम्हें दे देंगे।'

उन छहों राजाओं को पृथक-पृथक दूत से इस प्रकार कहलवा कर उनमें से एक-एक को अलग-अलग को रात्रि में जब सब लोग निद्रा (निंद) की गोद में सोये हुए हों, उस समय एक-एक राजाओं को नगर में प्रवेश करवाइये और छहों को पृथक-पृथक गर्भगृहों में एक-एक करके ठहरा दीजिये। जब वे छहों राजा छहों गर्भगृहों में प्रविष्ट हो जायें, उस समय मिथिला नगर के सभी प्रवेशद्वारों को बन्द करवा दीजिये और इस प्रकार उन छहों राजाओं को यहाँ रोककर आत्मरक्षा कीजिये।'

भगवती मल्ली के कथनानुसार महाराज कुम्भ ने छहों राजाओं को पृथक्-पृथक् दूत भेजकर रात्रि के समय नगर में एक-एक राजाओं को प्रवेश करवाकर पृथक-पृथक गर्भगृहों में ठहरा दिया। (क्रमशः)

■■■

बाबूलालजी तांतेड़ छटवीं बार निर्विरोध चुने गए अध्यक्ष

जावरा। पिपली बाजार मंदिर पौषधशाला पर श्रीसंघ की साधारण सभा आयोजित की गई। जिसमें नवीन पदाधिकारियों पर विचार-विमर्श किया गया। एक बार पुनः सर्व सम्मति से श्रीसंघ अध्यक्ष पद आगामी कार्यकाल के लिए श्री बाबुलाल तांतेड़ को मनोनित किया गया।

मिडिया प्रभारी अरविंद जैन, अतुल सुराणा ने बताया कि श्री तांतेड़ लगातार छठी बार निर्विरोध अध्यक्ष पद पर मनोनित हुए हैं। श्रीसंघ के वरिष्ठ शांतिलाल कावड़िया, सुरेन्द्र पोखरना, राजमल धारीवाल, शांतिलाल दसेड़ा, विजय आंचलिया, सुजानमल दसेड़ा आदि ने नवीन अध्यक्ष श्री तांतेड़ का स्वागत कर बधाईयां दी।

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी
म.सा.

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

विराट व्यक्तित्व

(प्रस्तोता–मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

यह ग्रहों के प्रभावन से समाज के उत्थान कार्यों, समाज कल्याण कार्यों, आध्यात्मिक आत्म उन्नति के उपदेश द्वारा आप देशभर में पदयात्रा करके युग पुरुष के रूप में निखर आयेंगे। अनेक तीर्थस्थानों का नवनिर्माण और जीर्णोद्धार आपके हाथों से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पंचमेश पंचमस्थान में स्वगृही होकर पड़ा है यह उत्तम योग बना है इस बारे में ज्योतिषशास्त्र में प्रखर यवनाचार्य ने लिखा है।

तनय भावपति स्तनय स्थितो मितयुतं वचनं प्रबलं जनम् ।
बहुलमान युतं पुरूषोत्तमं प्रबल लोकवरं कुरूते नरम् ।।

यवनाचार्यजी ने पंचमस्थान में अपने घर में शनि रहने पर फल बताया है यह देखने के बाद जयंतसेनसूरीश्वरजी की कुंडली की सत्यता प्रकट होती है। उपरोक्त श्लोक का अर्थ निम्न प्रकार है, जो आचार्यश्री के जीवन में पूर्ण प्रतीत होता है।

जिसकी कुंडली में उपरोक्त योग हो तब जातक महान होता है। उसका बोलना बुद्धि पूर्ण होता है। वाणी में प्रबलता, मधुरता और दिव्यता रहती है। इस योग से अति सम्मान मिलता है, लोकनायक पुरुषों में उत्तम– महापुरुष योग बनता है।

पंचम स्थान को पुत्र स्थान योने शिष्यस्थान कहते हैं, इस योग से निश्चित होता है कि पंचमेश शनि अपने घर में मकर और कुंभ राशि भ्रमण दरमियान, असंख्य शिष्य–शिष्या का समुदाय भारी मात्रा से बढ़ेगा। यह निश्चित प्रबल योग है।

आपकी बहुत बड़ी भारी प्रतिष्ठा, महासम्मान, सामाजिक, राजकीय, आध्यात्मिक क्षेत्र में अकल्पित उन्नति होगी। लोग आपको अवतारी महापुरुष के रूप में मानेंगे।

महान, तपस्वी, सर्वविधि, सम्पन्न अनेक भाषाओं के ज्ञाता, धीरगंभीर, संयमी, समानता और अजातशत्रु आदि गुणों की प्राप्ति के बाद सारे देश में आपका नाम प्रसिद्ध होगा। बड़े-बड़े सर्वोच्च नेतागण आपके सत्संग ओर दर्शन से धन्यता प्राप्त करेंगे। शुक्र की महादशा आपकी उत्तम सब कामनाओं को सिद्ध करेगी। इस महादशा में आप कोई भी कठिन कार्य हाथ में लेंगे तो सुलभ हो जाएगा। आपकी तीनों कुंडली में लग्नेश होने से शुक्र की महादशा का समय आपके लिये स्वर्णयुग समान होगा।

साथ में आत्मज्ञान की वृद्धि ओर अनेक गुप्त ज्ञान रहस्यों-सिद्धियों की प्राप्ति होगी। आपकी कुंडली में शुक्र के बाद गुरु का क्रम है। जन्म लग्न और आचार्य पदवी की कुण्डली में गुरु अपने धर में अग्नि तत्व की राशि धन में पड़ा है और दीक्षा कुंडली में लाभेश होकर लग्न में पड़ा है। गुरु के बारे में आपकी कुंडली में शास्त्रकारों का मत निम्न

गुरूदेवश्री की आचार्य पदवी कुंडली

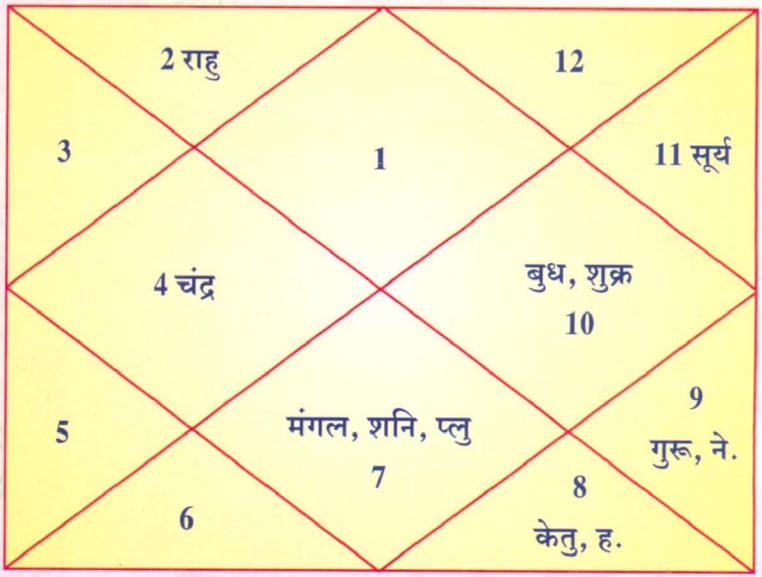

प्रकार है।

गौरी जातक-लग्गात् तृतीयगे जीवे नराणां चैव वल्लभः ।

यवन जातक-शताधियों देव पुरोहितश्च ।

काशीनाथ- जीवे तृतीये तेजस्वी कर्मदक्षों जितेन्द्रियः।

मित्राप्त सुख संपन्नस्तीर्थ यात्रा प्रियो भवेत् ।

पराशर-गुरुस्तुतीये तु शत्रुवृद्धि धनक्षयम् ।

इन सभी ने तृतीयस्थ शुभगुरु के बारे में लिखा है। यह सब अक्षर आचार्यश्री के जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। यहाँ सरल श्लोक होने से अर्थ करने की आवश्यकता नहीं है। तमाम ग्रहों ओर कुंडलियों का भावीफल का सारांश संक्षेप में इस प्रकार है।

आपकी तीनों कुंडलियों का समन्वय करने से ज्ञात होता है कि जातक धीर, गंभीर सदा प्रयत्नशील, काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र और न्याय, व्याकरण, मीमांसा, तर्क, ज्योतिष और राजनीति, शिल्प शास्त्र आदि के ज्ञाता अनेक भाषाएं, संस्कृत, मागधी, हिन्दी और अनेक प्रांतीय भाषाओं के ज्ञाता हो सकता है। अनेक तीर्थों का उद्धारक और समाज सुधारक बने। आपकी दिव्य अमृतवाणी के उपदेश से असंख्य पतितों का उद्धार होगा। काम क्रोध, लोभ, मोह आदि आत्माओं के शत्रुओं पर विजय पाने वाला आत्मज्ञानी योग बनता है गुरु शुक्र की प्रबलता के कारण, धर्म, कर्म में प्रवृत रहकर, जैन धर्म तत्वज्ञान प्रचार और इष्टमंत्र नमस्कार महामंत्र और सूरिमंत्र की दिव्य उपासना द्वारा आप सर्व कार्यों में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं उक्त ग्रहों के प्रभाव से अहिंसा परमोधर्मः के उपदेश से ग्राम, तीर्थ नगर देश-परदेश में घूमकर अनेक मनुष्यों का जीवन उन्नत बनाएंगे।

समाज के अनेक दूषणों को जडमूल से निकाल समाज को उन्नत बनाने में आप समर्थ रहेंगे आपके ग्रहों की चाल देखते यह निश्चित होता हैं आप एक महान अध्यात्मयोगी सिद्ध पुरुष, युगपुरुष के रूप में प्रकट हुए हैं। पापग्रहों के असर से कुछ व्याधियों का और हितशत्रुओं का सामना भी करना पड़ेगा। आयुष्य योग परमायु है यहाँ आपकी कुंडली का साधारण सूक्ष्यमकाल लिखा है संपूर्ण फल के लिए एक बड़ा भारी ग्रंथ हो सकता है।

■■■

श्रावकों के लिये

(श्री तारकरत्न विजयजी म.सा.)

मुनि श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.

6 गलने और 10 चन्दरवे का विवरण

जैन शास्त्र में श्रावक को सात गलने रखने का कहा है वे इस प्रकार से हैं –

1. मीठे पानी हेतु, 2. खारे पानी हेतु, 3. गरम पानी हेतु, 4. दूध छानने हेतु

5. घी छानने हेतु, 6. तेल छानने हेतु, 7. आटा चलने हेतु

उपरोक्त सात प्रकार के गलने श्रावकों के यहाँ होना चाहिये एवं उनका उपयोग भी करना चाहिये जयणा धर्म महान है।

दस चन्दरवे का विधान इस प्रकार है

1. चूल्हे के ऊपर, 2. पानीयारे के पानी रखने के स्थान पर, 3. भोजन करने के स्थान के ऊपर, 4. घंटी के ऊपर, 5. खाण्डवी के ऊपर, 6. छाछ करने के स्थान के ऊपर, 7. सोने के स्थान पर, 8. सामायिक करने के स्थान पर, 9. नहाने के स्थान पर, 10. भगवान की तस्वीर आदि रखने के स्थान पर उपरोक्त दस चन्दरवे बांधना शास्त्रों में बताया गया है।

तेरह काठियों के नाम

धर्मकार्य में अन्तराय करने वाले 13 काठिये पुण्य सम्राट आचार्य श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी अपने प्रवचन, मांगलिक, प्रतिक्रमण आदि अनुष्ठानों में तेरह नवकार गिनने का कारण तेरह काठिये को दूर करने हेतु बताते थे, वे इस प्रकार से हैं–

1. आलस, 2. मोह, 3. अवज्ञा, 4. अहंकार, 5. क्रोध, 6. प्रमाद, 7. कृपणता, 8. भय, 9. शोक, 10. अज्ञान, 11. चित्त विशेष निन्दा, 12. कुतूहल, 13. स्त्री विकास। उपरोक्त दुर्गुण आत्मा को दूर रखते हैं और आत्मभाव का नाश करते हुए परभाव का पोषण करते हैं। इसलिये इनका त्याग करने का प्रयत्न करना चाहिये।

■■■

लेखांक - 71

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

सुधर्मा- परन्तु कर्म विचित्र किसलिए है ? कर्म में विचित्रता का हेतु क्या है ?

महावीर- कर्म के हेतुओं- मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग में विचित्रता होने से कर्म विचित्र है और कर्म के विचित्र होने से जीव का भवांकुर भी विचित्र होगा और यह बात तुम्हें स्वीकार करनी ही चाहिए, जिससे मनुष्य मरकर अपने कर्म के अनुसार नारक, देव या तिर्यंच रूप में भी जन्म लेता हैं, ऐसा मानना चाहिए। उक्त वस्तुस्थिति का साधक अनुमान प्रमाण इस प्रकार है- जीवों का संसारीत्व नारकादि रूप में विचित्र है, क्योंकि वह विचित्र कर्म का फल कार्य है। जो विचित्र हेतु का फल होता है, वह विचित्र होता है। जैसे लोक में कृषि आदि विचित्र कर्म का फल दिखता है, इसी प्रकार कर्म की विचित्रता से भव में भी विचित्रता समझ लेनी चाहिए।

कर्म वैचित्र्य का कारण

सुधर्मा- कर्म की विचित्रता का क्या प्रमाण है?

महावीर- सौम्य ! कर्म यह पुद्गल का परिणाम है, अतः बाह्य अभ्र (मेघ) आदि विकार की तरह अथवा पृथ्वी आदि के विकार की तरह उसमें विचित्रता है। जो विचित्र परिणति वाला नहीं होता, वह अवकाश की तरह पौद्गालिक परिणाम रूप भी नहीं होता। पौद्गालिक परिणाम रूप होने से

यद्यपि कर्म के सभी परिणाम समान हैं, लेकिन कर्म में जो आवरण रूप विशेषता है, वह मिथ्यात्व आदि सामान्य हेतुओं एवं ज्ञानी जनों आदि के प्रद्वेषु, निह्नव आदि विशेष हेतुओं की विचित्रता के कारण हैं।

सुधर्मा- तो क्या इस भव जैसा परभव कभी भी सम्भव नहीं है ?

महावीर- यदि इस भव जैसा ही परभव मानना हो, तो भी जैसे इस भव में कर्म फल की विचित्रता दृश्य है, वैसे ही परभव में भी माननी चाहिये। अर्थात् इस भव में जीव शुभाशुभ विचित्र क्रिया करते हैं, विचित्र कर्म करते हैं, तद्नुरूप ही परभव में भी विचित्र फल मानना चाहिए।

सुधर्मा- आप जरा स्पष्टता से समझाने की कृपा कीजिये ।

महावीर- इस संसार में जीव विविध प्रकार से नाना प्रकार के कर्म बाँधते हैं। कोई नारक योग्य कर्म बाँधता है, तो कोई देव आदि गति योग्य । यह बात तो सभी को प्रत्यक्ष है। अब यदि परलोक में उस कर्म का फल उनको न मिलना हो, तो ऐसा कहा जा सकता है कि इस लोक में उन्होंने जैसी क्रिया की अथवा उनके कर्म की विचित्रता थी, वैसी ही उन जीवों की विचित्रता परलोक में होती है। इसलिए एक तरह से तुम्हारा कहना भी यथार्थ ही है कि जो इस भव में जैसा होता है, वह परलोक में वैसा ही होता है। अर्थात् जो इस भव में अशुभ कर्म बाँधता हो, वह परभव में भी अशुभ कर्म को ही भोगने वाला होता है। इस प्रकार जैसे को तैसा इस अर्थ में तुम्हारा न्याय कथन भी संगत बन जाता है।

कर्म का फल परभव में भी है

सुधर्मा- इस भव में ही जिसका फल मिलता है, ऐसे कृषि आदि कर्म ही सफल हैं, किन्तु दानादि कर्म जो परभव के लिए किए जाते हैं, उनका कुछ भी फल नहीं मिलता। अतः परभव में वैचित्र्य का कुछ भी कारण रहेगा नहीं, इससे जैसा इस भव में मनुष्यादि रूप में जीव हो, वैसा का वैसा परभव में भी जीव रहेगा। उसमें वैसे दृश्य को अवकाश नहीं है।

महावीर- ऐसा मानने पर तो उलटे जीव का परभव में सर्वथा सादृश्य जो तुम्हें इष्ट है, वह घटित ही नहीं होता, क्योंकि परभव में जीव की उत्पत्ति का कारण कर्म है, किन्तु वह कर्म या उस कर्म का फल तुम तो परलोक में मानते ही नहीं हो।

(क्रमशः) ■■■

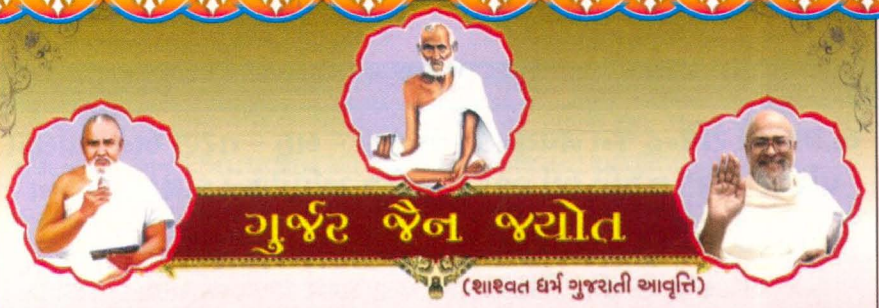

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,
ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

॥ श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेनसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री द्वारा 56 वर्ष पूर्व आलेखित

स्वर्णिम हस्ताक्षर

"परिषद् के माध्यम से हमें समाज में जागृति, क्रान्ति और गति लाना है। फिर चाहे इस काम में हमारा पूरा का पूरा जीवन ही हमें क्यों न समर्पित करना पड़े! इस के पूर्व हर प्रकार से सख्त सावधानी अपने आदर्शों की रक्षा की रखना होगी गांभीर्य हर बात को पचाने जितना प्राप्त करना होगा और समाज सेवा, समाजोन्नति के महा मंत्रों की साधना कर लेना होगी। तब ही कर्तव्य पथ पर प्रगति की जा सकती है।"

Jayant Raj Jemaran

पिपलोदा नगरे सकळ संघ - परिषद
परिवार द्वारा अलंकृत करायेल
युगनायक धर्म दिवाकर गच्छाधिपति
श्रीमद्विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा.ना
चरणोमां कोटी कोटी वंदन.

પિપલોદા નગરે...

અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક - મહિલા - બહુ - તરુણ અને બાલિકા પરિષદ હીરક જયંતિ વર્ષ ૨૦૧૯ રાષ્ટ્રીય અધિવેશન કાર્યક્રમ સંપન્ન

હું પરિષદમાં છું અને પરિષદ મારામાં છે - યુગનાયક ગચ્છાધિપતિ

વાચન વાચસ્પતિ, પિતામ્બર વિજેતા પરમ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજયયતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા સમાજમાં યુવાશક્તિનો ઉચિત ઉપયોગ થાય તેવી દીર્ઘ દૃષ્ટિથી તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના નામથી અ. ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદની સ્થાપના ૬૦ વર્ષ પૂર્વે કરી હતી અને ત્યારે સમાજની પરિસ્થિતિઓનું અવલોકન કરતાં પૂજ્યશ્રીએ ટીપ્પણી કરી હતી કે, ન જાણે કેમ ત્રિસ્તુતિક સમાજમાં સંસ્થાઓનું નિર્માણ થાય છે પણ વ્યવસ્થિત સંસ્થાઓ ચાલતી નથી. સમાજ પ્રત્યેની આ પૂજ્યશ્રીની પીડાને ઝીલી લઈ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ ગચ્છ અને પરિષદ માટે જીવનભર ઝઝૂમી જેનો વિકાસ એવો કર્યો કે વિશાળ આકારના રૂપમાં ઘડીને પરિષદને સમાજનું ઘરેણું બનાવી દીધું જેથી અત્યારે ૬૦ વર્ષ બાદ સ્થાપનાચાર્યનું સપનું સાકાર થઈ રહ્યું છે તે નજરે દેખાઈ રહ્યું છે.

દેવાધિદેવ પરમાત્માની અસીમ કૃપા, તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પરિષદ સંસ્થાપક પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા., પરિષદ પ્રાણદાતા, પિપલોદા પ્રતિષ્ઠા શિરોમણી પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન શ્વે. શ્રી સંઘ પિપલોદા ચાતુર્માસ મહોત્સવ સમિતિ ૨૦૧૯, વાટિકા ટ્રસ્ટ અને પરિષદ પરિવાર પિપલોદાના તત્વાધાનમાં અ. ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક/મહિલા/બહુ/તરૂણ અને બાલિકા પરિષદ હીરક જયંતિ વર્ષ ૨૦૧૯ રાષ્ટ્રીય સંયુક્ત અધિવેશનનો તા. ૯/૧૦ નવેમ્બર-૨૦૧૯ બે દિવસીય ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

તા. ૯-૧૧-૨૦૧૯ના રોજ સંયુક્ત રાષ્ટ્રીય અધિવેશનના પ્રારંભમાં ભોજન મંડપથી સવારે ૮-૩૦ કલાકે પ્રભાત ફેરીએ પ્રસ્થાન કરી વિરાટ સરઘસ રૂપમાં દાદાવાડી ખાતે પહોંચી હતી ત્યાં પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ દ્વારા ધ્વજારોપણ કરાયું હતું. સાથે-સાથે સંઘ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લેખક અને સાહિત્યકાર શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા, વરિષ્ઠ ઉપાધ્યક્ષ શ્રી ઓ.સી. જૈન,

શ્રી જે.કે. સંઘવી, પિપલોદા સંઘ અધ્યક્ષ શ્રી બાબુલાલજી ધીંગ વિગેરેએ શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ અને દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ફોટા પર માળારોપણ અને દીપપ્રજ્વલન કરી અધિવેશન કાર્યક્રમનો શુભારંભ કરાવ્યો હતો.

ચાતુર્માસ પ્રભારી શ્રી રાકેશજી જૈને સ્વાગત ઉદ્‌બોધન કર્યું હતું. ચાતુર્માસ સમિતિ અધ્યક્ષ શ્રી રાકેશજી જૈન (ઈન્દોર), વાટિકા અધ્યક્ષ શ્રી શૈલેન્દ્રજી કટારીયા, નવયુવક પરિષદ અધ્યક્ષશ્રી અશોજી બોહરાએ અતિથિઓનું સ્વાગત કરી બહુમાન કર્યું હતું. નવયુવક પરિષદ અધ્યક્ષ તપસ્વી રત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રીમતી અંગુરબાલા શેઠીયા, તરૂણ પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી કરણભાઈ મોરખીયાએ પોતપોતાની પરિષદની ઉપલબ્ધિઓ અને કરાયેલા કાર્યોની વિગત બતાવી હતી. ત્યારબાદ સંઘ મહામંત્રી લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લેખક અને સાહિત્યકાર શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા દ્વારા લેખિત પુણ્ય સમ્રાટ જીવન ચરિત્રગ્રંથનું વિમોચન કરાયું હતું. પિપલોદા શ્રીસંઘ અને પરિષદ પરિવારને ઐતિહાસિક ચાતુર્માસના સુંદર આયોજન માટે નવયુવક પરિષદ રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓ દ્વારા અભિનંદન પત્ર અર્પણ કરી સન્માનિત કરાયાહતા. સાથે-સાથે સંઘ અને પરિષદના મિડિયા પ્રભારી નાગદારત્ન શ્રી બ્રજેશજી બોહરા, શ્રી પેલેશજી મોરખીયા (અમદાવાદ-લવાણા) અને પત્રકાર શ્રી પ્રફુલજી જૈન દ્વારા રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈનું ધાર્મિક ક્ષેત્રે કરેલા ઉત્કૃષ્ટ કાર્યો માટે સ્મૃતિ ચિન્હ અર્પણ કરી બહુમાન કરાયું હતું.

મુનિરાજ શ્રી વિશ્વવદ્‌રત્નવિજયજી મ.સા.એ તેમના પ્રવચનમાં કહ્યું હતું કે, પરિષદના સંકલ્પોને પુરા કરવા માટે પુણ્ય સમ્રાટના વફાદાર સિપાહીના રૂપમાં પરિષદ પરિવાર કાર્ય કરી રહેલ છે. સાથે-સાથે કહ્યું કે યહી કોઈ વ્યક્તિને ઉંચાઈ પર પહોંચાડવી છે તો પગ ખેંચવાનું બંધ કરી હાથ ખેંચવાની શરૂઆત કરવી જોઈએ. તો જ સારા અને સાચા લોકો આગળ આવશે. સેવાભાવી મુનિરાજ ડો. સિધ્ધરત્ન વિજયજી, મુનિરાજશ્રી પ્રશમસેનવિજયજી, મુનિરાજશ્રી તારકરત્ન વિજયજી, મુનિરાજશ્રી નિર્ભયરત્ન વિજયજી મ.સા. તેમજ સાધ્વીજી શ્રી ભાગ્યકલા શ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા પાટ પર બિરાજમાન હતા.

બપોરે ત્રણે પ્રદેશોના અલગ-અલગ અધિવેશનના કાર્યક્રમો યોજાયા હતા. જેમાં સંઘના પરામર્શ દાતા રતલામ વિધાયક શ્રી ચૈતન્ય કાશ્યપે આતિથ્ય પ્રદાન કરવા સાથે તરૂણ અને મહિલા પરિષદને માર્ગદર્શન પ્રદાન કર્યું હતું. અધિવેશનમાં શ્રેષ્ઠ શાખાઓની ઉપલબ્ધિઓ અને કાર્યોની વિગત પ્રસ્તુત કરી પોતાની વાત મૂકી હતી. મહિલા અને તરૂણ પરિષદની શ્રેષ્ઠ શાખાઓને પુરસ્કૃત કરી બંને પ્રદેશોના પૂર્વ પદાધિકારીઓનો આભાર પ્રગટ કર્યો હતો. નવયુવક પરિષદ મહારાષ્ટ્ર પ્રદેશ અધ્યક્ષ

શ્રી મોહનલાલ ઢાલાવત, દક્ષિણ ભારતના અધ્યક્ષશ્રી બાબુલાલજી સેવાણી, મ.પ્ર. ઉપાધ્યક્ષ શ્રી મોહિતજી તાંતેડ, રાષ્ટ્રીય મહિલા પરિષદ મહામંત્રી પદમાબેન શેઠ, મહિલા પરિષદ પ્રદેશ અધ્યક્ષ પુષ્પાબેન ભંડારી, અમદાવાદ પરિષદ શાખા અધ્યક્ષ કંચનબેન અદાણી, તરૂણ પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રીપવનજી કટારીયા અને પ્રાંતિય પદાધિકારીગણ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

સેવાભાવી મુનિરાજ ડો. શ્રી સિધ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા.ના સાનિધ્યમાં ૯ નવેમ્બરના રોજ તરૂણ પરિષદનું અધિવેશન યોજાયું હતું. જેમાં પૂજ્યશ્રીએ તરૂણ પરિષદના કાર્યોને વેગ આપવા પ્રેરણા કરી હતી.

મહિલા પરિષદ અને તરૂણ પરિષદ શાખાઓના પ્રતિનિધિઓએ તેમની ઉપલબ્ધિઓને પ્રસ્તુત કરી હતી. સાંજે ૪ કલાકે મહિલા અને તરૂણ પરિષદની શ્રેષ્ઠ શાખાઓને પુરસ્કૃત કરવામાં આવી હતી. મહિલા અને તરૂણ પરિષદના પ્રદેશોના પૂર્વ પદાધિકારીઓનો આભાર વ્યક્ત કરવામાં આવ્યો હતો અને નૂતન પદાધિકારીઓની ઘોષણા કરવામાં આવી હતી. રાત્રે ૭ કલાકથી નવયુવક પરિષદનો 'અપનો સે અપની બાત' કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. આ કાર્યક્રમમાં સુચન પ્રસ્તાવ અને વિવિધ ચર્ચા કરવામાં આવી હતી. શાખાઓના પ્રતિનિધિઓએ પરિષદના હીતમાં કેટલાય સૂચન અને પ્રસ્તાવ મૂકી પોતાની વાત પ્રસ્તુત કરી હતી.

તા. ૧૦-૧૧-૨૦૧૯ના રોજ નવયુવક પરિષદના અધિવેશનનો સવારે ૧૦ કલાકે પ્રારંભ કરાયો હતો, જેમાં યુગનાયક ગચ્છાધિપતિશ્રીએ તેમના મુખકમળ દ્વારા ફરમાવ્યું હતું કે, ''હું પરિષદમાં છું પરિષદ મારામાં છે'' એટલે પરિષદના ઉપદેશ્યોની પૂર્તિ માટે નિરંતર કાર્ય કરતા રહો, પરિષદ અનુશાસનના પાઠ શીખવાડે છે. પુણ્ય સમ્રાટે જે સ્વપ્ન સેવ્યું હતું, તેને પુરૂં કરવા માટે સહુ સંકલ્પિત થઈ પોતાના કર્તવ્યનું નિર્વહન કરી કર્તવ્યવાન બને અને પરિષદને નિત નવા આયામ સુધી પહોંચાડી પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂ દેવના સ્વપ્નને સાકાર કરે.

તા. ૧૦ નવેમ્બરના બપોરના સત્રમાં રાષ્ટ્રીય સ્તર પર ધાર્મિક, જનકલ્યાણ અને વિવિધ કાર્યક્રમો માટે શ્રેષ્ઠ કાર્ય સંપાદિત કરવાવાળી શાખાઓને પુરસ્કૃત પ્રદાન કરવામાં આવ્યા હતા. આ સત્રમાં વર્તમાન પદાધિકારીઓ દ્વારા નિવૃત્ત પદાધિકારીઓનો આભાર વ્યક્ત કરવામાં આવ્યો હતો. તથા નૂતન પદાધિકારીઓની ઘોષણા કરી અધિવેશનના સમાપનની ઘોષણા કરવામાં આવી હતી. નવયુવક પરિષદ રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓ દ્વારા પિપલોદા શ્રી સંઘ અને પરિષદ પરિવારને ઐતિહાસિક ચાતુર્માસના સુંદર આયોજન માટે અભિનંદન પત્ર પ્રદાન કરી સન્માન કરાયું હતું.

સ્ટેજ સંચાલન રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી તપસ્વીરત્ન શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ અને શ્રી માલવ પ્રચાર મંત્રી શ્રી શાંતિલાલ ગોખરૂએ કર્યું હતું.

-: ઉદ્‌બોધન :-

શ્રી અરવિંદભાઇ દેસાઇ : ગુજરાત પ્રદેશ પરિષદ અધ્યક્ષશ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈએ કહ્યું હતું કે, ગુજરાત રાજ્યની તમામ શાખાઓ સમાજસેવા, માનવસેવા, ધર્મ સંસ્કાર, આચરણ વિનયવાન બનાવવા વિગેરે કાર્યોમાં સક્રિય રહે છે. રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ, મહામંત્રી તેમજ સમસ્ત પદાધિકારીઓની અનુમોદના કરું છું.

શ્રી વાઘજીભાઇ વોરા : સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાએ કહ્યું હતું કે, પૂ. યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજીએ ૬૦ વર્ષ પૂર્વે દૃષ્ટિ રાખી હતી કે, જે કાર્ય કરે તે યુવા એટલા માટે રાજેન્દ્ર નવયુવક પરિષદ નામ રખાયું હતું. શાશ્વત ધર્મ ને શ્રી જે. કે. સંઘવી અને શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢાએ મૂલ્યવાન યોગદાન આપ્યું છે. પરિષદ એટલે સમર્પણ, જીવન પર્યન્ત સમર્પણ સમાજને કંઈક આપે સેવા કરે એ જ પરિષદ.

યુગનાયક ગચ્છાધિપતિ અને વરિષ્ઠ મુનિરાજોની પ્રેરણાથી નાના-નાના મુનિરાજોને અભ્યાસ માટે મોકલવા જે અનુમોદનીય છે. આગામી સમયના જે રત્નો છે. ભરતભાઈ લાડુના કાર્યો અમદાવાદમાં પ્રેરણાદાયી છે. શ્રી રમેશભાઈ ધરૂના કાર્યો ગામ-ગામમાં સાધુ-સાધ્વીજીની સંયમયાત્રા કરવી અને સમ્યકજ્ઞાનમાં ૧૨૫૦ નાના બાળકોને તૈયાર કરાવ્યા છે તેમની સાથે અશોકજી અને ભરતભાઈના કાર્યો પણ અનુમોદનીય છે.

શ્રી પારસજી જૈન : પરિષદ ઉપાધ્યક્ષ ઉજ્જૈન વિધાયક પૂર્વ મંત્રી મ.પ્ર. સરકાર શ્રી પારસજી જૈને કહ્યું હતું કે, પરિષદના ચાર ઉદ્દેશ્યોમાં ધાર્મિક શિક્ષણનો વિશેષ ઉલ્લેખ કરવા માગું છું. પાટણ - અમદાવાદમાં મુનિ શિક્ષણ બાળકોનું અધ્યયન ઉલ્લેખનીય છે. પરિષદ કોઇક બાળકોને પાટણ ધાર્મિક અધ્યયન માટે મોકલે તો તે ધરોહર થશે. ઉજ્જૈનમાં જિનપૂજાનું વિશેષ આયોજન કરાયું. જેમાં સેંકડો બાળકોએ ભાગ લીધો છે. પિપલોદા સંઘનું ચાતુર્માસ અને આયોજન ઐતિહાસિક છે જે પ્રથમ પંક્તિમાં બેસવા યોગ્ય છે.

શ્રી રમેશભાઇ ધરૂ: પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂએ કહ્યું હતું કે, હું આજે મારા પદથી નિવૃત્ત થઈ રહ્યો છું. હું મારી ટીમના પ્રત્યક્ષ - અપ્રત્યક્ષ અવિનય માટે મિચ્છામિ દુક્કડમ્ માગું છું મને ગચ્છાધિપતિ, મુનિમંડળ, સાધ્વીજી મંડળનું ભરપુર માર્ગદર્શન મળ્યું છે. મને સહુનો સાથ અને સહકાર મળ્યો છે. હું સહુને એ જ નિવેદન કરૂં છું કે આપ વ્યક્તિ સમાચારની રાહ ન જુએ યદી પરિષદ વોટ્‌સઅપથી સુચના મળી ગઇ છે તો સૂચન માની લેવાનું છે. હું આપ સહુનો આભાર ધન્યવાદ જ્ઞાપિત કરૂં છું પદાધિકારીઓએ મીટીંગમાં આવશ્યક રૂપથી આવવું જોઈએ. શ્રી રમેશભાઈ ધરૂએ

ગુર્જર જૈન જ્યોતના સંપાદક સુરેશ સંઘવીની કદર કરી અભિનંદન પાઠવ્યા હતા.

શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ : પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રીશ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલે કહ્યું હતું કે, ગુરૂદેવે મને જવાબદારી આપી હતી તેનો જન્મ બડનગરમાં થયો હતો. મને સહુ તરફથી સ્નેહ વાત્સલ્ય મળ્યો છે. એક સંદેશ પર આપ સહુ ચાલી આવતા હતા. મને ગુરૂદેવ જે કાર્ય સોંપ્યું હતું એને મેં નિષ્ઠાપૂર્વક કર્યું છે, છતાં મારી વાણીથી દિલ દુભાયું હોય તો પૂજ્ય ગુરૂદેવ, રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓ, પ્રદેશ શાખા પદાધિકારીઓ અને પરિષદ સાથીઓ પાસે ક્ષમા માગું છું. હું પરિષદનો છું અને પરિષદનો રહીશ. મિચ્છામિ દુક્કડમ્.

જ્યારે શિક્ષામંત્રી શ્રી ભરતભાઈ વોરા, મુંબઈ પરિષદ તરફથી શ્રી નવીનભાઈ બલ્લુ, મહીદપુરા રોડથી શ્રી સંદીપજી ભંડારી, જાબુઆથી શ્રી સંજયજી મહેતા, કુક્ષીથી આશિષજી જૈન, દુધવા પરિષદ, દસઈથી શ્રી રાકેશજી, અમદાવાદથી વિશ્વ જયેશભાઈ વોરા (થરાદવાળા), ડો. કીશનલાલજી રાઠોડ, શ્રી મોહિતજી તાંતેડ, ઈન્દોરથી નિરજજી સુરાણા, મંદસોરથી શ્રી દિલીપજી, નાગદા જંક્શનથી શ્રી મનોજજી બાગરેચા, પારાથી શ્રી કમલેશજી કોઠારી, ઉજ્જૈનથી શ્રી વિરેન્દ્રજી ગોલેચા, રતલામથી શ્રી પ્રવિણજી સંઘવી, ડીસાથી શ્રી દર્શન શેઠ, જાવરાથી શ્રી સંજયજી ઘાડીવાલ, રાણાપુરથી શ્રી પવનજી નાહર, બડનગરથી શ્રી સાકેતજી ગિરીયા, શ્રી નરેન્દ્રજી, વિગેરેએ તેમની શાખા દ્વારા થયેલ કાર્યોની વિગત રજુ કરી વ્યક્તવ્ય આપ્યું હતું.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા અમદાવાદના અધ્યક્ષ થરાદ નિવાસી અમદાવાદ સ્થિત શ્રી ભરતભાઈ હીરાલાલ વોરા લાડુને પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ સપરિવારની નિશ્રા અને પ્રેરણાથી "વૈયાવચ્ચ સેવા પુરુષ"ની પદવીથી અલંકૃત કરાયા હતા. આ અધિવેશનમાં ઉપસ્થિત સમસ્ત સંઘો અને પરિષદ પરિવારે મૂક મોઢે શ્રી ભરતભાઈ (લાડુ)ની વૈયાવચ્ચ ભક્તિની અનુમોદના કરી હતી. પિપલોદા સંઘ, નાગદા સંઘ, પરિષદ પરિવાર દ્વારા શ્રી ભરતભાઈ લાડુનું ઉમળકાભેર તેમની ના હોવા છતાં બહુમાન કરાયું હતું.

તા.ક. : ગુર્જર જૈન જ્યોત ગુજરાતી વિભાગના કેટલાય વાંચક મિત્રોના ફોન આવ્યા હતા. તપસ્વીરત્ન શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ અને શ્રી રમેશભાઈ ધરૂની જોડી કેમ તૂટી ? તેના જવાબમાં જણાવીએ છીએ કે બંનેની જોડી તૂટી નથી છૂટી છે. શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલે પદ છોડ્યું છે, કાર્ય કરવાનું નથી છોડ્યું.... પરિષદ પ્રગતિ કે લિયે છ છ વર્ષ સે એક સાથ ચલ રહી જોડી તોડો તો ના તૂટે રમેશ અશોક કી જોડી....

શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલે તેમના મહામંત્રી પદ પરથી નિવૃત્ત થઈ નવનિયુક્ત રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુધિરજી લોઢાને પીન લગાવી વધાઈ અને શુભકામના પાઠવી હતી. શ્રી સુધિરજીએ ચરણ સ્પર્શ કરી આશીર્વાદ લીધા હતા.

પિપલોદા - પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધિવેશન દરમ્યાન

યુગનાયક પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી દ્વારા રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓની ઘોષણા

નવયુવક પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ : તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ

નવયુવક પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી : શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના ૬૦ વર્ષીય સેવા ભેખધારી લોઢા પરિવારના અત્યંત ઉત્સાહી શ્રી સુધિરજી લોઢા (મંદસોર) (લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લેખક અને સાહિત્યકાર આદરણીય શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢાના પુત્રરત્ન)

મધ્યપ્રદેશ પ્રાંતિય અધ્યક્ષ : શ્રી રાજેન્દ્રજી દંગવાડા (બડનગર)

મધ્યપ્રદેશ પ્રાંતિય મહામંત્રી : શ્રી ચિરાગજી ભંસાલી (રીંગનોદ)

દક્ષિણ ભારત પ્રદેશ અધ્યક્ષ : શ્રી બાબુલાલજી સેવાલી (બેંગ્લોર)

મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ : આશાબેન કટારીયા (જાબુઆ)

મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ : કૌશલ્યાદેવી વાગરેચા (કોઈમ્બતૂર)

મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી : રાખીબેન રાંકા (ઈન્દોર)

મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય સહમહામંત્રી: આસિતાબેન સંઘવી (સુરત-થરાદ)

મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય કોક્ષાધ્યક્ષ : પ્રેમાબેન (બેંગ્લોર)

તરૂણ પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ : રાજ દેસાઈ (મુંબઈ - થરાદ)

તરૂણ પરિષદ રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ : રાહુલ સકલેચા (ઉજ્જૈન)
દિપ દોશી (સુરત-થરાદ)

તરૂણ પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી : હર્ષ કટારીયા (પિપલોદા)

તરૂણ પરિષદ રાષ્ટ્રીય કોષાધ્યક્ષ : સપન લોઢા (ટાંડા)

પિપલોદામાં બે દિવસીય જ્ઞાનોત્સવ શિબિર સમાપન...
અભિયાન લાભાર્થી ઘરૂપરિવારનું બહુમાન
સમ્યક જ્ઞાન અભિવૃદ્ધિ યોજના ૨૦૨૦-૨૧ની ઘોષણા

યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. પરિવારની નિશ્રામાં પિપલોદા નગરે ચાલી રહેલ પાવનકારી ચાતુર્માસ દરમ્યાન નગરના શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ધામ પર આયોજિત બે દિવસીય જ્ઞાનોત્સવ શિબિરનો સમાપન કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ધામ પ્રચાર સચિવ શ્રી પ્રફુલજી જૈને જણાવ્યું હતું કે, જ્ઞાનોત્સવ શિબિરમાં અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા શ્રી યતિન્દ્ર જયંત જ્ઞાનપીઠના સહયોગથી સમ્યકજ્ઞાન અભિવૃદ્ધિ યોજનાના અંતર્ગત સૂત્ર સ્મરણ (કંઠસ્થ) અભિયાનમાં ઉત્કૃષ્ટ પ્રદર્શન કરવાવાળા સેંકડો બાળકોને પુરસ્કાર અને પ્રભુજીની અષ્ટપ્રકારી પૂજા કરવા માટેના ઉપકરણ પ્રદાન કરવામાં આવ્યા હતા. પુરસ્કાર પ્રાપ્ત કરેલ બાળકોના ચહેરા ખીલી ઉઠ્યા હતા. સાથે-સાથે શિક્ષક-શિક્ષિકાઓને સ્મૃતિ ચિન્હ અર્પણ કરી બહુમાન કરાયું હતું. આ પ્રસંગે પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી તપસ્વીરત્ન શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ, રાષ્ટ્રીય શિક્ષામંત્રી શ્રી ભરતભાઈ વોરા, રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ શ્રી રાજેન્દ્રજી ઢંગવાડા, મીડિયા પ્રભારી નાગદારત્ન શ્રી બ્રજેશજી બોહરા, શ્રી શાંતિલાલજી ગોખરૂ, શ્રી રાજેન્દ્રજી લુણાવત અને મહિલા પરિષદ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી પદમાનબેન શેઠ, કોષાધ્યક્ષ પારસમણીબેન મારવાડી, પ્રદેશ અધ્યક્ષ પુષ્પાબેન ભંડારી અને શિક્ષામંત્રી સંગીતાબેન પોરવાલ, ઉપાધ્યક્ષ રાનીબેન લોઢા, કોષાધ્યક્ષ માયાબેન લુણાવત વિગેરે અતિથિરૂપમાં ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. દરમ્યાન સમ્યક જ્ઞાન અભિવૃદ્ધિ યોજના ૨૦૨૦-૨૧નો લાભ થરાદ નિવાસી નડિયાદ સ્થિત શ્રીમતી કાંતાબેન બાબુલાલ લલ્લુભાઈ પરિવારના સંઘ રાષ્ટ્રીય સંગઠન મંત્રી શ્રી રમેશભાઈ વોરાએ લીધો હતો, તેની ઘોષણા કરવામાં આવી હતી. ત્યારબાદ ચાતુર્માસ સમિતિ અધ્યક્ષ શ્રી રાકેશજી જૈન (ઈન્દોર), વાટિકા અધ્યક્ષ શ્રી શૈલેષજી કટારીયા, શ્રી કૈલાસજી નાંદેચા, ચાતુર્માસ પ્રભારી શ્રી રાકેશજી જૈન, શ્રી રાજેશજી જૈન અને ચાતુર્માસ સચિવ શ્રી મુકેશજી રોયલ, મહિલા પરિષદ અધ્યક્ષ મંજુબેન બોહરા દ્વારા અભિયાન લાભાર્થીતપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ઘરૂ પરિવાર અને સમસ્ત અતિથિઓનું બહુમાન કરવામાં આવ્યું હતું. સાથે-સાથે રાષ્ટ્રીય અને પ્રદેશ નવયુવક પરિષદ તથા મહિલા પરિષદના પદાધિકારીઓ દ્વારા લાભાર્થીઘરૂ પરિવારનું બહુમાન કરાયું હતું. દરમ્યાન પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ ફરમાવ્યું હતું કે, ધાર્મિક પાઠશાળામાં બાળકોના ભવિષ્યનું નિર્માણ થાય છે. જે પ્રકારે મકાન બનાવવા પાયો મજબુત જરૂરી છે તે, પ્રકારે ધાર્મિક જ્ઞાન હોવું પણ અતિ આવશ્યક છે.

વ્યવહારિક જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી અનેક પદવીઓ તો પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. પરંતુ જ્ઞાનની પદવી પ્રાપ્ત કરવા માટે ધર્મની જાણકારી હોવી જરૂરી છે. ધર્મના પ્રત્યે જાગૃતિ લાવવા માટે પોતાના બાળકોને પાઠશાળામાં મૂકી સમાજને નવી દિશામાં લઈ જવાનું કાર્ય કરે.

મુનિરાજશ્રી વિધ્વદ્વરત્ન વિજયજી મ.સા.એ કહ્યું કે, માતા-પિતા અને પાલકની જવાબદારી હોય છે કે તે તેમના બાળકોને પાઠશાળામાં મોકલે અને તેને એ યોગ્ય બનાવે કે તે આવવાવાળા સમયમાં તેમની સેવા કરી શકે. વર્તમાન સમયમાં વૃદ્ધાશ્રમોની સંખ્યા નિરંતર વધી રહી છે એનું મુખ્ય કારણ બાળકોમાં ધાર્મિક શિક્ષણનું જ્ઞાન નથી હોતું. માતા-પિતા અને પાલક પોતાના બાળકોને સારા સંસ્કાર આપી સ્વયંનું ભવિષ્ય નક્કી કરે છે. શિબિરમાં રતલામ પાઠશાળામાંથી શ્રી આનંદ જૈન, સારંગીથી વિધિબેન તલસેરા, કુશલગઢથી શ્રી સંકેશ જૈન, ઈન્દોરથી શ્રી જૈનમ દ્વારા વિશેષ ધાર્મિક, પ્રસ્તુતિઓ રજુ કરાઈ હતી. પિપલીયા મંડીથી ૪૫ માસના આર્ય રક્ષિત શ્રી અનિલકુમાર આંચલિયાએ ભગવાન મહાવીરના જીવન પર આધારિત પ્રશ્નોના સચોટ જવાબ આપી જનમાનસના મન મોહી લીધા હતા. જેમને પદાધિકારીઓ દ્વારા સન્માનિત કરવામાં આવ્યા હતા. શિબિરમાં ૬૫ વર્ષીય અને બચપણથી પ્રજ્ઞાચક્ષુ શિક્ષકશ્રી સુશીલજી સિંઘવીએ તેમના ઉદ્‌બોધનમાં આયોજનની સરાહના કરી હતી, જેમનું પદાધિકારીઓ દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું. ઈન્દોર ગુમાસ્તાનગર પાઠશાળાની સંચાલિકા વિજયાબેન મોદી દ્વારા પાઠશાળાની ગતિવિધિઓની સુંદર ફાઈલ બનાવી રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓને અર્પણ કરી હતી. પદાધિકારીઓએ ઉક્ત ફાઈલ તેની સરાહના કરી હતી. દાદા ગુરૂદેવ અને પુણ્ય સમ્રાટની આરતી ઘરૂ પરિવાર દ્વારા ઉતારાઈ હતી. આ કાર્યક્રમનું સંચાલન શ્રી રાજેશજી બાગરેચા અને તરૂણ અધ્યક્ષ હર્ષ કટારીયાએ કર્યું હતું.

।। ધ્વજવંદન હેતુ પરિષદ ગીત ।।

ઝંડા ઉંચા રહે હમારા, જિન શાસન કા ભવ્ય સિતારા ।। ઝંડા ।।
જન ગણ આનંદ મંગલકારા, વિશ્વ વિધાયક હૈ મનોહરા ।। ઝંડા ।।
વિશ્વમૈત્રી સંદેશ પ્રચારા, અહિંસા પરમો ધર્મ હૈ પ્યારા ।। ઝંડા ।।
અમલ વિમલ હૈ જીવન સહારા, તન મન ધન અર્પણ હૈ સારા ।। ઝંડા ।।
પરમેષ્ઠીમય પૂજ્ય હમારા, જૈન ધ્વજ જગ મેં જયકારા ।। ઝંડા ।।
સૂરિ રાજેન્દ્ર ગુરૂ ગણધારા, જયંતસેન કરો ઉજિયારા ।। ઝંડા ।।

પરિષદ સંદેશ.... અહોભાગ્યમ...

વૈયાવચ્ચ ટીમની રચના કરે

સન્માનીય પરિષદજન... સાદર જય જિનેન્દ્ર....

શ્રમણ ભગવંતો - શ્રમણી ભગવંતો સંયમભાવથી ચાતુર્માસિક અનુષ્ઠાન સંપન્ન કરાવી શેષ કાળ માટે વિહારનો પ્રારંભ કરી દીધો છે. અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના સાથીઓનો પરિચય કાલાંતરથી ઉત્કૃષ્ટ વૈયાવચ્ચનો રહ્યો છે.

આપણે આ પરંપરાને ગતિમાન કરવા સાથે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની સદ્‌પ્રેરણાથી શાખા સ્તર પર વૈયાવચ્ચ ટીમની રચના કરવાની છે. સમસ્ત શાખા જલ્દીમાં જલ્દી વૈયાવચ્ચ ટીમની રચના કરવા સાથે શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતના વિહારમાં સેવાનું યોગદાન આપે.

વિહાર સેવા સાથે-સાથે અહોભાગ્ય સંયમી પધારે અભિયાન ઘેર-ઘેર ચલાવી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓને નવકારશી, ગોચરી, ઉકાળેલા પાણી, આહારનો લાભ લેવા આહવાન કરે. સંભવ હોય તો ધોવન પાણીનો પણ પ્રબંધ રાખે... ઉપાશ્રયોમાં સાધુ-સાધ્વીજીની સ્થિરતાની સમુચિત વ્યવસ્થા કરે... વિહારમાં સાથે ચાલી રહેલ સેવકના ભોજનનો ઉચિત પ્રબંધ કરે... સાધુ-સાધ્વીજીનો વિહાર કાળ પૂર્ણ થતાં સૂર્યોદય પછી પ્રારંભ કરે તેવો પ્રયાસ કરે.. દવા સહિત અન્ય ઉપયોગી સામગ્રીની વ્યવસ્થા કરે. ખાસ યાદ રાખવાનું છે કે, વૈયાવચ્ચ સેવામાં પંથ, ગચ્છ, સમુદાયનો ભેદભાવ રાખ્યા વગર સેવા કરવાની છે. વિહારની સુચના એક ગામથી બીજા ગામના શ્રાવકોને આપી રસ્તામાં કોઈપણ પ્રકારની અસુવિધા ન રહે તેનું ધ્યાન રાખવાનું છે.

સાથીઓ પુણ્ય સમ્રાટ દ્વારા પ્રદત્ કરાયેલ સંસ્કારો અનુરૂપ ઉત્કૃષ્ટ વૈયાવચ્ચ કરી પરિષદના ગૌરવમાં અભિવૃદ્ધિ કરવાની છે. જય રાજેન્દ્ર, જય જયંત... નિવેદક રમેશ ધરૂ અધ્યક્ષ, સુધિર લોઢા મહામંત્રી, અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ.

રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષના અંતરભાવ...

પરિષદ સાથી... જય જિનેન્દ્ર.

પરિષદ પ્રાણ પ્રણેતા પરમ પૂજ્ય પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના મુખારવિંદથી ઘોષિત અંતિમ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ રૂપમાં છ વર્ષ પૂર્ણ કરેલ છે. છ વર્ષનો કાર્યકાલ સફળતાપૂર્વક સંપન્ન થયો છે.

પુણ્ય સમ્રાટની અસીમ કૃપા અને આશિષ અને આપ સહુના સ્નેહ, સહયોગ અને સત્કારથી જે પણ કાર્યો થયા તેને ઐતિહાસિક અને અદ્‌ભૂતમાનવા સાથે સમય સમય પર તેની અનુમોદના કરવામાં આવી છે.પરિષદના પ્રત્યેક સાથી જ્યારે પરિષદના કાર્યોમાં સ્વયંને જોડી દે છે ત્યારે જો આવા સુવર્ણ અધ્યાય સૃજિત થઈ જ જાય છે તે માટે આપ સહુના હાર્દિક ધન્યવાદ... હાર્દિક આભાર.

પરમ પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શુભંકર પાવન આશિર્વાદ, આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને સમસ્ત મુનિભગવંતોની મંગલકામનાઓ અને સંઘ-પરિષદના વરિષ્ઠજનોના વિશેષ આગ્રહથી એકવાર પુનઃ આ નવીન સત્ર માટે પરિષદનું નેતૃત્વ મને સોંપવામાં આવ્યું છે. આવવાવાળા સત્રમાં આપણે સહુ એનાથી પણ સમર્પણની સાથે સેવાકાર્યોના નવા નવા આયામ પ્રદાન કરીએ અને પરિષદને સફળતાની નવી ઉંચાઈઓ પર લઈ જઈએ, પરિષદના સમસ્ત સાથી મૈત્રી અને સહુ અસ્તિત્વની સાથે પરિષદના પ્રગતિ માટેકાર્ય કરે એવા શુભ ભાવો સાથે આપ સહુથી સહયોગ-સહકારની અપેક્ષા રાખું છું, તેથી સહુના સામુહિક પ્રયાસોથી જિનશાસનની એક ગૌરવશાળી સંસ્થાના રૂપમાં પરિષદની ઓળખ કાયમ બની રહે.

- આપનો રમેશ ધરૂ

રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ.

શ્રી સુધિરજી લોઢાને હાર્દિક વધાઇ- શુભેચ્છા

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રીપદે આરૂઢ કરાયેલા તેજસ્વી પ્રતિભા ધરાવતા અત્યંત ઉત્સાહી વિદ્વાન લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લેખક, પ્રખર સાહિત્યકાર શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢાના પુત્રરત્ન

શ્રી સુધિરજી લોઢાને હાર્દિક વધાઇ સાથે શુભેચ્છા.

- શાશ્વત ધર્મ ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર

સુરેશ સંઘવી

સદ્‌ગુરુ સમર્પણમ્

મારા ગુરુ મહાન છે...

(ગતાંકથી ચાલું...)

(૧૦૬) ગુરૂની સાક્ષીમાં જ ધર્મ કરવો જોઇએ એ શાસ્ત્ર વચન છે.

(૧૦૭) ગુરૂની આજ્ઞા જીવંત હોય છે એનું પોસમોર્ટમ ક્યારેય ન કરવું જોઇએ.

(૧૦૮) ગુરૂ તત્વની આસાતના કરવાવાળા ને આ જ ભવમાં ફળ મળી જાય છે.

(૧૦૯) ગુરૂ જે પણ કરશે તે સારું જ કરશે તેવો વિશ્વાસ હોવો જોઇએ.

(૧૧૦) ગુરૂનું વચન મંત્ર તુલ્ય છે એના જપવાથી સિદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે.

(૧૧૧) ગુરૂ લાકડાની નાવ છે જે સ્વયં તરે છે અને બધાને તારે છે.

(૧૧૨) ગુરૂ માત્ર ભુલ બતાવતા નથી ભુલ સુધારે પણ છે.

(૧૧૩) ગુરૂની ભક્તિ તીર્થંકરોની ભક્તિ છે.

(૧૧૪) ગુરૂની આજ્ઞા નહીં માનવાવાળાનું પુણ્ય ક્ષીણ થઇ જાય છે.

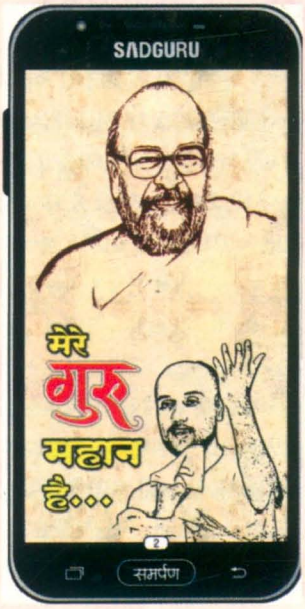

''જ્યોત સે જ્યોત જલે''

- ✳ બીજાના આંસુ પર મેળવેલું સુખ આજે નહિંતર કાલે આંસુ પડાવીને જ રહેવાનું છે એ સત્ય ક્યારેય ભૂલશો નહીં.
- ✳ ચાર જગ્યાએ વ્યવહારિક વાત ન કરવી. સ્મશાનમાં અગ્નિદાહ વખતે, બિમાર વ્યક્તિ પાસે, ભગવાનના જિનાલયમાં અને મહાપુરૂષો પાસે.
- ✳ દરેક સ્ત્રીને પોતાનો દિકરો શ્રવણ જેવો થાય છે તે ગમે છે, પરંતુ પોતાનો પતિ શ્રવણ જેવો થાય તે નથી ગમતું.
- ✳ રાખ્યું તે રાખ થયું - આપ્યું તે આપણું થયું.
- ✳ ડોક્ટર અને ભગવાનને ક્યારેય નારાજ ન કરવા જોઇએ. કારણ કે ભગવાન નારાજ થાય તો ડોક્ટર પાસે મોકલે છે અને ડોક્ટર નારાજ થાય તો ભગવાન પાસે મોકલે છે.
- ✳ માતા-પિતા આ પૃથ્વી પરના દેવ છે તેમની સેવા ન કરે તેની બીજી સેવા કોઇ દેવતા સ્વીકારતા નથી.
- ✳ અંધારી રાતે ભૂલા પડેલા નાવિકને દીવાદાંડી જેટલી ઉપયોગી થાય છે, તેટલો જ સેવાભાવી માણસ સમાજને ઉપયોગી થાય છે.

- નૈષધ દેરાશ્રી.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના આંગણે... જ્ઞાન-જ્યોત અભિયાન લક્કી ડ્રો કાર્યક્રમ સંપન્ન

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક મંડળ અમદાવાદ દ્વારા સંચાલિત પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સદ્‌ઉપદેશથી મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાની નિશ્રામાં ચાતુર્માસ દરમ્યાન જ્ઞાન-જ્યોતિ અભિયાનનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના દરેક શ્રાવક-શ્રાવિકા અને બાળકોને નીચે મુજબના સૂત્રો કંઠસ્થ કરવા માટે પ્રોત્સાહિત ઈનામની અને લક્કી ડ્રોનું આયોજન કરવાની જાહેરાત કરાઈ.

સંવત ૨૦૭૬ના કારતક વદ ૪ ને શનિવાર તા. ૧૬-૧૧-૨૦૧૯ના રોજ ડી. કે. પટેલ હોલ નારણપુરા અમદાવાદ ખાતે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક મંડળ સંચાલિત મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં સકળ સંઘની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે લક્કી ડ્રો ઈનામ વિતરણનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

આ પ્રસંગે સવારની નવકારશીનું આયોજન કરાયું હતું. મુનિરાજશ્રીના માંગલિક પ્રવચન બાદ વંદિતુસૂત્ર - સકલાર્હત સૂત્ર - અજિતશાંતિ સૂત્ર - અતિચાર સૂત્ર આ ચારેય સૂત્રને કંઠસ્થ કરનાર સ્વાધ્યાય પ્રેમીઓનો લક્કી ડ્રો કરાયો હતો, જેમાં (૧) કાજલબેન ચેતનભાઈ શાહ - ૭ ગ્રામ ગોલ્ડ (૨) ગુણીબેન ભરતભાઈ ભણસાળી - ૬ ગ્રામ ગોલ્ડ (૩) અદિતિ શાલિકભાઈ શાહ - ૩ ગ્રામ ગોલ્ડ (૪) મોનિકા ઋષભકુમાર શાહ - ૨ ગ્રામ ગોલ્ડ (૫) માહી નિકેશભાઈ દેસાઈ - ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ (૬) જીજ્ઞા વિજયભાઈ બલ્લુ - ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ (૭) હેતલ પિયુષભાઈ શાહ - ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ (૮) વર્ષાબેન નરેશભાઈ શાહ - ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ (૯) મીનાબેન ચંપકલાલ વોરા - ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ (૧૦) કુશલ વિજયભાઈ શેઠ ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ (૧૧) અંકિતા હિતેશભાઈ શાહ - ૧ ગ્રામ ગોલ્ડ. આ અગિયાર ભાગ્યશાળી સ્વાધ્યાય પ્રેમીઓનું ઉક્ત ઈનામ અર્પણ કરી બહુમાન કરાયું હતું. જ્યારે ૫ થી ૧૦ વર્ષ સુધીના બાળકોનો સ્પેશ્યલ લક્કી ડ્રો કરાયો હતો, જેમાં (૧) વોરા દીક્ષી પારસભાઈ - રૂ।. ૧૧૦૦૦/-, (૨) અદાણી યાત્રી અજયભાઈ - રૂ।. ૫૧૦૦/-, (૩) મોરખીયા યશ્વી રમેશભાઈ - રૂ।. ૪૧૦૦/- ઈનામ અર્પણ કરી બહુમાન કરાયું હતું.

અતિચાર સૂત્ર કંઠસ્થ કરનાર ૪૦૦થી વધુ સ્વાધ્યાય પ્રેમીઓને

રૂા. ૧૧૦૦/-નું કવર આપી પ્રોત્સાહિત કરાયા હતા. વંદિતુ સૂત્ર રૂા. ૨૦૦/-, સકલાર્હત સૂત્ર રૂા. ૪૦૦/-, અજિત શાંતિ સૂત્ર - ૭૦૦/- કંઠસ્થ કરનાર સ્વાધ્યાય પ્રેમીઓને ઉક્ત પ્રોત્સાહિત ઈનામોનું વિતરણ કરાયું હતું. આ આયોજનનો સમસ્ત લાભ વોરા મથુરીબેન ચીમનલલ ત્રિભોવનદાસ પરિવારે લીધો હતો.

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) દ્વારા સંચાલિત અમદાવાદ ખાતેની કાર્યરત દરેક પાઠશાળાની ખંતપૂર્વક મુલાકાત લઈ ધાર્મિક વિદ્યાર્થીઓને પ્રોત્સાહન આપતા શ્રી વાઘજીભાઈ ગગલદાસ વોરા (વિશ્વાસ)ની અ.ભા. શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાએ ભૂરી ભૂરી અનુમોદના કરી હતી. અનંત પુણ્ય ઉર્પાજન કરતા આ આયોજનના લાભાર્થીપરિવારનું બહુમાન કરાયું હતું. જ્ઞાન-જ્યોત અભિયાનના આ આયોજનથી અમદાવાદ નગરના ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના દરેક ઘરોમાં અબાલવૃદ્ધોના કંઠે ઉક્ત મહામંગલકારી સૂત્રો ગુંજતા થઈ ગયા છે. ઉલ્લેખનીય છે કે અમદાવાદ નગરે ધાર્મિક સ્વાધ્યાય કરી રહેલ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના અભ્યાસનો આર્થિક લાભ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) લઈ રહેલ જે આ વર્ષનો તમામ લાભ શાંતાબેન બાબુલાલ વીરવાડીયા પરિવારે લીધો છે.

જ્ઞાન-જ્યોત અભિયાનમાં જોડાયેલા અને લક્કી ડ્રોમાં બીજા ક્રમે વિજેતા પામેલ શ્રીમતી ગુણીબેન ભરતભાઈ ભણસાળીએ છ ગ્રામ સોનુ શ્રી શત્રુંજય તીર્થ શ્રી આદિનાથદાદાને અર્પણ કરવા માટેની ભાવના પ્રગટ કરી હતી.

મોટેરાથી શાંતિગ્રામની એક દિવસીય છઃરિપાલિત ચૈતત્યપરી પાટી યોજાઇ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીમુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા., આદિઠાણા - ૭ તથા સાધ્વીજી શ્રી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં અદાણી શાંતાબેન શાંતિલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવાર દ્વારા રાજેન્દ્રનગરે મોટેરાથી શાંતિગ્રામની એક દિવસીય છઃરિ પાલિત ચૈત્યપરી પાટીનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૬ના કારતક વદ ૫ ને રવિવાર તા. ૧૭-૧૧-૨૦૧૯ના રોજ રાજેન્દ્રનગર મોટેરા સ્થિત શ્રી વાસુપૂજ્ય સ્વામીના જિનાલયથી ૫૦૦થી વધુ યાત્રિકો

અને આમંત્રિત મહેમાનોની ઉપસ્થિતિમાં સવારે ૫ કલાકે વાજતે-ગાજતે જય જયકારના નારાઓ સાથે શાંતિગ્રામ જવા છ:પરિ પાલિત ચૈત્યપરી પાટીએ પ્રસ્થાન કર્યું હતું. આ છ:રિપાલિત ચૈત્યપરી પાટીમા આયોજન પરિવાર સહિત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના અધ્યક્ષ તથા ટ્રસ્ટીગણો જોડાયા હતા અને ઉમંગભેર સવારે ૯-૩૦ કલાકના સુમારે શાંતિગ્રામ સ્થિત શ્રી આદેશ્વર ભગવાનના જિનાલયે પહોંચી યાત્રિકોએ દર્શન-વંદન સેવા-પૂજા કરી ધન્યતા અનુભવતી હતી. મુનિરાજ ભગવંત દ્વારા વ્યાખ્યાન અપાયું હતું. ૫૦૦થી અધિક યાત્રિકોએ એકાસણા કર્યા હતા. એકાસણા તથા આમંત્રિત મહેમાનો માટે સવારની નવકારશી અને બપોરના જમણની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઇ હતી. મોટેરા જૈન સંઘ તરફથી શ્રી રજનીકાન્ત છોટાલાલ અદાણી અને શ્રી અલ્પેશભાઈ અદાણી દ્વારા આયોજક પરિવારના વડીલ શ્રી મહાસુખભાઈ અદાણીને શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ભગવાનની પ્રતિમા ભેટ રૂપે અર્પણ કરાઇ હતી.યાત્રિકોને પરત આવવા વાહનની વ્યવસ્થા પણ કરાઇ હતી.અને છ:રિપાલિત ચૈત્યપરી પાટીમાં સામેલ સહુને ૩।. ૧૦૦ની પ્રભાવના દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું. આમ આ એક દિવસીય છ:રિપાલિત ચૈત્યપરી પાટી સુખરૂપ સંપન્ન થઈ હતી.

શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા દ્વારા લેખિત પુણ્ય સમ્રાટ જીવન ચરિત્ર ગ્રંથ તથા શ્રી અનિલજી જૈન દ્વારા પ્રકાશિત મૈં ઔર મેરે ગુરૂદેવ પુસ્તિકા

વાચંવા અને વસાવવા જેવા પુસ્તકો

તાજેતરમાં પિપલોદા ખાતે યોજાયેલ બે દિવસીય અધિવેશન દરમ્યાન વિદ્વાન લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લેખક, પ્રખર સાહિત્યકાર શાશ્વત ધર્મ સંપાદક શ્રીમાન સુરેન્દ્રજી લોઢાની કલમે લખાયેલ પુણ્ય સમ્રાટ જીવન ચરિત્ર (હિન્દી) દળદાર અંકનું વિમોચન કરાયું હતું. જેમાં પુણ્ય સમ્રાટનું અક્ષરસ જીવન અંકિત કરાયું છે. જે પુણ્ય સમ્રાટના ભક્તોએ વાંચવા જેવો અને વસાવવા જેવો ગ્રંથ છે.

જ્યારે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. પર અતૂટ આસ્થા - શ્રદ્ધા ધરાવતા અલિરાજપુર નિવાસી (મ.પ્ર.) નવકાર મંત્ર આરાધક શ્રી અનિલજી જૈને પુણ્ય સમ્રાટ પ્રત્યે રહેલી આસ્થા-શ્રદ્ધાનો ધોધ વહેવડાવી **''मैं और मेरे गुरूदेव''** નામક પુસ્તિકા પ્રકાશિત કરેલ છે. પુણ્ય સમ્રાટ ભક્તોએ મંગાવી વાંચવા જેવી છે. જેના પરથી પુણ્ય સમ્રાટના પ્રભાવની જાણકારી પ્રાપ્ત થઈ શકે.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના

૮૪માં જન્મોત્સવ પ્રસંગે અર્પણ

ગુરૂ ગુણ સ્મરણમ્ – ૧

રચના : પ.પૂ. પુણ્ય સમ્રાટ શ્રીમદ્ વિજય જયન્તસેન સૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્ય
પૂ. મુનિ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.

(રાગ : છે મુજને તમન્ના)

મારા જીવનના હતા એ સુકાની
ગુરૂ વિના હૃદય સૂનું, સૂનું આ જીવન
''જયન્તસેન સૂરિજી'' પુણ્ય પ્રભાવી
ગુણોથી ભરેલું હતું ગુણ ઉપવન... મારા જીવનના...

હસતું એ મુખડું સદા સહુને ગમતું
ભક્તોનું હૈયું અહોભાવે નમતું
ગુરૂવરનું દર્શન હતું મનભાવન
લાખોએ માન્યા હતા જેને ભગવન્... મારા જીવનના...

જિનશાસનના રાજા ગુરૂવર
''ગુરૂ રાજેન્દ્ર''ના યશસ્વી પટ્ટધર
ત્રિસ્તુતિક સંઘનું કર્યું તમે રક્ષણ
શાસનને કર્યું જીવન આખું અર્પણ... મારા જીવનના...

ઉપકારો કદી ના ભૂલાશે
''પુણ્ય સમ્રાટ'' આ યુગના કહેવાશે
ઇતિહાસ જેનો એવો લખાશે
પળ-પળ સકળ સંઘ કરશે ઋણ સ્મરણ... મારા જીવનના...

માટી હતો હું, એ હતા કુંભકાર
મુજને ઘડનારા હતા શિલ્પકાર
મારા જીવનનું કર્યું જેને સર્જન
''નિપુણ'' કરે ગુરૂવરને પૂર્ણ સમર્પણ... મારા જીવનના...

श्री संघ सौरभ

भूमिपूजन व शिलान्यास

बीजापुर। श्रुतप्रभावक मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. आदि गुरु भगवंत की निश्रा में शांतीलाल परखचंदजी छोगाजी पालरेचा (ओसवाल), सियाणा- बीजापुर द्वारा विनिर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, राजेन्द्र हेरीटेज के प्रांगण में श्रमण-श्रमणी उपाश्रय, धर्मशाला- यात्रिक भवन, भोजनशाला का भूमिपूजन-शिलान्यास एवं गुणानुवाद सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्यपाद आचार्यदेव श्री जयघोष सूरीश्वरजी म.सा. की गुणानुवाद सभा का भी आयोजन किया गया।

मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. ने पूज्यश्री के गुणगान करते हुए फरमाया की महापुरुष दुनिया की नजरों से बना जाता है। आदमी बड़ा बनने के लिए अनेकानेक बड़े काम करता और कल्याणकारी काम करने वाले व्यक्ति को दुनिया बड़ा बनाती है।

कई प्रतिभावान आचार्य भगवन को पूज्यश्री ने मार्गदर्शन दिया और कई साधु-साध्वीजी को जीवन की श्रेष्ठता तक पहुंचाने का प्रयास किया। मध्यरात्रि तक शास्त्र अभ्यास में मग्न रहते थे। शासन के प्रति विचारशील रहते थे।

इस पावन प्रसंग पर पू.आ. श्री कीर्तियश सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पू. गणिवर्य श्री ज्ञानयश विजयजी म.सा. भी पधारे।

पाटण में साध्वीजी के पारणे में पधारे विभिन्न समुदायों के श्रमण- श्रमणिवृन्द

पाटण। पंचासरा पार्श्वनाथ जैन मन्दिर के निकट स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा की शुभ निश्रा में साध्वीजी रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा. का 500 आयम्बिल तप का पारणा सानन्द सम्पन्न हुआ। पारणे के पूर्व तप अनुमोदनार्थ कार्यक्रम त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से आयोजित किया गया, जिसमें जैन शासन के 10 समुदाय के श्रमण-श्रमणि भगवन्त पधारे। सभी श्रमण-श्रमणि भगवन्तों ने तपधर्म की महिमा का महत्त्व बताते हुए उपस्थित श्रद्धालुओं को प्रवचन प्रदान किया।

प्रवचन के पश्चात् त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में दादा गुरुदेव एवं पुण्य-सम्राट की आरती की गई। इस अवसर पर सभी समुदाय के गुरुभक्त उपस्थित थे।

आठ वर्षीय काव्य का केशलोच

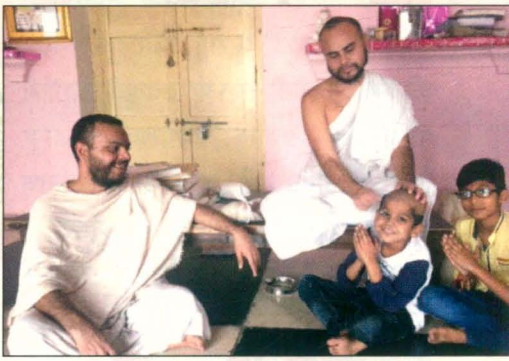

सरधाना। चौक बाजार स्थित श्री सुमतिनाथ जिनालय में मुनिश्री संयम रत्नविजयजी तथा मुनिश्री भुवनरत्न विजयजी के चातुर्मास के दौरान मुनि श्री संयमरत्नविजयजी की वर्धमान तप की 39 वीं ओली के अनुमोदनार्थ पहली बार सरधाना निवासी श्रीमती अनुदेवी पंकज कुमार जैन के 8 वर्षीय सुपुत्र काव्य जैन ने केशलोच करवाया। केशलोच कराने से छः माह के उपवास का लाभ मिलने के साथ ही अपने भीतर सहनशक्ति व प्रभुभक्ति बढ़ती है।

खीर एकासना के साथ लब्धिनिधान श्री गौतम स्वामी की आराधना सम्पन्न हुई, खीर एकासना का लाभ ओमप्रकाश, सुखमाल, आशा व अंकित जैन परिवार ने लिया। 12 नवंबर कार्तिक पूर्णिमा को प्रातः 7.30 बजे श्री सिद्धाचल भाव यात्रा श्री सुमतिनाथ जिनालय में सम्पन्न होने के पश्चात् प्रातः 9 बजे मुनिद्वय श्री का चातुर्मास परिवर्तन हुआ।

गच्छाधिपति श्री की निश्रा में पुण्य सम्राट की मासिक पुण्यतिथि के अवसर पर पाँच दिवसीय पचांह्निका महोत्सव के द्वितीय दिवस नगर के श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर झंडा चौक पर महिला परिषद द्वारा विधि विधान से भगवान महावीर स्वामी की महापूजा की गई साथ ही नित्य धार्मिक अनुष्ठान हुए। जिसमें महिलाएँ व परिषद परिवार उपस्थित थे।

भरतपुर नगर से त्रिस्तुतिक जैन श्वे. श्री संघ के सदस्य श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा हेतु पिपलौदा नगर में विराजित गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिजी म. से मुहूर्त लेने पहुंचे। पूज्य गच्छाधिपति श्री ने सरधना शहर में चातुर्मास विराजित मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी को आज्ञा प्रदान करते हुए प्रतिष्ठा कराने हेतु माघ सुदी तेरस का शुभ मुहूर्त व वासक्षेप भरतपुर श्रीसंघ को प्रदान किया।

श्रेष्ठता के पुरस्कार

1. सर्वश्रेष्ठता (श्री भंवरलालजी छाजेड़ पुरस्कार)- पिपलौदा शाखा (2) श्रेष्ठता का प्रथम विजयाबेन बच्चुलाल चिमनलाल धरू पुरस्कार - राजगढ़, धार शाखा, (3) श्रेष्ठता का द्वितीय (श्रीमती बबीबेन चुन्नीलाल नागरदास अदाणी पुरस्कार- सुरत गुजरात , (4) श्रेष्ठता का तृतीय पुरस्कार- अहमदाबाद व राणापुर (म.प्र.), शाखा, (5) पुण्य सम्राट उत्कृष्ट शाखा (श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद म.प्र. द्वारा) जावरा (म.प्र.) शाखा, (6) वैय्यावच्च का (श्रावक रत्नश्री रतनलालजी श्रीश्रीमाल पुरस्कार) अहमदाबाद, गुजरात शाखा, (7) रचनात्मक कार्यों के लिए (श्री अशोकजी कश्यप पुरस्कार) पारा (झाबुआ), शाखा, (8) प्रचार प्रसार- श्री बृजेश बोहरा नागदा (म.प्र.), शाखा, (9) श्री ज्ञानपीठ ज्योति पुरस्कार - जावरा (म.प्र.) शाखा, (10) शाखा कार्यों के लिए (श्री तगराजजी हिराणी पुरस्कार)- मुंबई शाखा, (11) व्यक्ति लेखन (जीतमलजी हीराणी पुरस्कार) श्री प्रफुल्ल जैन पिपलौदा शाखा, झाबुआ (म.प्र.) शाखा, (13) जीवदया केसरीमल रांका पुरस्कार) धार (म.प्र.) शाखा, (14) सर्वाधिक उपस्थिति (सौभाग्यमल सेठिया पुरस्कार) जावरा (म.प्र.) शाखा, (15) अहिंसा (श्रीमति कंचनबाई आर.पी. चेरीटेबल ट्रस्ट) बंगलोर शाखा, (16) सर्वाधिक सामायिक (अहमदाबाद परिषद्, पुरस्कार) बड़नगर (म.प्र.) शाखा, (17) पर्यावरण (श्री सागरमल मोतीलाल दसेड़ा, पुरस्कार) अंजड शाखा, (18) धार्मिक शिक्षा (श्री जे.के. संघवी पुरस्कार) डीसा (गुज.) शाखा, (19) केन्द्रीय कार्यालय सम्पर्क (श्री राजमलजी लोढ़ा पुरस्कार),न ागदा (म.प्र.) शाखा, (20) श्री सम्यग ज्ञान अभिवृद्धि योजना का श्रेष्ठ पुरस्कार श्रीमती संगीता विनोद पोरवाल।

'मार्ग भक्ति का, मंजिल मुक्ति की' प्रश्नावली के परिणाम

दाधोल। पुण्यसम्राट प.पू. जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रचित स्तवन विवेचन पुरस्कार 'मार्ग भक्ति का मंजिल मुक्ति की' पर आधारित प्रश्नावली के निर्णय साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म. की प्रेरणा से संयोजिका - सा. रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा. द्वारा घोषित किये गये।

प्रथम श्रेणी- 1. नीतू जोगानी मुंबई (94), 2. रेखा पारख निम्बाहेड़ा (94), 3. सीमा जेठमलजी मेहता भीनमाल (94), 4. शोभनाबहन हर्षदभाई शाह नडीयाद (94), 5. सुशीलाबहन शांतिलालजी सुराणा जावरा (94)।

द्वितीय श्रेणी- 1. अनिता संजय कुमार संघवी उज्जैन (93), 2. सोनाली दिलीपजी जैन धार (93), 3. ओजस्वी पंकजी जैन, उज्जैन, 4. ज्योति रूपेशजी जैन, जावरा (93), 5. कल्पना विकासजी व्होरा बदनावर (93), 6. ज्योति भुपेन्द्रजी शाह मुंबई (93), 7. निरूबेन हँसमुखजी शाह बडोदा

(93), 8. अमृता प्रियंककुमारजी श्रीमाल इंदौर (92), 9. स्वीटी आशीष कुमार जैन, राजगढ़ (92), 10. पिंकी शैलेषजी जैन, मुंबई (92)।

तृतीय श्रेणी– 1. प्रीति सकलेचा- उज्जैन (91), 2. क्रिंजल अश्विनजी जैन -कुक्षी, 3 उर्मिला राजेन्द्र कुमारजी संघवी-कुक्षी, 4 मधु प्रकाशचन्द्र खिमेसरा -खाचरौद (91), 5. पलक धर्मेन्द्रजी जैन -भीवाड़ी (91), 6. अशोकजी जैन- रतलाम (91), 7. सोनम जैन -रतलाम (91), 8. वर्षाबेन विपीनचन्द्रजी जैन- मुंबई (91), 9. श्रीमती सपना सन्नीजी जैन, -मुंबई, 10. विमलाबेन दिनेशभाई शाह - मुंबई (91), 11. आदित्य धोका -धार (90), 12. रेखा ज्योतिन- मरचन्ट कांदीवली वेस्ट मुंबई (90), 13. अमिता दिलीपकुमारजी जैन- राजगढ़ (90), 14. हीना बेन- ऐन वोरा, - राजकोट (90), 15. प्रदीप तेजसिंहजी डांगी- गोरेगांव मुंबई (90), 16. भारती चन्द्रकान्त डोशी- घाटकोपर ई-मुंबई (90), 17. दीपीका बेन पंकजभाई मोरखीया- मुंबई (90), 18. सोनाली पंकजकुमार गोरी -नीमच (90), 19. सिद्धि जैन - बदनावर (90), 20. शोभना श्रेणिकजी सुराणा- जावरा (90), 21. कृतिका आंचलिया-उज्जैन (90), 22. मंजु उत्तमजी भंडारी - विजयवाड़ा (90), 23. अलका सिंघवी- भीलवाड़ा (राज.) 24. मिना सकलेचा- बड़ावदा (90), 25. स्नेहलता माणकलालजी नागोरी- नीमच (89), 26. अंगुरबाला मेहता- उज्जैन (89), 27. ममाया सुमतिलाल छजलानी- महिदपुर (89), 28. कृति अक्षय राठोर- नीमच (89), 29. बबीता जैन हरियाणा -पंचकुलानगर (89), 30. अंजु जैन - चंडीगढ़ (89), 31. प्रभा फुलचंद भंडारी- नागदा (89), 32. मयुरी अमित जवेरी - मुंबई (89), 33. प्रीति जैन- अलीराजपुर (89), 34. प्रेमलता जैन- इंदौर, 35. सम्पत मुकुट ताल्लुकदार-बैंगलोर (89), 36. ममता कोकरिया- नालाधार (89), 37. संगीता संजय खाबिया - उज्जैन (89), 38. स्वीटा चण्डालिया रतलाम (89), 39. दीप्ती संघवी- उज्जैन (89), 40. शीतल अमित कांकरिया- नागदा (89), 41. अमिता महेशजी सकलेचा- बड़ावदा (89), 42. मनीषा जैन- वाडेरा विजयवाड़ा (89), 43. जयणाजैन - बड़नगर - उज्जैन (88), 44. चन्दनबाला नरेन्द्रकुमार लुणावत- महिदपुर सीटी (88), 45. जैनी अरविंद जैन - धार (88), 46. जी.सी. गोखरू - धार (88), 47. तृप्ति राहूल जैन (88), 48. गीताबेन दिनेशभाई वोरा (88), 49. प्रकाश मफतलाल वोहरा- मुंबई (88), 50. नीलु संजय गिरिया- उज्जैन (88), 51. स्मृति विनय जान- अलिराजपुर (88), 52. प्रिया राजेन्द्र पगारिया- उज्जैन (88), 53. साधना राजेश बाफना बड़ावदा (88), 54. भारती बेन रमेशकुमार मेहता, मुंबई (88), 55. कीर्ति राजेश कुमार जैन- उज्जैन (88), 56. मोनिका सुरेन्द्रकुमार छाजेड़- निम्बाहेड़ा (88), 57. कीर्ति संघवी- चैन्नई (88), 58. सुशीला छाजेड़- भीलवाड़ा (88), 59. परली नितेशजी जैन- धार (88), 60. जयंतवी छेड़ा थाणे- मुंबई (88), 61. विमला सिरोदिया- निम्बाहेड़ा (88), 62. वर्षा अभिनव चौधरी - दिल्ली (88), 63. विनीता मारवाड़ी- जावरा (88), 64. शशि कांठेड़ - नागदा (88), 65. विजयबाला विजयकुमारजी जैन- धार (88), 66. सरोज गिरिया - बड़नगर (88), 67. कुसुमलता जैन- बाग जिला- धार (88), 68. रानी सचिनजी भीलीवाल - धार (88), 69. पिंकी संदीप जैन- कुक्षी (88), 70. सुशीला मोदी - खाचरौद (88)।

प्रश्नावली के उत्तर

प्रथम वर्ग–1. चक्रवर्ती की पट्टरानी (67), 2. श्रवणभक्ति -10, 3. निमित्त -43, 4. नीलागुहा- 1, 5. बहिरात्मा-31, 6. समरादित्य-53, 7. आत्म निवेदनभक्ति-17, 8. पदस्थ ध्यान-12, 9. आसक्ति 46, 10. चांडालचौकड़ी-41।

द्वितीय वर्ग–1. कंडरिकमुनि-66, 2. वृतिसंक्षययोग-36, 3. अध्यात्म-34, 4. सावधान-69, 5. स्थिरादृष्टि-25, 6. अस्तित्व, द्रव्यत्व, ज्ञेयत्व-36, 7. ध्यानयोग-35, 8. मुनि के चरणों-65, 9. रोगों के घर-40, 10. धर्ममाता- 52।

तृतीय वर्ग–1. इन्द्र, 2. गणधर, 3. समृद्धि, 4. अर्चन, 5. नमुत्थुणं, 6. जुड़ना, 7. आठ, 8. सद्दृष्टि, 9. कृष्ण, 10. सुग्राम।

चतुर्थ वर्ग–1. मेघमाली, 2. संगम, 3. सागरदत्त, 5. रूपसेन, 6. सुमित्र, 7. कुमारपाल, 8. राजेन्द्रसूरि, 9. मुनिसुव्रत स्वामी, 10. महावीर स्वामी।

पंचम वर्ग–1. बहिरात्मा, 2. आत्मा, 3. पुद् गलास्तिकाय, 4. हिरण, 5. समतायोग, 6. अग्नि, 7. मानव, 8. स्मरण, 9. भावपूजा, 10. जन्म।

षष्ठम वर्ग–1. परिभ्रमण-21, 2. अशुचिमय-23, 3. असाधारण-36, 4. रक्षणहार-58, 5. अभयदशा-46, 6. मानसजाप-12, 7. परमाधामी-21, 8. मासक्षमण-53, 9. देशविरति- 44, 10. अवगाहन- प्राक्कथन।

सप्तम वर्ग–1. 1966090 निगोद के भव-20, 2. 65 अध्यात्म कल्पद्रुम-67, 3. 7 भय-45, 4. 2039 विजयवाडासंघ-2, 5. 1823 भाष्य लोक- 44

अष्टम वर्ग– (A) दमन मदन; आम; निम; मन- आत्मनिवेदन, (B) ससुर; धार; सुत; सुधा सरसु- शांतसुधारस, (C) मति; शम; रति; शर; प्रति-प्रसमरति, (D) भवन; वदन; पाद; सेवन; नभ- पादसेवनभक्ति।

---

* **रानापुर।** श्वेताम्बर जैन समाज की श्राविका अर्चना दिनेश कटारिया महामृत्युजंय तप की कठिन तपस्या पूरी की। इस दौरान 31 दिन तक उन्होंने निराहार रहते हुए केवल गर्म जल का उपयोग किया। तपस्वी की शोभायात्रा निकाली गई। अनेक सामाजिक संगठन ने उनका बहुमान किया। बहुमान सभा उनके निवास पर हुई। पूजा कटारिया, शिल्पा कटारिया ने 'वंदन है अभिनन्दन है' तपस्वी का गीत गाया। परिषद के शाखा अध्यन पवन नाहर ने श्री संघ 'हरषे आज, तपस्या का देखो ठाठ गीत' सुनाकर अनुमोदना की। श्री संघ अध्यक्ष दिलीप सकलेचा, सुरेश समीर, अभा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री पदमा सेठ, मनोहरलाल नाहर, कमलेश नाहर ने तप अनुमोदना में विचार व्यक्त किये। श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ एवम् श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा दिए गए अभिनंदन-पत्र का वाचन जितेन्द्र जैन ने किया।

* **अलिराजपुर ।** श्री जयन्त कुन्दन वन्दन यात्रा का आयोजन कुन्दनलालजी कन्हैयालालजी जैन काकडीवाला द्वारा किया गया।

दिनांक 25, 26 अक्टूबर को क्षमापना यात्रा का प्रारम्भ मोहनखेड़ा धार (श्री अविचलदृष्टाश्रीजी) से कर बड़नगर में (श्री अनेकान्तलताश्रीजी आदि ठाणा), नागदा में (श्री अमृतयशाश्रीजी आदि ठाणा) में क्षमायाचना की । 25 को रात्रि विश्राम पिपलौदा किया। गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरश्विरजी म.सा. के दर्शन वंदन एवं क्षमायाचना कर नागेश्वर में नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन एवं क्षमायाचना कर नागेश्वर में पूजन दर्शन का लाभ लेते हुए आलोट में साध्वीश्री विद्ववतगुणाश्रीजी आदि ठाणा को मिच्छामी दुक्कडम कर अष्टापद दर्शन करके रात्रि को अलीराजपुर प्रस्थान किया। सभी जगह पर दर्शन वंदन, क्षमायाचना काकड़ीवाला परिवार एवं जैन श्रीसंघ की ओर से की गई। सभी से अलीराजपुर पधारने की विनती की गई। संघ आयोजक कुन्दनलालजी कन्हैयालालजी काकड़ी वाला परिवार अलीराजपुर के तीर्थ निर्माता परिवार भाभरा प्रतिष्ठा के मुर्हूत दिय जाने से अलीराजपुर नगर में पूर्ण उल्लास का वातावरण है। गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने दीक्षा का मुहूर्त भी भाभरा का दिया। इससे अलीराजपुर श्रीसंघ में उत्साह का माहौल है।

* **खाचरौद ।** श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ में तीन दिनों तक चलने वाले 'स्कूल फेस्ट स्प्रेकट्रम' का आयोजन 14 से 16 नवम्बर तक किया गया। विद्यापीठ में दीपक सजाओं एवं रंगोली बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

* **महिदपुर ।** श्री कल्याणमल बांठिया की पुत्रववधु श्वेता हितेष बांठिया के 47 दिवसीय उपधान तप की तपस्या पूर्ण कर मोक्षमाला पहनकर प्रथम नगरागमन के अवसर पर तप अनुमोदनार्थ पारणा महोत्सव व देवदर्शन गुरुवंदन चल समारोह का आयोजन किया गया।

* **सिणदरी ।** श्री सोहनराजजी रतनविजयजी यति (श्री दिनेशचन्द्रजी हेमराजजी यति, सायला वाले) का हृदयगित रूकने से सिणदरी (राज.) में देहावसान हो गया।

श्री सोहनराजजी देव गुरू धर्म के प्रति समर्पित सुश्रावक थे। आपकी मिलनसारिता, कर्मठ कार्यशैली ने आपको जन-जन में लोकप्रिय बना दिया था और उसी का सुपरिणाम था कि आप भाजपा मण्डल के अध्यक्ष पद पर सुशोभित थे। पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री जयन्तसेनसूरिजी म.सा. एवं आचार्य देवेश श्री जयरत्नसूरिजी म.सा. के बालसखा होने से दोनों के प्रति श्रद्धावान एवं समर्पित रहे।

शाश्वत धर्म द्वारा श्रद्धाजंली।

भूखों को खाना खिलाया

अहमदाबाद। वाघेश्वरी पोल स्थित श्री राजेन्द्रसूरि जैन आराधना भवन के माध्यम से दीपावली पर्व पर भूखों को खाना खिलाया। कार्यक्रम के अंतर्गत 1500 लोगों को मिष्ठान, नमकीन तथा फल वितरित किये गये। यह वितरण कार्य अनाथ आश्रम, वृद्धाश्रम, अंधजन मंडल, भिक्षुग्रह, मेंटल हास्पिटल एवं सिविल हास्पिटल में किया गया। सभी स्थानों पर श्री राजेन्द्रसूरि युवा मंच के सदस्यों ने हाथों हाथ सेवा कार्य किया। समाज में इस प्रवृत्ति की प्रशंसा की गई।

चपरोत परिवार को शोक

मंदसौर। तपस्वी, धर्मनिष्ठ, श्रीमद् जयंतसेन गुरू भक्त तथा श्री पारसमलजी चपरोत की धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई चपरोत का विगत 22 अक्टूबर 2019 को यहाँ अचानक स्वर्गवास हो गया। आप श्री मदनलालजी चपरोत से सम्बद्ध पुत्रवधू तथा हरीशचंद्रजी तथा राजेन्द्रकुमारजी की भाभी थीं। आपके निधन से त्रिस्तुतिक समाज में शोक व्याप्त हो गया।

आपके अंतिम संस्कार में श्री सौबृहत्त त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, स्थानीय अध्यक्ष श्री गजेन्द्रकुमार हींगड़ तथा म.प्र. के पूर्व गृहमंत्री श्री जगदीश देवड़ा आदि ने भाग लिया। श्रीमती कमलाबाई ने चार वर्षीतप, पांच सौ आयम्बिल की तपस्या, बीस स्थानक तप तथा श्री नवपद ओली आदि के तप किये। वे श्रद्धावान महिला थी। आपकी स्मृति में अंतराय कर्म की पूजन पढ़ाई गई तथा स्वधर्मीवात्सल्य हुआ। चपरोत परिवार ने आपकी स्मृति में डेढ़ लाख रु. धर्मार्थ प्रदान किये। शाश्वत धर्म द्वारा श्रद्धाजंली।

मंदसौर। सुश्राविका श्री जयंतसेन गुरुभक्त सद्कर्तव्य पारायण तथा श्री महेन्द्र कुमार चपरोत की धर्मपत्नी श्रीमती हंसादेवी चपरोत का 24 अक्टूबर को दीर्घ बीमारी के पश्चात् अरिहंत शरण हो गया। आप श्री हीरालालजी चपरोत के परिवार की पुत्रवधू थीं। समाज के अग्रणीय श्री देवेन्द्रकुमारजी चपरोत आपके जेष्ठ थे। आपके निधन से समाज को बड़ी क्षति हुई है। आपके सुपुत्र श्री महेशकुमार चपरोत अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा के महामंत्री हैं। परिषद व समाज ने आपके निधन पर शोक प्रकट किया। आपका अंतिम संस्कार मंदसौर मुक्तिधाम पर किया गया। शाश्वत धर्म द्वारा श्रद्धाजंली।

पाटण में मुनिगणों के दर्शनार्थ गुरुभक्तों का आगमन

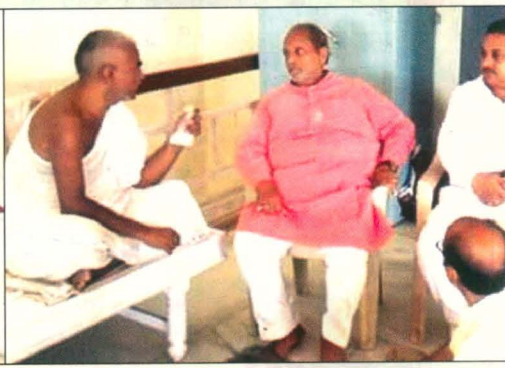

पाटण। मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज आदि ठाणा अध्ययन हेतु गुजरात के पाटण नगर में पंचासरा मंदिर के पास त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में बिराजमान हैं, मुनि भगवंतों के दर्शन वंदन करने विभिन्न नगरों के त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, परिषद परिवार और गुरु भक्तों का पदार्पण विशाल संख्या में हो रहा है, जिसमें त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशभाई धरू, बाबूलालजी संघवी, मिलापचंदजी जैन, रमेशजी लुंकड, इन्दरमलजी दसेड़ा, भेरूभाई शेठ, पूर्वमंत्री पारसजी जैन, जवाहरजी जैन, सूर्यप्रकाश भंडारी, शान्तिभाई शेठ मुंबई, रमेशभाई वोरा नडियाद, प्रवीणभाई संघवी राजकोट, चंदुलाल कोरडिया डीसा, स्व. चंपकभाई देसाई थराद, विभिन्न तीर्थ ओर ट्रस्ट के ट्रस्टी पदाधिकारी एवं सदस्यों सहित करीब 4600 से अधिक गुरु भक्तों का पदार्पण हुआ। श्रीसंघ के अग्रणी के साथ पाटन नगर में विभिन्न राजकीय अग्रणी भी मुनि भगवंतों के दर्शन वंदन और आशीर्वाद लेने पधारे, जिनमें पाटण लोकसभा सांसद भरतभाई डाभी, त्रिस्तुतिक जैन संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं रतलाम के विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप शामिल हैं।

उन्होंने पंडितवर्य चंद्रकांतभाई संघवी से मुनि भगवंतों के चल रहे अध्ययन की जानकारी ली। श्री काश्यपजी ने कहा कि हमारे परिवार का पुण्योदय से गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के जीवन का अंतिम चातुर्मास कराने का अवसर हमें मिला, उस चातुर्मास में मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी महाराज का चातुर्मास के प्रवचन एवं विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान को सम्पन्न कराने में विशेष योगदान रहा। मुनि भगवंतों के दर्शन के लिये राजकीय अग्रणी में गुजरात भाजपा

महामंत्री के.सी. पटेल, पाटण विधायक किरीट भाई पटेल, पूर्व विधायक रणछोड़भाई देशाई, पाटण भाजपा जिलाध्यक्ष मोहनभाई पटेल, कांग्रेस शहर प्रमुख लालेश ठक्कर, भाजपा शहर प्रमुख सुरेश पटेल, पाटण नगर पालिका अध्यक्ष महेन्द्र पटेल, हेमचंद्राचार्य युनिवर्सिटी पाटण कुलपति बाबुभाई प्रजापति सहित अनेक गणमान्य लोग पधारे। सभी ने मुनि भगवंत के दर्शन वंदन पूर्व त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में पाट पर स्थापित विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा एवं युग प्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण करे, पधारे सभी अग्रणी को मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी महाराज ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए जनसेवा एवं जीवदाय के कार्य करने की प्रेरणा दी, मुनिश्री ने सभी को गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा लिखित साहित्य भेंट किए। पाटण में मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी महाराज की पावन निश्रा में नुतन वर्ष का मांगलिक हुआ। पाटण के हजारों लोगों के साथ विभिन्न नगरों के करीबन 1200 से अधिक गुरु भक्तों ने मांगलिक श्रवण कर आशीर्वाद प्राप्त किए। पधारे हुए सभी अग्रणी को विधिकारक कुणालभाई सुराणी ने रक्षापोटली बांधकर जनसेवा ओर जीवदया के कार्य करने की प्रेरणा दी। ज्ञान पंचमी के दिन विभिन्न अनुष्ठान सहित भव्य आराधना हुई, इस निमित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में 1000 वर्ष प्राचीन लिखित हस्तलिखित साहित्य एवं 150 वर्ष पूर्व से तक प्रकाशित 300 से अधिक पुस्तके और विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा एवं पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा लिकित साहित्य को आकर्षित मंडप की रचना कर दर्शनार्थ एवं ज्ञाध की आराधा करने रखा गया। मंडप रचना एवं सजावट का लाभ त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से दुधवा (थराद) निवासी वोहेरा चंचीबेन रीखबचंद सोभागचंद परिवार (चिभडावालों) ने लिया ज्ञान पंचनी के दिन ज्ञान के दर्शन को पाटण में बिराजमान विभिन्न समुदायों के 70 से अधिक श्रमण-श्रमणी भगवंतों ने एवं 840 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने लिया, दोपहर में श्रमण-श्रमणी भगवंतों की पावन निश्रा में श्रीसंघ ने देववंदन सहित अनेक ज्ञान आराधना के अनुष्ठान सम्पन्न हुए, ज्ञान की आरती का लाभ लाभार्थी परिवार द्वारा लिया गया, ज्ञान के दर्शनार्थ पधारे जैन संघ एवं जैनेतर समाज के लोगों को पेन की प्रभावना की गई।

* **बखतगढ़।** स्व. श्री केशरीमलजी दरड़ा की धर्म सहायिका श्रीमती मनोरमा दरड़ा (बखतगढ़ वाले) का 75 वर्ष की उम्र में 15 नवंबर 2016 रविवार को इंदौर में अरिहंत शरन हो गया वे कुछ समय से अस्वस्थ थी।

परिषद प्रांगण से

पिपलौदा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. साधु- साध्वी भगवंत की पावन निश्रा में सम्पन्न हुई। बैठक में पिपलौदा में आयोजित परिषद के हीरक जयंती राष्ट्रीय अधिवेशन को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई। सर्वप्रथम त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्र लोढ़ा, मंदसौर व प्रदेश पदाधिकारियों ने पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन किया व गच्छाधिपति श्री व मुनि भगवंत को वंदन कर आशीर्वाद लिया। गच्छाधिपतिश्री ने कहा कि परिषद के उद्देश्य को क्रियान्वित करने हेतु परिषद जन समर्पणता के साथ कार्य कर समाज उन्नयन का बीड़ा उठाए व पुण्य सम्राट द्वारा सिंचित इस परिषद के नाम को गौरवान्वित करें। मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी महाराज सा. ने कहा कि जहाँ श्रद्धा, समर्पण, गंभीरता की कमी होती है वहाँ संगठन शक्ति सुदृढ़ नहीं हो सकती, परिषद जन समर्पण के साथ संगठन को मजबूत बनाने की दिशा में कार्य करे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ उपाध्यक्ष मोहित तांतेड़ धार ने कहा कि म.प्र. इकाई परिषद पिपलौदा में आयोजित अधिवेशन की सफलता हेतु हर संभव प्रयत्नशील है।

बैठक की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए प्रांतीय महामंत्री सुधीर लोढ़ा मंदसौर ने सभी पदाधिकारियों को केन्द्रीय व प्रांतीय इकाई द्वारा जारी संदेश, प्रकल्प को अपनी-अपनी स्थानीय शाखाओं में क्रियान्वित कर संकल्प बद्ध तरीके से कार्य करने को कहा।

बैठक में उपाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, प्रांतीय मंत्री अनिल धारीवाल जावरा, सहमंत्री संजय कोठारी, जनकल्याण मंत्री राकेश गोलेछा बड़नगर, संगठन मंत्री प्रवीण संघवी रतलाम, माणकलाल छाजेड़ महिदपुर, पिपलौदा चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने भी संबोधित किया। अतिथियों का स्वागत परिषद अध्यक्ष अशोक बोहरा, चातुर्मास सचिव मुकेश रॉयल, महेश बोहरा, वाटिका प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन, नवयुवक सचिव जितेश नांदेचा, जितेन्द्र बाबेल, मनीष जैन आदि ने किया।

बेंगलूरू। यहाँ नगरतपेठ के माँगीलालजी वालाजी गांधीमुथा के भवन में श्री राजेन्द्र जयंत लावण्य पाठशाला का उद्घाटन प.पू. साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं निश्रा में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तत्वावधान में हुआ। साध्वीवर्याश्री विपुलदर्शिताश्री ने पाठशाला के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही सभी श्रावक-श्राविकाओं को धर्म ज्ञान में जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

इस दौरान माँगीलाल गाँधीमुथा ने बताया कि यहाँ अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत भी किया जाएगा, धार्मिक प्रचार मंत्री माँगीलाल वेदमूथा, अध्यक्ष डुंगरमल चौपड़ा, उपाध्यक्ष हेमराज जैन, मंत्री नेमीचंद संघवी, सहमंत्री दिलीप कांकरिया, कोषाध्यक्ष रमेश मयूर, प्रकार बालर, चंपालाल निमानी, प्रकाश ओस्तवाल एवं महिला परिषद अध्यक्ष प्रेमा बेन गाँधीमुथा व मंत्री मधुबाला आदि परिषद के अनेक सदस्यों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण करके पाठशाला का उद्घाटन किया गया। धार्मिक प्रचारमंत्री माँगीलाल वेदमुथा ने कहा, धर्म ही जीवन की नींव है। राष्ट्रीय मंत्री प्रकाश हिराणी ने पाठशाला को संस्कार मंदिर की उपमा दी। उन्होंने कहा कि इस मंदिर के द्वारा अगले वर्ष के जुलाई माह में यतीन्द्र ज्ञानपीठ परीक्षा आयोजित होंगी, जिसमें अधिकाधिक श्रद्धालुओं से जुड़ने के लिए आह्वान भी किया। परिषद के अध्यक्ष डुंगरमल चोपड़ा ने बताया जीवन में जितनी जरूरत व्यवहारिक शिक्षण की होती है, उससे कई गुणा अधिक आवश्यक संस्कारों के बीजारोपण करने वाले धार्मिक शिक्षा की है, जो कि हमें सम्यक् ज्ञान तथा बच्चों में शील रक्षा के संस्कारों का रोपण करती है। परिषद के पूर्व अध्यक्ष नेमीचंद वेदमूथा एवं महिला अध्यक्ष प्रेमा बेन ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए। सभी का आभार डूंगरमल चोपड़ा ने जताया।

रतलाम। रतलाम परिषद पाठशाला द्वारा 28 मई को पाठशाला के बच्चों को पौधे, गमले सहित दिए गए थे। परिषद के राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़, अध्यक्ष श्री विनयजी सुराना व परिषद परिवार के पदाधिकारी सदस्य व श्रीसंघ के सदस्यों के सानिध्य में बच्चों को इन्हें बड़े करके श्री जयंतसेन धाम पर लगाना है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए 13 अक्टूबर 2019 रविवार शरद पूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रातः भक्ताम्बर पाठ किया गया। सभी की नवकारसी के पश्चात्

बच्चों द्वारा श्री जयंतसेनधाम के विभिन्न स्थानों पर पौधों का पुनः रोपण 5 नवकार मंत्र के साथ किया गया। सभी बच्चों को समझाइश दी गई कि वह समय-समय पर आकर इन पौधों की देखरेख करेंगे व जब भी वहाँ आए 5 नवकार मंत्र इन पौधों के समक्ष अवश्य पढ़ें। आभार पाठशाला संचालक श्री सुरेन्द्र गंग ने माना।

म्युजियम में मनाई पुण्य तिथि

मोहनखेड़ा तीर्थ। पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की 30 वीं मासिक पुण्य तिथि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ स्थित श्री जयन्तसेन म्यूजियम में चातुर्मासार्थ विराजित पूज्य साध्वीश्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की शुभनिश्रा में मनाई गई।

प्रातः दर्शन - वन्दन- पूजन के पश्चात् पुण्य प्रसादी में 130 व्यक्तियों द्वारा लाभ लिया गया। सभी को टेबल- कुर्सी पर बिठाकर प्रसाद ग्रहण करवाया गया। इसके पश्चात् श्री जयन्तसेनसूरि अष्टप्रकारी पूजन महिला मण्डल द्वारा संगीत की मधुर स्वरावलियों के साथ पढ़ाई गई। पुण्य - सप्तमी के उपलक्ष्य में विशेष अंगरचना की गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाभ स्व. श्री मोतीलालजी हरण की स्मृति में धर्मपत्नी श्रीमती मगनबाई, पुत्र-श्री संजयजी, पुत्रवधू - श्रीमती नेहा, पौत्र-पौत्री-दृष्टि, प्रबल हरण परिवार राजगढ़ (म.प्र.) निवासी ने लिया।

धानेरा में आचार्यदेवश्री के दर्शनार्थ श्रीसंघों एवं गुरुभक्तों का आगमन

धानेरा। भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, सुरिमन्त्राराधक, आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की शुभनिश्रा में धानेरा चातुर्मास में धर्म की गंगा प्रगठित हुई।

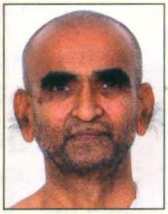

मुनिराज आनन्दविजयजी म.सा. ने जानकारी देते हुए बताया कि धानेरा नगर में प्रतिदिन आचार्यदेवेशश्री ने विविध विषयों पर अपनी मर्मस्पर्शी वाणी से प्रवचन के द्वारा जिनवाणी का श्रवण कराया।

श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं श्री राजेन्द्र सूरीश्वर गुरु मन्दिर, धानेरा द्वारा आयोजित चातुर्मास में पर्युषण पर्व के पश्चात् आचार्यदेवेशश्री एवं श्रमण-श्रमणीवृन्द के वन्दनार्थ-दर्शनार्थ प्रतिदिन श्रीसंघों एवं गुरुभक्तों का आगमन होता रहा। इसी क्रम में श्री थराद त्रिस्तुतिक जैन संघ अहमदाबाद से राष्ट्रीय संघ अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा के नेतृत्व में 80 सदस्यीय प्रतिनिधियों का आगमन हुआ। पूज्य गुरुदेव को वन्दन

सुखशाता पूछकर साँवत्सरिक क्षमापना की। श्री वोरा ने धानेरा में चल रहे ऐतिहासिक चातुर्मास आयोजन के लिए त्रिस्तुतिक जैन संघ धानेरा को बधाई अर्पित की। आचार्यश्री को अहमदाबाद में गुरू सप्तमी पर पधारने की आग्रहपूर्ण विनती की।

श्री शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री जवेरीलालजी ओसवाल, श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय राजेन्द्रसूरि स्मारक जैन संघ उदयपुर काया के अध्यक्ष श्री लालचन्द्रजी छाजेड़ एवं श्री राजेन्द्र शान्ति जैनोदय ट्रस्ट एवं श्री सूरि राजेन्द्रजयन्तसेन गुरुकुलम् के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी शाह आदि सभी ट्रस्टों ने भी गुरू सप्तमी मोटेरा में मनाने की भावभरी विनती की।

इंदौर से आए हुए संघपति परिवार सदस्यों ने भी वल्लभीपुर से पालीताणा संघ में निश्रा प्रदान करने हेतु विनती की।

चातुर्मास में दर्शन-वन्दन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने दिनांक 5 अक्टूबर 2019 को मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री एवं वर्तमान में उज्जैन के विधायक श्री पारसजी जैन त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के साथ पधारे। आचार्यदेवेशश्री को वन्दन सुखशाता पूछकर सांवत्सरिक क्षमापना करते हुए प्रवचन का लाभ लिया। प्रवचन सभा में आचार्यदेव श्रीमद् विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जीवन चरित्र ग्रंथ श्री भूपेन्द्रसूरीश जीवन चरित का लोकार्पण श्री पारसजी जैन पूर्वमंत्री ने किया। इस ग्रंथ का प्रकाशन यतीन्द्र वाणी प्रकाशन, मोटेरा- अहमदाबाद द्वारा किया गया है। इसके मूल लेखक मुनिश्री कल्याण विजयजी म.सा. है।

इस अवसर पर श्री पारसजी जैन ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री की कृपा एवं आशीर्वाद सदेव बरसता रहे। राजनीति के उच्च शिखर पर पहुँचाने में गुरूकृपा ही बलवान है। त्रिस्तुतिक जैन संघ धानेरा की ओर से माल्यार्पण कर बहुमान किया गया।

झाबुआ (म.प्र.) से 70 श्रावक-श्राविकाओं का दर्शन-वंदन तीर्थयात्रा करते हुए धानेरा में आगमन हुआ। आचार्यदेवेश श्रीआदि श्रमण-श्रमणिवृन्द के दर्शन-वन्दन कर साँवत्सरिक क्षमायाचना की। प्रवचन श्रवण के पश्चात् सभी ने आचार्यदेवेशश्री से सामूहिक रूप से आगामी 2020 के चातुर्मास हेतु विनती की।

आचार्यदेवश्री के दर्शनार्थ जैन संघ, वाली (राज.) दर्शनार्थ पहुँचा। श्री चन्द्रप्रभु जैन स्नात्र मण्डल, प्रार्थना समाज मुम्बई के 80 सदस्य एवं श्री त्रिस्तुतिक जैन संध, डीसा (गुजरात) के सदस्य भी दर्शनार्थ पधारे। धार (म.प्र.) के अग्रणी श्री तांतेड़ भी पधारे।

इस अवसर नैनावा, थराद, साँचोर, दाधाल, अहमदाबाद, उदयपुर, जावरा आदि से पधारे गुरुभक्तों ने आचार्य देवेशश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। धानेरा श्रीसंघ की ओर से सभी का स्वागत किया गया।

आचार्यश्री की शुभ निश्रा में 125 से भी अधिक आराधकों द्वारा शाश्वत नवपद ओलीजी की आराधना सानन्द चली। प्रतिदिन प्रवचन में श्रीपाल रास का

वाचन करते हुए आचार्यश्री द्वारा आराधना की महिमा का वर्णन सुनकर आराधकों ने लाभ प्राप्त किया।

आचार्य श्रीमद्विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ धानेरा की जनरल बैठक हुई।

आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. ने पिपलौदा निवासी आजाद कुमार जैन को भागवती दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त फाल्गुन कृष्ण 5 गुरुवार दिनांक 13 फरवरी 2020 का प्रदान किया।

यहाँ आए हुए श्री मोतिलाल नांदेचा बोहरा एवं लाखाणी से हरिलाल त्रिभूवनदास मोरखीया परिवार के 50 सदस्यों ने मुमुक्षु आजाद कुमार जैन को भागवती दीक्षा की मुहूर्त प्रदान करने की विनती की। आजाद कुमार ने प.पू. पुण्यसम्राटश्री की सेवा में 20 वर्षों तक लगातार रहकर वैयावच्च एवं सेवा की समुदाय के साधु-साध्वीजी के विहार में भी तत्परता से वैयावच्च करने का लाभ लिया।

पूज्य आचार्य भगवन्तश्री ने बताया कि साथ ही भाण्डवपुर तीर्थ में शा. नेनमलजी साहेबचन्दजी बालगोता मेंगलवा द्वारा निर्मित श्री राजेन्द्रसूरि सभा भवन का उद्घाटन किया जावेगा। पेढ़ी द्वारा ग्राम में उच्च माध्यमिक स्कूल एवं हास्पिटल का भी उद्घाटन मुहूर्त किया गया।

पूज्य आचार्यश्री की सेवा में दुधवा जैन संघ के प्रतिनिधि उपस्थित हुए और दुधवा नगर में श्री राजेन्द्र सूरि गुरु मंदिर में पूज्य कविरत्न आचार्यश्री विद्याचंद्र सूरीश्वरजी एवं योगीराज श्री शांति विजयजी की गुरु मूर्ति प्रतिष्ठा का मुहूर्त एवं निश्रा प्रदान करने की आग्रह भरी विनती की।

पूज्य आचार्यश्री ने पौष सुदी -1, शुक्रवार दिनांक 27.12.2019 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया।

आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण श्रमणीवृन्द की दिनांक 16.11.2019 को प्रातः 10.00 वाली, जि. जालौर (राज.) में भव्य सामैया पूर्वक प्रवेश हुआ। महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर अक्षत में गँहुली कर वधाया। कुल जैनों के दस घरों की आबादी वाले इस वाली के प्रवेश में लगभग 800 जैनों की एवं स्थानीय ग्रामीणों की मिलाकर 12 सौ लोगों की उपस्थिति रही। गजराज, जीवरथ एवं गैर पार्टी आकर्षण का केन्द्र रही। गुरू गौतम एवं राजेन्द्र सूरि गुरू मूर्ति को घोड़ा बग्गी में बिठाकर नगर प्रवेश भी कराया गया। दोपहर में अठारह अभिषेक किए गए। दिनांक 17 नवम्बर को आचार्यश्री ने श्री सम्भवनाथ राजेन्द्रसूरि प्रतिष्ठोत्सव सानंद सम्पन्न करवाया। प्रतिष्ठा के समय भारी संख्या में भक्त उपस्थित थे। प्रतिष्ठा के पश्चात आप भाण्डवपुर तीर्थ पधार गए।

बीजापुर। मुनिराज श्री वैभवरत्न विजयजी श्री म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने को मदुराई श्रीसंघ का आगमन हुआ। प्रवचन श्रवण के बाद मदुराई श्रीसंघ के प्रतिनिधियों ने मुनिराजश्री आदि ठाणा से मदुराई में आगामी वर्ष 2020 का चातुर्मास करने की भावभरी विनती की।

परिषद के पदाधिकारियों ने ग्रहण की शपथ

भाबरा । सुविशाल गच्छाधिपति, धर्म दिवाकर, युगनायक श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनिमंडल के सान्निध्य में 24 नवम्बर को अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों तथा प्रान्तीय पदाधिकारियों ने अपने पद के संकल्प ग्रहण किये। पदाधिकारियों की सूची इस प्रकार है–

अध्यक्ष	–	श्री रमेश धरू, मो. 9322227033
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	–	श्री प्रकाश हीराणी, बैंगलुरू
उपाध्यक्ष	–	श्री पारस जैन, उज्जैन
		श्री जावंतराज वाणीगोता, बीजापुर
		श्री सुशील गिरिया, उज्जैन
		श्री नवीन भाई बल्लु, मुंबई
महामंत्री	–	श्री सुधीर लोढ़ा, मंदसौर, मो. 7748803359
कोषाध्यक्ष	–	श्री धरमचंद बोहरा, इंदौर
प्रचार मंत्री	–	श्री ब्रजेश बोहरा, नागदा जंक्शन
मंत्री	–	श्री शांतिलाल गोखरू, बड़नगर
		श्री अतुल अदाणी, सूरत
		श्री मुकेश जैन 'नाकोडा', झाबुआ
		श्री भरतभाई वोरा (लाडु), अहमदाबाद
		श्री संजय कोठारी, उज्जैन
सहामंत्री	–	श्री राजकमल दुग्गड़, रतलाम
		श्री प्रवीण डूंगरवाल, नयागाँव
		श्री शैलेष ओरा, बड़नगर
		श्री दर्शन सेठ, डीसा
		श्री अमृत जैन, मैसूर
संगठन मंत्री	–	श्री राजेश वागरेचा, इंदौर
		श्री प्रफुल्ल जैन, पिपलौदा
शिक्षा मंत्री	–	श्री भरतभाई वोरा, मुंबई

सह शिक्षामंत्री	–	श्री भाविक माजनी, अहमदाबाद
पर्यावरण मंत्री	–	श्री अनिल दसेड़ा, जावरा
जन कल्याण मंत्री	–	श्री सुशील छाजेड़, रतलाम
अल्पबचत मंत्री	–	श्री प्रकाश तलेसरा, पारा
		श्री सुशील बांठिया, इंदौर
संयोजक श्री सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना	–	श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, इंदौर

म.प्र. प्रांतीय पदाधिकारी

अध्यक्ष	–	श्री राजेन्द्र जैन, बड़नगर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	–	श्री नरेन्द्र भटेवरा, इंदौर
		श्री अनिल धाड़ीवाल, जावरा
उपाध्यक्ष	–	श्री सुरेश छजलानी, महिदपुरसिटी
		श्री आर.के. शाह
		श्री राकेश जैन, पिपलौदा
		श्री सपन काकडीवाला, अलीराजपुर
		श्री मनोज श्री श्रीमाल, धार
		श्री मनीष पीपाड़ा, उज्जैन
महामंत्री	–	श्री चिराग भंसाली, रिंगनोद, धार
कार्यालय मंत्री	–	श्री प्रणय भंडारी , राजगढ़
प्रवक्ता	–	श्री प्रवीण संघवी, रतलाम
सहप्रवक्ता	–	श्री नितिन धाडीवाल, राजगढ़
कोषाध्यक्ष	–	संजय काठेड़, जावरा
मंत्री	–	श्री नरेन्द्र सुराणा, इंदौर
		श्री राकेश गोलेच्छा, बड़नगर
		श्री रजत मेहता, उज्जैन
		श्री कमलेश नाहर, राणापुर
		श्री नरेश कोठारी, पारा
		श्री पंकज डुंगरवाल, खाचरौद
		मुकेश ओरा, रतलाम

सहमंत्री	–	विनय सुराना, रतलाम
		ललीत सालेचा, राणापुर
		अनिल रूणवाल, झाबुआ
		राजेन्द्र ओरा, भाटपचलाना
		मनोज वागरेचा, नागदा जंक्शन
		विरेन्द्र डोसी, मंदसौर
संगठन मंत्री	–	राकेश लोढ़ा, मेघनगर
सहसंगठन मंत्री	–	अनिल मुणत, बदनावर
शिक्षामंत्री	–	आशीष जैन (एल.के.) कुक्षी
सहशिक्षामंत्री	–	मनीष बाफना, बरमंडल
जनकल्याण मंत्री	–	राहुल रांका, आलोट
सह जनकल्याण मंत्री	–	अंकित कोठारी, टांडा
पर्यावरण मंत्री	–	विनोद पोरवाल, दलौदा
सहपर्यावरण मंत्री	–	यशवंत चोरडिया, जावरा
प्रचार मंत्री	–	राकेश नाहर, दसाई
सहप्रचार मंत्री	–	पंकज बोकडीया, नीमच

राजस्थान ईकाई

अध्यक्ष – बाबूलालजी कटारिया, दिल्ली, उपाध्यक्ष – गजराजजी हीराणी, महामंत्री – दिनेश डोशी, कोषाध्यक्ष –श्री दिनेश करोड़पति

महाराष्ट्र इकाई

अध्यक्ष – श्री छगनलाल सोलंकी, पूना

दक्षिण भारत इकाई

अध्यक्ष – श्री बाबूलाल सेवाणी, उपाध्यक्ष – श्री बाबूलाल शेषमल, बीजापुर, महामंत्री – श्री सुजीत सोलंकी, विजयवाड़ा, सहमंत्री– श्री संजय सेठ, हुबली, कोषाध्यक्ष – श्री हेमराजजी बैंगलोर, प्रचारमंत्री– श्री गोतम सेठ, चैन्नई

जैन विश्व

- बैंगलुरू में जैन समाज के राजस्थानी समुदाय के लोकप्रिय नेता श्री गौतमकुमार मकाना बेंगलुरू के महापौर (मेयर) के चुनाव में विजयश्री का वरण किया। आप भाजपा से सम्बन्द्ध है। एक करोड़ चालीस लाख की आबादी वाले महानगर बेंगलुरू के महापौर का चुनाव हुआ।
- ऊँकारसूरि आराधना भवन, गोपीपुरा-सुरत में पू.आ. श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में पंन्यास श्री वैराग्यरत्न वि.म. सा. द्वारा लिखित 'श्रीपाल-मयणा' (अंग्रेजी भाषा) पुस्तक का विमोचन हुआ। विमोचन का लाभ श्री हेमेन्द्र भाई उमेदचन्द्रजी पावालों ने लिया। इस प्रसंग पर सूरत के डेप्युटी मेयर श्री निरवभाई शाह भी उपस्थित हुए।
- **चेन्नई।** अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को दक्षिण भारत के लोकप्रिय साप्ताहिक पत्र 'चन्दन तिलक' का मुख्य सलाहकार मनोनित किया गया।
- **मुम्बई।** आदित्य बिड़ला ग्रुप के माईनिंग इंजीनियर श्री अजीतराज ओस्तवाल (भोपालगढ़ निवासी) को श्रेष्ठ उत्पाद एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए खान ब्यूरो (खान मंत्रालय) भारत सरकार द्वारा छण्डीगढ़ (पंजाब) में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया।
- कोलकाता में विराजमान खरतगच्छ के आचार्य श्री जिन पीयूष सूरीश्वरजी म.सा. ने 17 दिवसीय मौन साधना के साथ सूरि मंत्र की पंचपीठिका श्री गौतमस्वामी की साधना पूर्णाहुति की। इस अवसर पर महापूजन का आयोजन किया गया।
- कोयम्बटूर जैन महासंघ के तत्वावधान में कोयम्बटूर में समस्त जैन समाज का सामूहिक क्षमापना एवं तपस्वी अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ। जिसे सान्निध्य आचार्यश्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म., श्री पंकजमुनिजी म., मुनिश्री हितेशचन्द्रविजयजी म., साध्वी श्री उज्जवल ज्योतिश्रीजी म., साध्वीश्री उघोत दर्शनाश्रीजी म. एवं साध्वीश्री दिव्याधर्माश्रीजी म. ने प्रदान किया।
- मदुरै जैन संघ एवं वन्दे शासनम् वन्दे मातरम् मंडल के तत्वावधान में स्थानीय आराधना भवन में दो दिवसीय हिंसा मुक्त विश्व जैन प्रदर्शनी का

आयोजन किया गया। उद्घाटन श्री सुमतिनाथ जैन नया मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष बाबुलाल गुलेच्छा, श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्र जैन ट्रस्ट के ट्रस्टी मीठालाल संखलेचा, श्री तेरापंथ सभा के अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के त्रिलोकचन्द हरण ने किया।

- दीक्षादानेश्वरी श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा., आचार्यश्री रश्मि रत्नसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में महातपस्वी मुनि श्री मौनरत्न विजयजी म.सा. ने नवकार महामंत्र के 68 अक्षर की आराधना स्वरूप 68 उपवास की उग्रतपश्चर्या करके उसका पारणा आयंबिल तप से किया।
- **माउंटआबू।** नैला के 80 साल पुराने जैन मंदिर का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। इस मंदिर को माउंट आबू के पत्थर से सजाया जाएगा।
- **थाने।** 'शाश्वत धर्म' के पूर्व सम्पादक श्री जे.के. संघवी (आहोर थाने) को ज्ञान - मंदिर संस्थान मदनगंज-किशनगढ़ द्वारा अनन्त चतुर्दशी के अवसर पर 'अध्यात्म सेवी सम्मान-2019' के अंतर्गत अध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं समाज सेवा के क्षेत्र में निःस्वार्थ भाव से किये गये रचनात्मक कार्यों के लिए 'आध्यात्मक कल्पतरू' की उपाधि से अलंकृत किया गया।
- खाचरौद स्थित श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ, खाचरौद के विद्यार्थियों ने सी.बी.एस.ई. के द्वारा प्रायोजित 'स्वच्छता ही सेवा है' कार्यक्रम के अंतर्गत खाचरौद रेलवे स्टेशन एवं खाचरौद के मार्केट के दुकानदारों को प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले नुकसान और कागज एवं कपड़े के थैलों का उपयोग करने के लिए जागरूक किया।
- **राजगढ़ ।** अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् का 21 वाँ स्थापना दिवस श्री जयंतसेन म्यूजियम स्थित परिषद के राष्ट्रीय कार्यालय पर पू. साध्वी श्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री चिंतनकलाश्रीजी म.सा. की निश्रा में मनाया गया। इस अवसर पर परिषद ध्वज वंदन किया गया। ध्वज वंदन नवयुवक शाखा अध्यक्ष मांगीलाल मामा,सचिव श्री प्रणय भंडारी व तरुण शाखा अध्यक्ष धवल डांगी द्वारा किया गया। परिषद गीत का गान किया गया। पश्चात् मोहनखेड़ा गौशाला में जाकर पशुओं को पशु आहार दिया गया।

- हर्ष बाफना

- के.के. संघवी की ठाणे

तीर्थ से शांतिधाम मानपाड़ा की 8550 पदयात्रा निर्विघ्न पुर्णाहूति निमिते थाणे तीर्थ से थाणे के 5 मंदिरों के दर्शन, वंदन व ठाणे में चातुर्मास बिराजित सभी आचार्य भगवंतों, मुनि भगवंतों, साध्वीजी म.सा. के दर्शन, वंदन चैत्य परिपाटी में 108 पदयात्रियों ने भाग लिया।

- शांतिधाम मानपाडा (ठाणे) में पर्युषण महापर्व में कल्पसूत्र रात्री जागरण हेतु घर से जाने का लाभ शाहसमुखजी छगनलालजी दोशी (शिवगंज) व महावीर स्वामी का पालन गौतम फुसालालजी पुनमिया (खिंवाड़ा) वालों ने लेकर मंदिरजी में ही भक्तिभावना रखी- मंदिरजी का द्वारोदघाटन पुष्पाबेन मफतलालजी चौहान (भटाना) वालों ने किया। रोज प्रभु भक्ति भावना हुई।
- **राजगढ़।** अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के 61 वें स्थापना दिवस कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष पर श्री जयंतसेन म्यूजियम स्थित परिषद के राष्ट्रीय कार्यालय पर पू. साध्वीश्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री चिंतनकलाश्रीजी म.सा. की निश्रा में परिषद के प्रदेश महामंत्री श्री चिरागजी भंसाली एवं राजगढ़ शाखा अध्यक्ष श्री मांगीलालजी मामा द्वारा परिषद ध्वज वंदन कर परिषद गीत का गायन किया गया। पश्चात् श्री जयंतसेन म्यूजियम ट्रस्ट मंडल द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार भाते का आयोजन रखा गया, जिसका लाभ श्री चेनाजी केसुरामजी पंवार परिवार रिंगनोद द्वारा लिया गया। इसके पूर्व प्रभु एवं गुरुदेव के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर राजगढ़ शाखा सचिव प्रणय भंडारी, उपाध्यक्ष नितिन धाड़ीवाल, कीर्ति भंडारी, राहुल जैन, अनिल जैन, रोहित जैन, सौमिक मंडवाड़ा, प्रिंस जैन आदि उपस्थित थे।
- जैन तीर्थ आगासी पर सम्पन्न हुए। आल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रथम सम्मेलन में मदुरै के जैन पत्रकार श्री दिनेश सालेचा (मारवाड़ में सायला) के कलमकार को रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया। मरूधर में जालोर जिला दियावट पट्टी के सायला गांव के निवासी, देशावर में भिमावरम और अहमदाबाद में रहने वाले कबदी दिनेश कुमार महेन्द्रकुमारजी जैन को वर्ष 2019 का सामाजिक सेवा विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। तेलंगाना राज्य की बी.वी.एम. कला मंच द्वारा यह प्रतिष्ठात्मक पुरस्कार प्रदान किया।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ, दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

भाबरा में बरसे अक्षत, गूंजे जयकारे

गच्छाधिपतिजी के आगमन पर शानदार अगुवाई

भाबरा। देखते-देखते वो भोर आ गई जब पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी की 54 वीं जयन्ती पर उनके शिष्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी का मंगल प्रवेश आजाद नगर की धरा पर हुआ। जैसे ही आचार्य श्री नगर में पधारे गुरुदेव के जमकर जयकारे लगे। पूरे नगर का माहौल धर्ममय हो गया। जैन मंदिर के छह दिवसीय स्थापना समारोह के लिए आचार्यश्री नगर में पधारे हैं। नगर के इतिहास में पहली बार इतना भव्य आयोजन हो रहा है।

रविवार को गुरु जन्मोत्सव की शुरूआत आचार्य के आगमन से हुई। नगरभर में निकली शोभायात्रा के दौरान जगह-जगह अक्षत व पुष्प वर्षा के साथ समाजजनों व अन्य नगरजनों ने भावपूर्वक स्वागत किया। गुरूदेव अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं गए वो सबकुछ देकर गए हैं। भले ही वो तन से हमारे साथ नहीं है। लेकिन उनका आशीर्वाद हमेशा समाज व हमारे साथ है। गुरुदेव के हर कार्य को पूर्ण करना हमारा सबका लक्ष्य है। ये बात पुण्य सम्राट जैनाचार्य राष्ट्र संत श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी के 84 वीं जयंती पर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी ने जैन मंदिर प्रांगण में आयोजित धर्मसभा में कही। इससे पहले आचार्यश्री का मंगल प्रवेश रविवार को आजाद नगर की धरा पर हुआ। नवनिर्मित जैन मंदिर के छह दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा और दीक्षा महोत्सव के भव्य कार्यक्रम की शुरूआत धूमधाम से हुई। इसके लिए बीते 3 माह से तैयारियाँ की जा रही थी। एक करोड़ से अधिक की लागत से बने श्वेताम्बर मंदिर को दुल्हन की तरह सजाकर तैयार किया गया है। रविवार को गुरु जन्मोत्सव की शुरूआत नगर में पधारे धर्म दिवाकर गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा., मुनिराज सिद्धरत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा., मुनिश्री प्रशमसेनविजयजी म.सा., श्री तारकरत्न विजयजी म.सा. व निर्भयरत्नविजयजी म.सा. मुनिवरों व साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी आदि का नगर में भव्य प्रवेश हुआ। चल समारोह के दौरान अक्षत व पुष्प वर्षा के साथ सभी समाजजन ने स्वागत किया। इस दौरान विधायक कलावती भूरिया, पूर्व विधायक माधोसिंह डाबर, जनप्रतिनिधि अ.भा. नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू व पदाधिकारी माजूद थे। धर्मसभा के दौरान अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय के साथ म.प्र. व राजस्थान इकाई के नवनियुक्त पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में म.प्र., राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र से भी धर्मावलंबी उपस्थित रहे। स्वामी वात्सल्य का लाभ श्रीसंघ अध्यक्ष नवीनलाल स्व. भेरूलालजी जैन सालेचा वोहरा परिवार द्वारा लिया गया।

चल समारोह नगर के दाहोद रोड़ बेरियर से शुरू होकर खेनी मोहल्ला, राम मंदिर चौराहा, मुख्य बाजार होते हुए जैन मंदिर नया बाजार पहुंचा। इस दौरान जगह-जगह गहुली कर आचार्यश्री का स्वागत किया गया। यहाँ गुरूदेव व मुनि मंडल मंच पर विराजे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। गुरूदेव के स्वागत में स्वागत गीत की प्रस्तुति समाज की बहनों द्वारा की गई। गुरूदेव को काम्बली ओढ़ाने की बोली जैन श्रीसंघ अध्यक्ष नगीनलाल भेरूलाल सालेचा परिवारद्वारा ली गई।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-66, अंक-12 कुल पृष्ठ कवर सहित -116

आचार्य का सायला में भव्य प्रवेश

सायला। भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्य देवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी आदि श्रमण-श्रमणिवृंद का भव्य सामैया पूर्वक सायला नगर में पावन प्रवेश हुआ।

प्रातः 9.30 बजे पार्श्वनाथ जैन मंदिर चौक पर आचार्य भगवन्त के पदार्पण होते ही फोलामुथा परिवार की एवं समस्त महिलाओं ने मंगल कलश सिर पर धारण कर सामैया किया। लाभार्थी परिवार द्वारा सर्वप्रथम गहुँली कर वधाया। बैंड पार्टी, नासिक ढोल पार्टी, शहनाई पार्टी एवं पंजाबी बैंड श्रृंखलाबद्ध चलते हुए अपनी-अपनी कला को प्रदर्शित कर रहे थे। बीच-बीच में मारवाड़ की प्रसिद्ध गैर पार्टी भी नृत्य कर रही थी। नवयुवकों में भी अपार जोश था, गुरुदेव के जयकारों के साथ नृत्य भी करते जा रहे थे।

श्री पार्श्वनाथ, कुन्थुनाथ मंदिर दर्शन कर पोस्ट ऑफिस, पुराना बस स्टेण्ड होते हुए शान्तिपुरा स्थित सुपार्श्वनाथ जिनालय पहुँचे, वहाँ दर्शन कर सभास्थल पहुँचे। आशीष जैन द्वारा गुरु भक्ति प्रस्तुत करने के पश्चात निश्रा प्रदाता आचार्य भगवन्त ने मंगलाचरण कर प्रवचन प्रदान करते हुए सायला की प्राचीनता बताई। साथ ही यहाँ होने वाली धार्मिक क्रियाओं के लिए संघ में संगठन मतैक्य स्थापित करने के लिए 21 सदस्यीय समिति बनाकर संघीय व्यवस्था का संचालन हो, ऐसी भावना व्यक्त की। मेरा सायला है अतः मैं वाडा बन्दी से परे हटकर कभी भी सायला आऊंगा। मोहनबाई छोगालालजी फोलामुथा का जीवित महोत्सव एवं मंजूदेवी मांगीलालजी फोलामुथा के विविध तपस्या के अनुमोदनार्थ उजमणा सहंपचान्हिका महोत्सव का शुभारंभ हुआ। सुपार्श्वनाथ जैन मंदिर में दोपहर 2.00 बजे से शान्तिनाथ पंचकल्याणक पूजा पढ़ाई गई। तीनों मन्दिर में भव्य अंगरचना की गई। आगामी 29 नवंबर को सायला से शिखरजी स्पेशल यात्रा का प्रस्थान होगा।